सामाजिक विज्ञान (भाग–1)

(इतिहास एवं नागरिक शास्त्र)

कक्षा 6

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉंच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

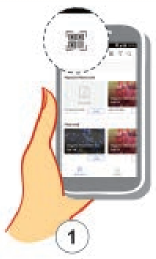

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

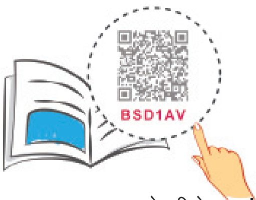

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

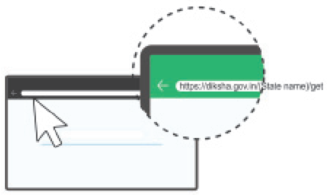

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष – 2024

एस. सी. ई. आर. टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग

एकलव्य, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केंद्र, रायपुर

विशेष सहयोग

डॉ. के.के. अग्रवाल, श्रीमती ज्योति धारकर, डॉ. श्रीमती नागरत्ना गणवीर

J93RA3

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

समन्वयक

शिवकुमार वर्मा, ख्रीस्टीना बखला

चित्रांकन

राजेन्द्र सिहं ठाकुर, अशोक भट्ट, दीपांकर भौमिक, जगदीश प्रसाद देवांगन

सम्पादक मण्डल

शिवकुमार वर्मा, डॉ. सुखदेवराम साहू, लालजी मिश्र

लेखक समूह

इतिहास

डॉ. सुखदेवराम साहू , सच्चिदानन्द शास्त्री,
दुर्गेश कुमार वैष्णव, चेतन प्रसाद तिवारी, डॉ. नरेन्द्र पर्वत, मेघलता बंजारे, पंचराम चतुर्वेदी

नागरिक शास्त्र

सात्यिकी सिंह परिहार, अनिल बन्दे, भरत साव, डॉ. खिलेश्वरी साव,
अमृतलाल साहू, भारती दुबे, भूमिका शर्मा

आवरण एवं पृष्ठसज्जा

रेखराज चौरागड़े

फोटोग्राफ (आवरण पृष्ठ)

एस. अहमद, रायपुर

सहयोग

आसिफ–भिलाई

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

vke|[k

इस विषय के संबंध में कहा जाता है कि सामाजिक विज्ञान केवल रटने का विषय है। सामाजिक जीवन से जुड़े हुए इस जीवंत विषय को कैसे छात्रों को आत्मसात कराया जाए और पूर्व में प्रचलित पाठ्यपुस्तक को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में कैसे प्रस्तुत की जाए ? यह एक विचारणीय पहलू है।

इन प्रश्नों का समाधान करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर ने संकल्प लिया। इस लेखन कार्य में एकलव्य संस्थान होशंगाबाद एवं राज्य के लेखकों तथा विषय विशेषज्ञों ने आहुतियाँ डालीं। क्रमबद्ध रुप से गोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं आपसी विचार–विमर्श के द्वारा सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक को साकार रूप प्रदान किया गया। कक्षा 6वीं हेतु इस पुस्तक में इतिहास तथा नागरिक शास्त्र के पाठों का समावेश किया गया है, जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य की झाँकी परिलक्षित होती है। इन पाठों को नवाचारी लेखन विधा में ढालने का प्रयास किया गया है। आशा है, यह पाठ्यपुस्तक छात्रों, शिक्षकों एवं पालकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस कार्य में संस्कृति विभाग, पंचायत विभाग सहित विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं द्वारा जो सहयोग प्राप्त हुआ तथा पाठ्यपुस्तक लेखक मंडल, एकलव्य संस्थान एवं शोधकर्ताओं ने पाठ्यपुस्तक की रचना में जो अथक परिश्रम किया उसके प्रति परिषद् आभारी है। समाज की शिक्षा के प्रति रुचि रखनेवाले लोगों से सुझाव आमंत्रित है जिससे इस पुस्तक को परिणाममूलक दिशा दी जा सके और सामाजिक विज्ञान के अध्यापक अपनी विषयगत योग्यता में नवीनता और विविधता ला सकें।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से आपस की बात

शिक्षा निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन के साथ शिक्षा के लक्ष्यों में भी परिवर्तन होता रहा है। तदनुसार शिक्षण की विषय–वस्तु, शिक्षण–विधि एवं मूल्याँकन की प्रक्रिया भी बदलती है। सामाजिक विज्ञान विषय को रटंतू विषय के नाम से जाना जाता रहा है। समझ विकसित करने की दिशा में शिक्षकों की अवधारणा स्पष्ट नहीं है। इस मिथक को तोड़ने की जिम्मेदारी राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर ने उठाई और इस पाठ्यपुस्तक को तैयार किया।

शिक्षा में अब नवाचारी शिक्षा का प्रयोग हो रहा है जिससे शिक्षक जगत को परिचित कराया जाना आवश्यक है। वर्तमान में परंपरागत शिक्षण को नकार दिया गया है क्योंकि आज बालक मीडिया व शैक्षिक प्रौद्योगिकी के काफी करीब है। वह उन्हीं घिसीपिटी बातों को सुनकर रटना नहीं चाहता। अतः हमारा भी कर्तव्य हो जाता है कि हम उस बालक के समक्ष उसकी आवश्यकता के अनुकूल सामग्री प्रस्तुत करें। एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर द्वारा एकलव्य संस्था होशंगाबाद के मार्गदर्शन में कई कार्यशालाओं, संगोष्ठियों व विचार–विमर्श के बाद तैयार की गई इस पुस्तक की कई विशेषताएँ हैं जिनके अनुरुप कक्षा शिक्षण व क्रियान्वयन की आपसे अपेक्षा है।

इसमें विषय वस्तु को समझाने के लिए निर्देश दिया गया है कि चित्र लगाएँ, चित्र को देखकर अन्य चित्रों से तुलना करें, अपने आस–पास अवलोकन करें, इत्यादि। आप निर्देशानुसार उन चित्रों को अवश्य प्रदर्शित कर संबंधित प्रश्न करें। बिना चित्रों–मानचित्रों के पाठ का प्रदर्शन खानापूर्ति मात्र होगा, इससे न तो बालक की समझ विकसित होगी और न उनके लिए शिक्षण आनंददायी होगा।

विभिन्न पाठों में छात्रों को उनके परिवेश से जोड़ने का प्रयास किया गया है अतः आसपास के उदाहरणों द्वारा ही समझाने का प्रयास करें, जिससे बालकों की स्पष्ट समझ बन सके।

पाठों में मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा, सामाजिकता, पर्यावरणीय चेतना व जनसंख्या शिक्षा के बिन्दुओं को स्पर्श करने का प्रयास किया गया है अतः कक्षा शिक्षण के समय आवश्यकतानुसार इन स्पर्श बिन्दुओं के संबंध में विचार अवश्य दें।

इतिहास के अंतर्गत विषय सापेक्ष छत्तीसगढ़ के इतिहास को जोड़कर तथ्यात्मक संदर्भों को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ छत्तीसगढ़ के पुराकालिक वैभव से सतत् ऐतिहासिक संदर्भों सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ वर्तमान का भी समावेश है जो छात्रों की योग्यता विस्तार एवं अपने प्रदेश के गौरव को भी जानने व समझने में सहयोगी होगा। इसी परिप्रेक्ष्य में नागरिक शास्त्र में वर्तमान जनजीवन के प्रमुख एवं प्रभावी बिन्दुओं का समावेश कर छात्रों व शिक्षकों के लिए भी उपयोगी पाठ्यवस्तु सम्मिलित की गई है।

कई उद्धरणों में विचारात्मक प्रश्न देकर छात्रों की जिज्ञासा व चिंतन को जागृत करने का प्रयास किया गया है। शिक्षक अपने स्तर पर भी इस तरह के नए प्रश्न तैयार कराएँ। ऐसे प्रश्नों का उत्तर तैयार करने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।

आशा है हमारी बातें आपने समझ ली होंगी। प्रदेश के बच्चों को नई अवधारणाओं से परिचित कराने और जिज्ञासाओं को सन्तुष्ट करने के लिए आप पूर्णतः तैयार होंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, इसमें संशोधन की सम्भावनाएँ सदा बनी रहती है। अतः इस पुस्तक के सम्बन्ध में पाठकों की राय सदैव आमंत्रित है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

HIQG35

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	इतिहास	
1.	इतिहास के स्रोत	1–5
2.	आदिमानव	6–10
3.	सिंधु घाटी की सभ्यता	11–17
4.	वैदिक काल	18–24
5.	महाजनपद काल	25–29
6.	नवीन धार्मिक विचारों का उदय	30–32
7.	मौर्यवंश और राजा अशोक	33–37
8.	विदेशों से व्यापार और संपर्क	38–42
9.	गुप्त काल	43–48
10.	प्रांतीय राज्यों का युग	49–51
	नागरिक शास्त्र	
	भारत का संविधान भाग–अ, नागरिकों के मूल कर्त्तव्य	53
1.	परस्पर निर्भरता	54–58
2.	कातिक और केकती का गाँव	59–62
3.	पंचायती राज	63–73
4.	नगर पालिका और नगर निगम	74–77
5.	जिला प्रशासन	78–81
6.	सार्वजनिक संपत्तियाँ	82–85
7.	बच्चों के अधिकार	86–90
8.	सामान्य चेतना	91–97
9.	ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग	98

HIZC4S

HJ986F

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें–	**बच्चे –**
• धरती की गतियों को समझने के लिए आरेख, मॉडल और दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना।	SST601. तारों, ग्रहों और उपग्रहों के बीच में अंतर करता है जैसे– सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा।
• खगोलीय घटनाओं को समझने के लिए तारों, ग्रहों, उपग्रह (चंद्रमा), ग्रहण आदि को माता–पिता/शिक्षक/बड़े–बुजुर्ग के मार्गदर्शन में देखना।	SST602. पहचानता है कि पृथ्वी एक अद्वितीय आकाशीय पिण्ड है क्योंकि उस पर जीवन संभव है और उसके जैव मण्डल में विविध क्षेत्र हैं।
• अक्षांश और देशांतर को समझने के लिए ग्लोब का उपयोग करना।	SST603. दिन–रात और ऋतु परिवर्तन दर्शाता है।
• स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल और जैवमंडल को समझने के लिए आरेख, चित्र, चार्ट आदि का उपयोग करना।	SST604. सपाट सतह पर दिशाएँ पहचानता और दुनिया के नक्शे पर महाद्वीपों–महासागरों को पहचान पाता है।
• महाद्वीपों, महासागरों, समुद्र, भारत के राज्यों/संघशासित प्रदेशों, भारत और इसके पड़ोसी देश, भारत के भौतिक स्वरुप जैसे पहाड़ों, पठारों, मैदानों, रेगिस्तान, नदियों आदि की समझ बनाने के लिए नक्शे का उपयोग करना।	SST605. अक्षांश और देशांतर, ध्रुव, भूमध्य रेखा, उष्णकटिबंधीय, भारत के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों और दूसरे पड़ोसी देशों को ग्लोब और दुनिया के नक्शे में पहचानता है।
• ग्रहण संबंधी मिथकों पर चर्चा करना।	SST606. भारत के नक्शे पर पहाड़ों, पठारों, मैदानों, नदियों, रेगिस्तान आदि जैसे भारत की भौगोलिक विशेषताओं का पता लगाता है।
• विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्रोतों के चित्रों पर चर्चा करना और समझना कि इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निमाण के लिए किनका उपयोग किया है।	SST607. अपने आस–पास का मानचित्र–पैमाना, दिशा और रूढ़ प्रतीकों की मदद से बनाता और विशेषताओं को दिखाता है।
• मानचित्र गतिविधि का प्रयोग करना– शिकारी–संग्रहकों, खाद्य उत्पादक, हड़प्पा सभ्यता, जनपद, महाजनपद, बुद्ध और महावीर के जीवन से संबंधित स्थानों, साम्राज्य, भारत के बाहर कला और स्थापत्य–क्षेत्रों के केंद्र जिसके साथ भारत के संपर्क थे।	SST608. ग्रहण से संबंधित मिथकों पर आलोचनात्मक नजरिया विकसित कर पाता है।
	SST609. विभिन्न प्रकार के स्रोत (पुरातात्विक, साहित्यिक इत्यादि) को इंगित करता है और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करता है।
	SST610. भारत के मानचित्र पर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को ढूंढता है।
	SST611. प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्टताओं को पहचानता है और उनके क्रमबद्ध विकास की व्याख्या कर पाता है।
	SST612. महत्त्वपूर्ण राज्यों, राजवंशों के महत्वपूर्ण योगदान को सूचीबद्ध करता है जैसे– अशोक–शिलालेख, गुप्त सिक्कों, पल्लवों द्वारा स्थापित रथ मंदिर आदि।

- महाकाव्यों, रामायण, महाभारत, सिलप्पदिकारम, मणिमेकलै या कालीदास के कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों का पता लगाना।
- चर्चा करना–बौद्ध धर्म, जैनमत और अन्य दर्शनों की शिक्षाओं और आज उनकी प्रासंगिकता, प्राचीन भारत में कला एवं वास्तुकला का विकास–संस्कृति तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारत का योगदान।
- अभिनय करना (Role play) विभिन्न ऐतिहासिक प्रकरणों पर जैसे –कलिंग युद्ध के बाद अशोक में बदलाव, उस समय के साहित्य में वर्णित घटनाएँ आदि।
- परियोजना कार्य करना – राज्यों का उदय, गणसंघ व साम्राज्य का योगदान, संस्कृति के क्षेत्र में राजवंशों का योगदान–भारत के बाहर के क्षेत्रों के संपर्क में इन संपर्कों के प्रभाव पर प्रकाश डालने वाले परियोजनाओं पर कक्षा में चर्चा।
- संग्रहालय की सैर करना – प्रारंभिक मानव बस्तियों की सामग्री अवशेष देखने के लिए–हड़प्पा और इन संस्कृतियों के बीच निरंतरता और परिवर्तन पर चर्चा करना।
- विविधता, भेदभाव, सरकार और आजीविका आदि पर चर्चा।
- परिवार, स्कूल, समाज आदि में लोगों के साथ उचित/अनुचित व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करना।
- ग्राम पंचायत या नगर पालिका/नगर निगम के कामों का प्रत्यक्ष अवलोकन और पाठ अध्यापन करना। (जगह के अनुसार)
- समाज में शासन की भूमिका और एक परिवार के मामलों तथा एक गाँव/शहर के मामलों के बीच अंतर को समझाना।
- व्यवसायों के संबंध में आसपास के इलाकों/गाँवों के मामले का अध्ययन करना।

SST613. प्राचीन काल में हुए विकास को समझता है और बताता है उदाहरण– शिकार एकत्रित करने के चरण, कृषि की शुरुआत, सिंधुघाटी के पहले के शहर जो एक ही समय पर अलग–अलग स्थान पर होने वाले विकास की व्याख्या करता है।

SST614. अलग–अलग समय के साहित्य में वर्णित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्व का वर्णन करता है।

SST615. भारत का दूसरे देशों के धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में संपर्कों के प्रभाव का वर्णन करता है।

SST616. संस्कृति और विज्ञान में भारत के महत्वपूर्ण योगदान बताता है जैसे खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं के ज्ञान आदि।

SST617. विभिन्न ऐतिहासिक विकास से संबंधित जानकारी को संश्लेषित करता है।

SST618. प्राचीन काल के दौरान विभिन्न धर्मों और विचारों की प्रणाली के बुनियादी विचारों और मूल्यों का विश्लेषण करता है।

SST619. अपने चारों ओर के मानव विविधता के विभिन्न रूपों का वर्णन करता है।

SST620. अपने आस–पास के विभिन्न प्रकार की विविधता के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करता है।

SST621. भेदभाव के विभिन्न रूपों को पहचानता है और भेदभाव की प्रकृति और स्रोतों को समझता है।

SST622. समानता और असमानता के विभिन्न रूपों के बीच अंतर कर पाता है।

SST623. शासन की भूमिका, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर शासन की भूमिका का वर्णन करता है।

SST624. सरकार के विभिन्न स्तरों –स्थानीय, राज्य और केंद्र को इंगित करता है।

SST625. स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण/शहरी और स्थानीय सरकारी निकायों के कामकाज की व्याख्या करता है।

SST626. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विभिन्न व्यवसायों के कारकों को बता पाता है।

विषय–सूची

क्रमांक अध्याय	LOs	पृष्ठ क्र.
इतिहास		
1. इतिहास के स्रोत	SST609	1-5
2. आदिमानव	SST611, SST613	6-10
3. सिंधु घाटी की सभ्यता	SST613	11-17
4. वैदिक काल	SST609, SST610, SST614	18-24
5. महाजनपद काल	SST609, SST610,SST617	25-29
6. नवीन धार्मिक विचारों का उदय	SST618	30-32
7. मौर्यवंश और राजा अशोक	SST612	33-37
8. विदेशों से व्यापार और संपर्क	SST615	38-42
9. गुप्त काल	SST616	43-48
10. प्रांतीय राज्यों का युग	SST617	49-51
नागरिक शास्त्र		
भारत का संविधान भाग–अ, नागरिकों के मूल कर्त्तव्य		53
1. परस्पर निर्भरता	--	54-58
2. कातिक और केकती का गाँव	--	59-62
3. पंचायती राज	SST623, SST624	63-73
4. नगर पालिका और नगर निगम	SST623, SST624	74-77
5. जिला प्रशासन	SST624, SST625	78-81
6. सार्वजनिक संपत्तियाँ	--	82-85
7. बच्चों के अधिकार	SST619	86-90
8. सामान्य चेतना	--	91-97
9. ट्रांस जेण्डर/थर्ड जेण्डर	SST622	98
भूगोल		
1. सौर मंडल में पृथ्वी	SST601, SST602	1-9
2. ग्लोब, अक्षांश एवं देशांतर	SST605	10-18
3. पृथ्वी की गतियाँ	SST603, SST608	19-23
4. मानचित्र	SST607, SST604	24-30
5. पृथ्वी के प्रमुख परिमंडल	SST604	31-40
6. पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप	SST606	41-48
7. एक हमारा देश भारत	SST606	49-57
8. भारत की जलवायु, वनस्पति तथा वन्य प्राणी	--	58-67
9. छत्तीसगढ़ का पहाड़ी मैदान और पठारी गांव	--	68-94

HIZC4S

HJ986F

KHCZ3U

उदाहरणार्थ रूब्रिक्स

क्र.	अध्याय	उप–विषय	लर्निंग आउटकम्स	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
				याद करना, स्मरण करना, खोजना, लेबल लगाना, वर्णन करना	समझना, व्याख्या कर पाना, संक्षेप करना, सुमेलित करना	लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना	मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1.	इतिहास के स्रोत		610	इतिहास के स्रोत के बारे में जानता है।	इतिहास के विभिन्न स्रोतों के बारे में जानता है।	इतिहास के एवं पुरातत्ववेता के बारे में जानता है।	भारतीय संस्कृति के विकास की कहानी का विश्लेषण करता है।
2.	आदिमानव	पत्थरों के औजार, आग का उपयोग, धार्मिक रीति–रिवाज खेती और पशुपालन	611	आदिमानव के निवास स्थान को जान पाता है।	आदिमानव कार्य एवं भोजन के बारे में जानता है।	आदिमानव के औजारों के बारे में जानता है।	आदिमानव के रहन–सहन का अपने रहन–सहन के साथ तुलना कर सकता है।

इतिहास

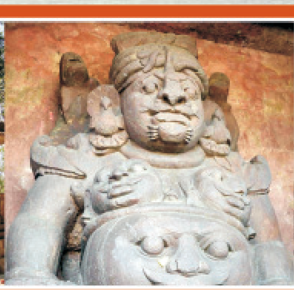

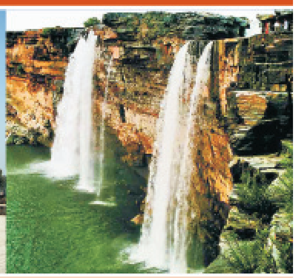

अध्याय 1

HJI483

इतिहास के स्रोत

कक्षा के सभी बच्चे राजू के आस पास इकट्ठे थे। राजू उन्हें बता रहा था कि महारानी लक्ष्मीबाई की तलवार कितनी भारी थी और ढाल कितनी बड़ी थी। उसकी बातें सुनकर सभी चकित थे। राजू उस समय की बातें बता रहा था जब उसका जन्म भी नहीं हुआ था। आखिर राजू को इतने पुराने समय की बातें कैसे मालूम हो गई ? थोड़ी ही देर बाद राजू ने स्वयं बताया कि ये बातें उसे संग्रहालय या म्यूजियम में रखी वस्तुएँ देखकर मालूम हुई।

तभी गुरु जी कक्षा में आए। हर्ष ने उनसे पूछा कि, हम पुराने समय की बातें कैसे जान लेते हैं? अर्थात उसने इतिहास जानने के तरीकों के बारे में पूछा। गुरु जी बताने लगे –

इतिहास जानने के कई तरीके या स्रोत हैं जैसे–पुराने ग्रंथ, शिलालेख, खुदाई से प्राप्त अवशेष, स्मारक, भवन, बर्तन, औजार, हथियार, चित्र, सिक्के, एवं यात्रा संस्मरण।

गुरु जी को लगा कि बात को और सरल करने की जरूरत है इसलिए उन्होंने समझाया –

चित्र–1.1 सिंघनपुर की गुफा का शैल चित्र

देखो तुम्हारे घर या आस–पास में कुछ चीजें या पुराने जमाने के भवन होंगे उनके बारे में पता लगाओ वे कितने पुराने हैं? उनसे जुड़ी कुछ और बातें भी पता लगाओ। यदि तुम ऐसा करते हो, तो इसका मतलब है कि तुम उस समय का इतिहास जानने की कोशिश कर रहे हो।

सभी बच्चों ने सहमति में सिर हिलाया। राधा ने खड़े होकर कहा– गुरुजी अभी आपने इतिहास जानने के बहुत से तरीके बताए उनके बारे में विस्तार से समझाइए।

गुरु जी ने बतलाया, देखो राधा बहुत पहले लोग लिखना पढ़ना तो जानते नहीं थे। इसलिए वे चित्र बनाकर अपनी बातें कहते थे। तुमने छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में स्थित कबरा पहाड़ी और सिंघनपुर की गुफाओं के बारे में जरूर सुना होगा। खोजने से पता चला कि वहां पर बने शैलचित्र आदिमानव काल के हैं। जब मनुष्य लिखने लगा तो उसने अपनी बात पत्थर पर खोदकर कहीं जिन्हें हम शिलालेख कहते हैं। आगे चलकर भोजपत्र, ताड़पत्र, ताम्रपत्र तथा कागज आदि पर भी लिखा गया।

शिलालेख – पत्थरों (शिलाओं) पर खोदकर लिखी गई बातें।

स्तंभलेख – पत्थर, लोहे या काष्ठ के स्तंभों (खंभों) पर लिखी गई बातें।

भोजपत्र,ताड़पत्र – विशेष प्रकार के पत्रों पर रंग या स्याही से लिखी गई बातें।

ताम्रपत्र लेख – तांबे के पत्रों पर खोदकर लिखी गई बातें।

HJRZ9Q

कई बच्चे एक साथ बोल पड़े–क्या हम पुराने समय के लेख देख सकते हैं?

गुरु जी ने उन्हें समझाया कि ये सभी चीजें संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं। ये पाली या प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं। यह लिपि अब व्यवहार में नहीं लाई जाती। इसलिए सभी लोगों के लिए इसे पढ़ना कठिन होता है। इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ता इन लिपियों को पढ़ना जानते हैं जिसके कारण वे उस युग में क्या लिखा गया था, पढ़ कर हमें बता सकते हैं। "पुरातत्ववेत्ता" कई बच्चे बोल पड़े। हाँ, गुरु जी ने अपनी बात कहना जारी रखा। पुरातत्ववेत्ता वे होते हैं जो पुरानी बसाहटों को खोदकर उनके बारे में तथ्यों का पता लगाते हैं। तुम जानते हो कि कई वस्तुएँ धूल व मिट्टी की तह जम जाने से हमें दिखाई नहीं देतीं। इसी प्रकार कई पुराने भवन, नगर या वस्तुएँ भी बाढ़, आँधी, तूफान या भूकंप के कारण मिट्टी में दब जाती हैं। पुरातत्ववेत्ता उन्हें खोजकर एवं खोदकर फिर से दुनिया को उनके बारे में बताते हैं। इन पुराने अवशेषों से हमें उस समय के लोगों के रहन–सहन व जीवन के बारे में पता चलता है।

अंकिता ने पूछा– क्या पुराने भवन, महल, मंदिर किले आदि भी हमें इतिहास की जानकारी देते हैं।

गुरु जी ने बताया कि ये सब अपने समय की घटनाओं के जीते–जागते प्रमाण होते हैं। पुराने भवन हमको उस समय की भवन निर्माण कला की भी जानकारी देते हैं।

इसी प्रकार पुराने सिक्के, औजार, बर्तन, आभूषण और अन्य वस्तुओं से भी हम इस समय के लोगों के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं।

चित्र–1.2 ताम्रपत्रलेख

चित्र– 1.3 लक्ष्मण मंदिर सिरपुर

चित्र– 1.4 कुलेश्वर मंदिर, राजिम, छ.ग.

गुरु जी बताते जा रहे थे कि पुराने ग्रंथों से भी हमें उस समय के समाज, नगरों, रीति–रिवाजों की बहुत–सी जानकारी मिलती है। सपना ने कहा ग्रंथ, जैसे– रामायण, महाभारत, कुरान, गीता बाइबिल आदि।

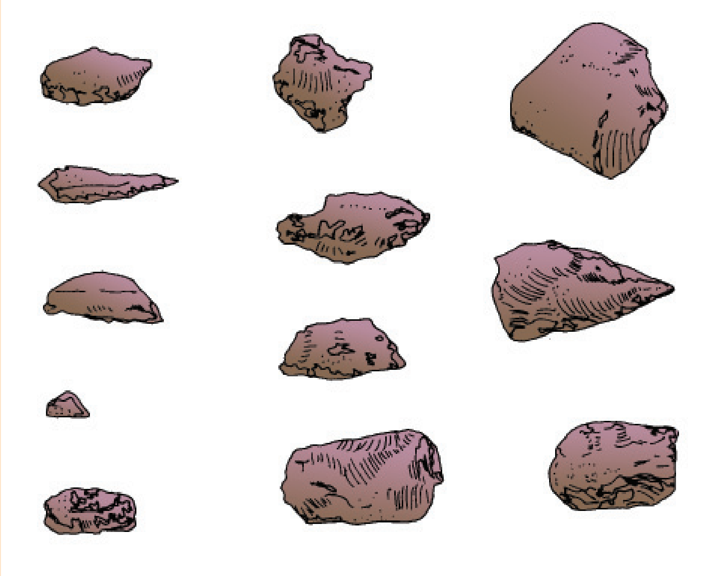

चित्र– 1.5 खुदाई से प्राप्त प्राचीन समय की वस्तुएं

गुरु जी ने हाँ कहा और आगे बताया– जैसे हम कहीं से घूमकर आते हैं तो सबको उन जगहों के बारे में और वहाँ के लोगों के बारे में बताते है। वैसे ही बहुत पहले कुछ विदेशी यात्रियों ने कई देशों की यात्रा की थी। उनके द्वारा लिखे गए यात्रा वर्णनों से उस देश के बारे में उस समय की काफी जानकारी मिलती है।

मोनू ने बताया कि उसने रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय में बिलासपुर जिले के किरारी गाँव से प्राप्त काष्ठ स्तंभ लेख को देखा है । गुरु जी ने समझाया कि कई प्राचीन वस्तुएँ भी हमें इतिहास की जानकारी देते हैं, जैसे घरों में कैसे बर्तन काम में लाए जाते थे, बाल सँवारने के कंघे कैसे होते थे, पहनावा कैसा होता था, क्या–क्या भोजन करते थे और उस समय किन–किन देवी–देवताओं की पूजा की जाती थी आदि ।

पुराने सिक्के व मुद्राएँ

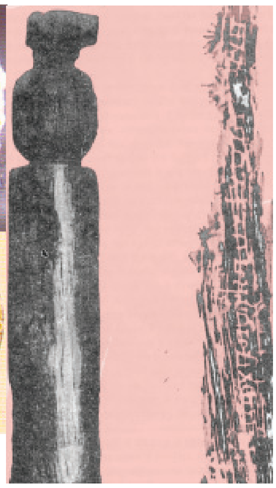

किरारी ग्राम से प्राप्त स्तंभ तथा लेख संग्रहालय, रायपुर

चित्र– 1.6

इसके अलावा इतिहास हमें उस समय के राजा–महाराजाओं और छोटे–बड़े सभी लोगों के बारे में भी जानकारी देता है ।

स्वाति ने एक बहुत ही अच्छा प्रश्न किया कि ''हम इतिहास का अध्ययन क्यों करें''?

गुरु जी ने सभी को समझाया कि–हमें यह मालूम होना बहुत जरूरी है कि हम पहले क्या थे? वर्तमान को समझने के लिए भूतकाल की जानकारी होना जरूरी है।

इतिहास बड़ा ही रोचक और रोमांचक होता है। यह हमारे विकास की कहानी है। हम अपनी सभ्यता और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ इतिहास पढ़कर ही जान सकते हैं। हम समझ सकते हैं कि हमारी आज की उन्नति के पीछे हमारा लंबा और महान अतीत छुपा हुआ है। जो हमें लगातार आगे बढ़ने में मदद दे सकती हैं ।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(अ) सिंघनपुर की गुफाएँ ———————— के पास स्थित है ।
(ब) जो पुरानी चीजों की खोज करते हैं उन्हें ———————— कहते हैं ।
(स) महंत घासीदास संग्रहालय ——————— में है ।
(द) कबरा की पहाड़ी पर बने शैल चित्र —————काल के हैं।
(ई) किरारी गांव से प्राप्त —————— ऐतिहासिक महत्व का है।

2. सही जोड़ी मिलाइए–

अ.	महाभारत	–	शैल चित्र
ब.	पाली	–	दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह
स.	कबरा पहाड़ी	–	ग्रंथ
द.	संग्रहालय	–	शिलाओं पर खोदकर लिखी गई बातें
इ.	शिलालेख	–	प्राचीन भाषा

3. हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए–

(अ) इतिहास में सिर्फ राजा महाराजाओं के बारे में ही अध्ययन किया जाता है । ( )
(ब) सिंघनपुर की गुफाओं के शैलचित्र आदिमानव काल के हैं । ( )
(स) ताँबे के पत्रों पर खोदकर लिखी गई बातें भोजपत्र कहलाती हैं । ( )

4. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) इतिहास किसे कहते हैं ?
(ब) इतिहास जानने के साधन क्या–क्या हैं ?
(स) प्राचीन लेख किन भाषाओं में लिखे गए हैं ?
(द) पुरातत्ववेत्ता किसे कहते हैं ?
(इ) हमें इतिहास जानना क्यों आवश्यक है ?
(फ) प्राचीन वस्तुओं से इतिहास की जानकारी कैसे होती है ?

योग्यता विस्तार

1. अपने आस–पास के किसी संग्रहालय का अवलोकन कीजिए और वहाँ देखी गई चीजों की सूची बनाइए ।
2. मुद्रा नहीं थी तब लोग आपसी लेन–देन कैसे करते थे ?

अध्याय 2

HKARD1

आदिमानव

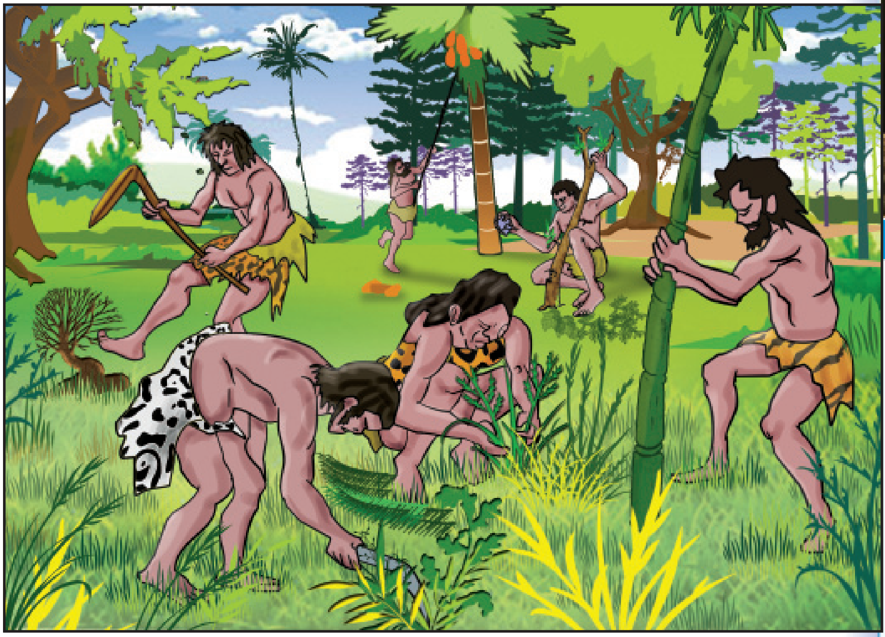

चित्र–2.1 संग्रहण

चित्र– 2.2

आदिमानव छोटे–छोटे समूहों में रहा करते थे। लेकिन वे किसी एक जगह घर बनाकर नहीं रहते थे। जब जंगल में किसी एक स्थान पर कंद–मूल, फल, शिकार आदि समाप्त हो जाता था तो उनका पूरा समूह दूसरे स्थान की ओर चल देता था। इस तरह वे भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।

इन चित्रों को ध्यान से देखिए और आपस में चर्चा कीजिए कि इनमें क्या–क्या हो रहा है।

आज से हजारों साल पहले हमारे पूर्वजों का रहन–सहन हमारे जैसा नहीं था। वे जंगलों में रहते थे और जंगली कंद–मूल एवं फल, आदि इकट्ठा करके खाते थे। साथ ही वे जानवरों का शिकार करके उनका मांस भी खाते थे। आज आपके भोजन की ज्यादातर चीजें खेतों में उगती हैं लेकिन उन दिनों लोग खेती नहीं करते थे।

आइए – कुछ चीजों की सूची बनाते हैं–

1. क्या आप बता सकते हैं कि आपके भोजन में ऐसी कौन–कौन–सी चीजें हैं जिन्हें जंगलों से इकट्ठा किया जाता है ?
2. आपके भोजन और आदिमानवों के भोजन में क्या–क्या अंतर है ?
3. क्या आदिमानवों को बर्तनों व चूल्हों की जरूरत पड़ी होगी ?

आदिमानव पेड़ों की पत्तियों, छाल तथा जानवरों की खाल से अपने शरीर को ढँकते थे। पुरुष और महिलाएँ आभूषणों का उपयोग करते थे। वे लकड़ी, सीप, शंख, चमकीले पत्थर एवं हड्डी से बने आभूषणों का प्रयोग करते थे।

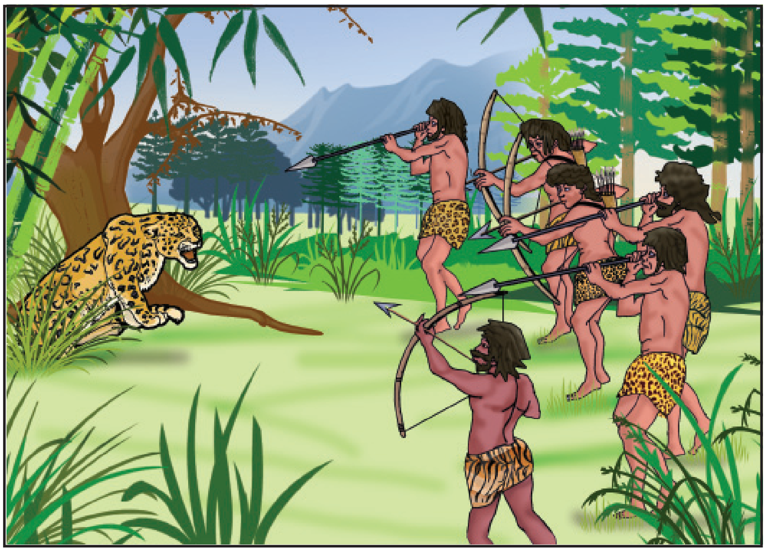

चित्र–2.3 शिकार

आइए, अपने साथियों से चर्चा करके इन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

1. आदिमानव घर क्यों नहीं बनाते थे?
2. अगर वे घर नहीं बनाते थे तो रात कहाँ गुज़ारते होंगे?
3. आदिमानव ऊनी या सूती कपड़े क्यों नहीं पहनते थे?
4. जंगलों में तो अनेक किस्म के हिंसक जानवर रहे होंगे। उन जानवरों से वे अपना बचाव किस प्रकार करते होंगे?
5. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे?

IkRFkjk d vkStkj

उन दिनों लोग लोहा या पीतल जैसी धातुओं से परिचित नहीं थे। वे अपने आस–पास प्राप्त होने वाले पत्थरों से काम चलाते थे। यही पत्थर का टुकड़ा उनका पहला औजार या हथियार था। इन पत्थरों को वे ध्यान से अपनी जरूरत के अनुसार आकार देते थे। शुरू में बड़े पत्थरों से चिप्पियाँ निकालकर औजार बनाने लगे। बाद में पत्थरों के छोटे चिप्पियों को लकड़ी या हड्डी में लगाकर और अधिक उपयोगी औजार बनाते थे। हाथ में आसानी से पकड़े जा सकने वाले पत्थरों से हथौड़े, कुल्हाड़ी, बसूले आदि बनाए जाते थे।

आदिमानवों ने जानवरों का शिकार करने के लिए तीर और भाले भी बनाए, जिनके नोंक पत्थरों के होते थे। वे पशुओं की हड्डियों एवं सींगों से भी हथियार बनाते थे। औजारों का उपयोग आमतौर पर जंगली अनाज इकट्ठा करने, जमीन खोदकर कंद–मूल निकालने तथा जानवरों की खाल उतारने के लिए किया जाता था।

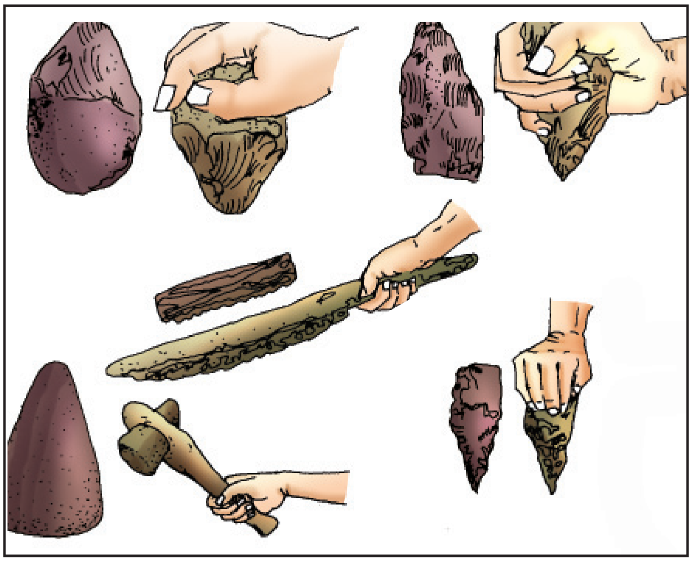

चित्र–2.4 पत्थरों के औज़ार

1. चित्र 1.3 में दिखाए गए पत्थरों के आकार को देखकर बताइए कि उस समय इनसे क्या–क्या किया जाता रहा होगा ?
2. बताइए उस समय को पाषाण (पत्थर) काल क्यों कहते हैं?

आग का उपयोग

ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि औजार बनाते समय या किसी और समय दो पत्थरों के आपस में टकराने से चिंगारी निकली होगी। इससे आसपास की सूखी पत्तियाँ या घास, आदि जल उठी होंगी। इस प्रकार संयोग से हमारे पूर्वजों को आग जलाने का तरीका पता चला होगा। बाद में वे आग द्वारा जंगली जानवरों से अपनी रक्षा भी करने लगे। वे आग में मांस को भूनकर खाने लगे। आग द्वारा ठंड से अपने शरीर की रक्षा भी करने लगे थे।

कैसे पता करते हैं?

क्या आप जानते हैं कि आजकल भी दुनिया में ऐसे लोग हैं जो जंगलों पर निर्भर हैं? वे एक स्थान पर स्थाई रूप से निवास नहीं करते हैं और भोजन–पानी की तलाश में जगह–जगह घूमते रहते हैं। वे भी जंगली कंद–मूल, फल, अनाज आदि खाते हैं तथा शिकार भी करते हैं। छत्तीसगढ़ के वनांचल जैसे बस्तर और सरगुजा में भी कुछ लोगों का जीवन जंगल में शिकार और वनोपज इकट्ठा करने पर आधारित है।

हम आज के ऐसे लोगों के जीवन का अध्ययन करके आदिमानवों के जीवन के बारे में काफी कुछ अनुमान लगा पाते हैं। इसके अलावा हमें खुदाई से उस जमाने की काफी चीजें मिलती हैं, जैसे पत्थरों के औजार और जानवरों की हड्डियों से बने हथियार आदि। उस ज़माने के लोगों ने गुफाओं की दीवारों पर बहुत से चित्र भी बनाए थे जो हजारों साल बाद आज भी हमें देखने को मिलते हैं। इन सब से हमें आदिमानवों की जीवन शैली के बारे में काफी कुछ जानकारी मिलती है।

सामूहिक जीवन

आदिमानव छोटे समूह में रहते थे और उनमें आपसी सहयोग की भावना थी। कंद–मूल, फल, अनाज, आदि इकट्ठा करने का काम आमतौर पर महिलाएँ व बच्चे करते थे। पुरुष मिलजुल कर शिकार करते थे। लेकिन कभी–कभी पुरुष और महिलाएँ दोनों शिकार करते थे और कंद–मूल भी इकट्ठा करते थे। इस प्रकार जो कुछ भी उन्हें प्राप्त होता था, उसे सब लोग मिल–बाँट कर खाते थे। किसी भी वस्तु को बचा कर नहीं रखा जाता था। समूह की सभी चीजों पर सबका समान अधिकार था। उनमें कोई अमीर या गरीब नहीं होता था।

समूह के लोगों में कार्यों का कोई बँटवारा नहीं था। सब लोग सभी काम जैसे– पत्थर के औजार बनाना, शिकार करना, कंद–मूल इकट्ठा करना आदि करते थे। आपस में चर्चा करें कि –

आदिमानवों के समाज में कोई अमीर या गरीब क्यों नहीं हो सकता था ?

धार्मिक रीति–रिवाज व मान्यताएँ

आदिमानव प्रकृति के बहुत करीब थे और पेड़–पौधे, पशु–पक्षी आदि को अपने सगे–संबंधी मानते थे। वे देवताओं में भी विश्वास करते थे। वे मानते थे कि उन्हें खुश करने पर अच्छा शिकार और खाने की अन्य चीजें मिलेंगी। वे अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिये समय–समय पर नाच–गान करते थे। इनमें वे जानवरों के शिकार करने का अभिनय करते थे।

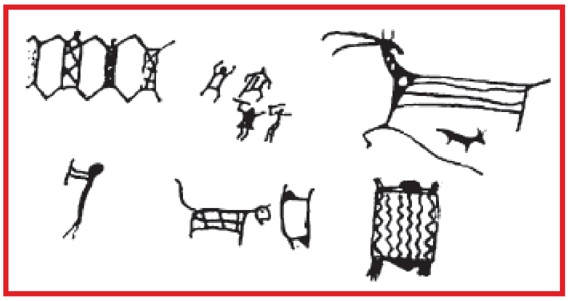
चित्र–2.5 सिंघनपुर व कबरा पहाड़ी के शैल चित्र

ऐसे ही विश्वास के आधार पर वे गुफाओं की दीवारों पर रंग–बिरंगे चित्र भी बनाते थे। शायद वे मानते थे कि इन चित्रों के माध्यम से उन्हें अपने शिकार में

सफलता मिलेगी। छत्तीसगढ़ में रायगढ़ जिले के कबरा पहाड़ी और सिंघनपुर तथा दुर्ग जिले के चितवाडोंगरी और डौंडीलोहारा की गुफाओं में आदि मानवों के बनाए गए चित्र मिले हैं। ये चित्र रंगीन हैं। इनमें छिपकली, घड़ियाल तथा अन्य पशुओं के चित्र हैं। सिंघनपुर की गुफाओं में गहरे लाल रंग के चित्र हैं। यहाँ मनुष्य की आकृतियाँ बनी हैं तथा आड़ी–तिरछी लकीरें भी बनाई गई हैं। एक आकृति में कुछ लोग एक पशु का शिकार करते हुए दिखाए गए हैं। सीढ़ीनुमा आकृति इन चित्रों की विशेषता हैं।

1. आदि मानव चित्र बनाने के लिए रंग किस प्रकार बनाते होंगे ? शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए।
2. क्या आज भी पर्व त्यौहारों में नाचना–गाना और चित्र बनाना शामिल है – अगर हाँ तो कुछ उदाहरण दीजिए।

आदिमानवों ने अपने परिश्रम और सूझबूझ से इस धरती के बारे में बहुत–सी जानकारी प्राप्त की, जो आज भी हमारे काम आती हैं। उन्होंने ही यह पता किया कि कौन–कौन से पौधे व फल खाए जा सकते हैं, कौन–कौन से पौधे दवा के काम आते हैं, कौन–कौन से पौधे विषैले होते हैं। उन्होंने आग जैसी महत्वपूर्ण शक्ति पर नियंत्रण किया। औजार बनाने के लिए उचित पत्थर और लकड़ी खोजे। घने जंगलों में आने–जाने के रास्ते खोजे। जानवर और पेड़–पौधों के गुणों को बारीकी से देखकर पहचान बनायी। यही बातें आगे चल कर खेती और पशुपालन करने के आधार बने।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

आज से लगभग दस हज़ार साल पहले जंगल से भोजन इकट्ठा करने वाले इन लोगों के जीवन में काफी बदलाव आने लगा। दुनिया के अलग–अलग भागों में रहने वाले लोग कुछ नए तरह के प्रयोग करने लगे। कहीं वे कुछ जंगली जानवरों को पालतू बनाने लगे तो और कहीं वे तरह–तरह के अनाज और पौधे उगाने लगे। इससे लोगों के जीवन में बदलाव आया।

पालतू जानवर

माना जाता है कि सबसे पहले मनुष्यों ने कुत्तों को पाला। कुत्ते बचे हुए भोजन को खाते थे और शिकारियों को शिकार में मदद करते थे। इसके बाद जंगली भेड़, बकरी या गाय आदि जानवरों को भी पाला जाने लगा।

1. इन जानवरों से मनुष्य को क्या–क्या लाभ मिल सकते थे ?
2. कौन–कौन–सी ऐसी चीजें हैं जो उन्हें केवल जानवरों के शिकार से नहीं मिल सकती थी ?

खेती

हमने देखा कि शुरुआत में मनुष्य खेती नहीं करते थे। शायद उन्हें खेती करने की जरुरत ही नहीं थी क्योंकि इतना कुछ खाने की चीजें उन्हें बगैर मेहनत के मिल जाती थीं, तो उन्हें खेती करने की जरुरत ही नहीं पड़ी होगी। लेकिन आगे चलकर यानि आज से करीब दस हजार साल पहले कई समूहों ने खेती करना शुरु किया। वे जान चुके थे कि खाकर फेंके हुए फलों के बीजों से या अनाज के दानों से नए पौधे उग आते हैं। धीरे–धीरे इसी तरह खेती का विस्तार दुनिया भर में हुआ। भारतीय उपमहाद्वीप में खेती की शुरुआत आज से करीब पाँच–छह हजार साल पहले हुई।

शुरुआत में जो खेती होती थी वह आज की तरह स्थाई नहीं होती थी, यानि एक ही खेत में साल–दर–साल खेती नहीं की जाती थी। इस समय खेती के लिए पहले कुछ क्षेत्र के जंगलों को जलाकर साफ किया जाता था। फिर उस स्थान पर दो–तीन साल तक लगातार खेती की जाती थी। उसके बाद खेत में पैदावार कम होने लगती थी। फिर उस स्थान को छोड़ कर किसी दूसरे स्थान पर खेती करते थे।

इस किस्म की खेती को स्थानांतरण खेती या झूम खेती कहते हैं। आज से लगभग 50–100 साल पहले तक इस प्रकार की खेती प्रचलित थी। भारत में विशेषकर उत्तर–पूर्वी राज्यों व अन्य आदिवासी क्षेत्रों में इसी तरह की खेती की जाती थी। छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में विशेषकर बस्तर तथा सरगुजा जिलों के सघन आदिवासी क्षेत्रों में इस तरह की झूम खेती अभी भी होती है।

कक्षा में चर्चा कीजिए कि खेती अपनाने के बाद लोगों के जीवन में क्या–क्या बदलाव आए होंगे? इसे अपनी कापी में लिखें।

स्थाई रूप से बसने लगे

खेती की शुरुआत के कारण इस समय के मनुष्यों के जीवन में काफी बड़ा परिवर्तन आया। समूह के सभी लोगों की मेहनत से खेती का इलाका फैलता गया। वे शिकार तो अब भी करते थे किन्तु भोजन की तलाश में जगह–जगह घूमने की जरूरत उन्हें नहीं रही। इसके अतिरिक्त अब लोग एक स्थान पर स्थाई रूप से बसने लगे। खेती करने के कारण उनका एक स्थान पर लंबे समय तक रहना जरुरी हो गया क्योंकि फसलों की बुआई से ले कर कटाई तक में काफी समय लगता था। लगातार खेतों में काम व रखवाली करनी पड़ती थी। फसल जब पककर कट जाती थी तो उसे सालभर के उपयोग के लिए बचाकर भी रखना पड़ता था। इन कारणों से खेती करने वाले लोग स्थाई रुप से अपने खेतों के आस–पास ही घर बनाकर रहने लगे। वे लकड़ी, मिट्टी और घास–फूस आदि से घर बना कर स्थाई रुप से रहने लगे। ये घर नदियों, तालाबों और नालों के आसपास बनाए जाते थे। जंगली जानवरों से बचाव के लिए वे अपने घर व बस्ती के चारों ओर घेरा भी बनाते थे।

घरों में अनाज भरकर रखने के लिए बड़े – बड़े कोठे बनने लगे। अनाज पकाने व दूध उबालने के लिए बर्तन बनने लगे, और चूल्हे बनने लगे। अनाज पीसने के लिए सिलबट्टे भी बनने लगे। इस तरह इस काल में मनुष्यों ने कई नई चीजों को बनाना शुरु किया।

इस समय के लोग धरती और प्रकृति को ईश्वरीय शक्ति या देवी माँ का रुप मानते थे। इन शक्तियों को खुश करने के लिए वे पूजा, नाच–गान करते और जानवरों की बलि भी देते थे।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. औजारों को ––––––––––– के हत्थों में बाँधकर अधिक उपयोगी बनाया गया।
2. सिंघनपुर की गुफाएँ ––––––––––– जिले में स्थित है।
3. भारत में खेती की शुरूआत ––––––––––– हजार साल पहले हुई।
4. आदिमानव का पहला पालतु पशु ––––––––––– था।

(ब) संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

1. आदिमानव एक जगह रहते तो उनके सामने क्या–क्या समस्याएँ आतीं ?
2. आदिमानवों के औजार किन–किन चीजों के बने होते थे ?
3. आदिमानवों के जीवन के बारे में हमें कैसे पता चलता है ?
4. छत्तीसगढ़ में मिले गुफा चित्रों की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?
5. पशुपालन से आदि मानव को क्या–क्या लाभ हुआ?
6. खेती करने के लिए लोगों को एक जगह क्यों बसना पड़ा?
7. खेती करने वाले लोग धरती को देवी माता मानकर उसकी पूजा क्यों करते थे?

(स) योग्यता विस्तार –

1. पाषाणकाल के औजारों के चित्र बनाइए।
2. आदिमानव काल में खेती नहीं थी, तब वह, अपना पेट कैसे भरते थे?

अध्याय **3**

HKTIGB

सिंधु घाटी की सभ्यता

(2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.)

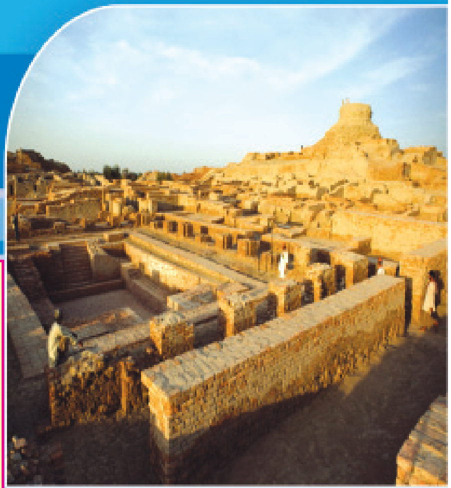

चित्र–3.1

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि आदिमानव पेड़ों के नीचे या गुफाओं में रहा करते थे और घुमंतू जीवन व्यतीत करते थे। वे कंद–मूल, फल एवं मांस मछली खाकर जीवन यापन करते थे। समय के साथ–साथ उनके रहन–सहन और भोजन में परिवर्तन होने लगा। वे कृषि एवं पशुपालन भी करने लगे। कृषि, पशुपालन एवं धातुओं के प्रयोग ने मानव जीवन को काफी बदल दिया।

ekufp= 3-1

1. मानचित्र 3.1 में देखिए कि सिंधु नदी का मैदान कहाँ पर है?
2. यह मैदान आज किन–किन देशों के बीच फैला है?

इन बदलावों में जो सबसे बड़ा बदलाव था, वह था उनका एक जगह पर स्थाई रुप से बसना। इन लोगों की बसाहट ज्यादातर ऐसी जगह होती थी, जहाँ खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी और पर्याप्त पानी मिलता रहे। ऐसी जगह आमतौर पर नदियों के किनारे मिलते हैं। यही कारण है कि मनुष्य नदियों के किनारे बसने लगे। आज भी हम देखते हैं कि नदी घाटियों में अधिक बसाहट होती है। इस पाठ में हम ऐसी ही एक सभ्यता के बारे में पढ़ेंगे जो आज से लगभग 4500 साल पहले सिंधु नदी के मैदान में विकसित हुई थी।

एक दिन कक्षा में सोनू और संध्या की शिक्षिका सिंधु घाटी के शहरों के बारे में बता रहीं थीं। उन्होंने कहा, ''बच्चो, आज से लगभग सौ साल पहले की बात है। सिंधु नदी के मैदान में कुछ लोगों को दो बड़े शहरों की चीजें मिट्टी के टीलों के नीचे दबी हुई मिली। ये शहर थे–हड़प्पा और मोहनजोदड़ो। खोजबीन से पता चला कि इन शहरों में आज से लगभग साढ़े चार हजार साल पहले लोग रहते थे।''

संध्या को बड़ा अचरज हुआ। उसने पूछा, क्या वास्तव में ये शहर मिट्टी में दबे हुए थे।

शिक्षिका – आप ही बताइए क्या आपने अपने आसपास किसी ऐसी जगह के बारे में सुना है जहां से जमीन के नीचे दबी कोई पुरानी चीज़ का पता चला हो।

सोनू – हाँ। मैंने सुना है कि पास के गाँव के खेत में एक किसान को जमीन में गड़ी हुई कुछ चीजें मिली हैं। उन चीजों में कुछ सिक्के एवं पुराने समय की मूर्तियाँ थीं।

क्या तुम्हारे गाँव में भी ऐसी कोई चीज किसी को ज़मीन के नीचे गड़ी मिली है?

शिक्षिका – बच्चो, इसी तरह लगभग सौ साल पहले सिंधु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो नामक स्थान में कुछ मजदूर रेल्वे लाइन बिछाने का काम कर रहे थे। रेल्वे लाइन के बीच में आ रहे एक टीले को हटाने के लिए जब उन्होंने खुदाई की तो पता चला कि उसके नीचे एक दीवाल थी। लोगों की उत्सुकता बढ़ी और उन्होंने उसके नीचे और खुदाई की। खुदाई से पता चला कि एक पूरा–का–पूरा शहर मिट्टी के नीचे दबा हुआ है। विद्वानों ने जब आसपास के इलाकों में खुदाई की तो इस तरह की और कई जगहें मिलीं। इनमें से ज्यादातर जगहें सिंधु नदी के आस–पास स्थित थीं। इस कारण इसे सिंधु–घाटी की सभ्यता के नाम से पुकारा जाने लगा। आजकल इसे हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।

संध्या ने पूछा – इसे हड़प्पा संस्कृति क्यों कहते हैं ?

शिक्षिका – सबसे पहले सन् 1921 ई. में हड़प्पा नामक जगह पर खुदाई की गई थी। वहाँ से ईंट, मिट्टी के बर्तन, आदि मिले थे बाद के स्थानों (जैसे मोहनजोदड़ो, आदि) की खुदाई में भी वैसी ही वस्तुएँ, मकान आदि मिले जिनसे वहाँ के जन–जीवन, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, तीज–त्यौहार और उस काल की संस्कृति आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। इस कारण इसे हड़प्पा संस्कृति का नाम दिया गया।

चित्र 3.2 कालीबंगा की खुदाई से मिले अवशेष

श्रीकांत ने पूछा – हड़प्पा और मोहनजोदड़ो कहाँ पर हैं? इनकी खोज किसने की?

चित्र 3.3 नक्काशीदार बर्तन हड़प्पा संस्कृति

शिक्षिका – बच्चो, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब एवं सिंध प्रांत में है। मोहनजोदड़ो की खुदाई सन् 1922 ई. में श्री राखलदास बनर्जी के नेतृत्व में की गई थी।

विकास ने पूछा – क्या इस सभ्यता से संबंधित कोई जगह भारत में भी है ?

शिक्षिका – तुमने ठीक पूछा– अभी तक भारत में लगभग 250 से अधिक ऐसी जगहों की खोज की जा चुकी है। इनमें प्रमुख हैं– गुजरात में धोलावीरा एवं लोथल, राजस्थान में कालीबंगा, पंजाब में रोपड़ तथा उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर। इस प्रकार सिंधु सभ्यता का फैलाव अफगानिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और पश्चिमी–उत्तर प्रदेश तक था। यह सभ्यता लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक विकसित रही।

यह आज से कितने साल पहले की बात है ? गणना कीजिए।

तुषार ने पूछा– आप हड़प्पा सभ्यता के बारे में विस्तार से बताइए।

शिक्षिका – बच्चो, इस बारे में हम कुछ चर्चा करेंगे। पहले मानचित्र को ध्यान से देखिए और बताइए की ये स्थान किन–किन नदियों के किनारे हैं ? इनकी सूची बनाइए।

मानचित्र 3.1 को देखकर स्थानों एवं नदियों के नामों की सूची बनाइए।

शहरों की बसाहट

दूसरे दिन शिक्षिका से उज्ज्वल ने कहा – आप हमें सिंधु सभ्यता के बारे में विस्तार से बताइए।

शिक्षिका – सबसे पहले हम सिंधु सभ्यता के लोगों की नगर योजना एवं भवन निर्माण के बारे में चर्चा करेंगे।

बच्चो, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से पता चला कि, ये नगर भी आज के शहरों में बने कालोनियों की तरह सुनियोजित ढ़ंग से बसाए गए थे। नगर दो हिस्सों में बसे थे। एक हिस्सा ऊपरी भाग में था जिसके चारों तरफ एक परकोटा (ऊँची दीवार) था। दूसरा हिस्सा थोड़ा नीचे की तरफ था। निचले भाग के नगर में बसाहट अधिक थी। सड़कें चौड़ी और सीधी थीं जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। सड़क के दोनों किनारों पर मकान और नालियाँ बनी थी। मकान पक्की ईंटो से बने थे तथा एक मंजिला और दो मंजिला दोनों तरह के थे। मकानों में आँगन, शौचालय और स्नानघर बने हुए थे। प्रत्येक मकान में पानी के निकास के लिए नालियाँ बनी थीं जो सड़क के किनारे प्रमुख नालियों में जाकर मिलती थीं। नालियाँ पक्की और ढँकी हुई होती थीं। इन सब बातों से स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता सुनियोजित ढंग से बनाये गए मकान और बसाये गए नगर थे।

प्रमुख भवन

अंकिता ने पूछा – चित्र 3.4 में एक कुंड जैसा क्या दिखाई दे रहा है?

चित्र–3.4 मोहनजोदड़ो के स्नानागार

शिक्षिका – इस चित्र में आपको जो कुंड या तालाब जैसा दिखाई दे रहा है, वह मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त स्नानागार है। यह नगर के ऊपरी हिस्से में बना हुआ है। इस स्नानागार के चारों ओर कमरे बने हुए हैं। बीच आँगन में चौकोर कुंड है। यह कुंड लगभग 12 मीटर लंबा, 7 मीटर चौड़ा और 2.5 मीटर गहरा है। इसके किनारे में कुआँ भी बना हुआ था। संभवतः इससे पानी भरा जाता रहा होगा। गंदे पानी की निकासी के लिए नाली भी बनी हुई हैं। इसके फर्श की जुड़ाई भी इस तरह की गई थी कि किसी प्रकार की नमी या पानी का रिसाव न हो। इस स्नानागार का प्रयोग संभवतः किसी सार्वजनिक कार्य, धार्मिक कार्य या किसी विशेष कार्यक्रम के समय किया जाता रहा होगा।

> आपस में चर्चा कीजिए और बताइए कि इस स्नानागार का प्रयोग मोहनजोदड़ो के निवासी किस तरह करते होंगे ?

विनय ने पूछा – क्या इस तरह का कोई और भवन भी प्राप्त हुआ है ?

शिक्षिका – विनय तुमने ठीक पूछा– हड़प्पा की खुदाई में एक विशाल भवन का पता चला है जो गोदाम की तरह का है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यह अन्नागार (अनाज रखने का स्थान) होगा। ऐसे भवन सिंधु घाटी के कई और जगहों से भी प्राप्त हुए हैं। संभवतः इन अन्नागारों में आसपास के गाँवों से कर के रुप में प्राप्त अनाज रखे जाते रहे होंगे। इनका उपयोग प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकंप, बाढ़ या सूखे की स्थिति से निपटने के लिए किया जाता रहा होगा।

शासन व्यवस्था

सोनू ने पूछा – सिंधु घाटी वासियों की शासन व्यवस्था कैसी थी ? क्या वहाँ राजा होते थे ?

शिक्षिका – बच्चो, उन शहरों में कुछ भवन बड़े थे और एक परकोटे से घिरे थे। लगभग सभी शहरों में एक ऊँची बस्ती होती थीं जिसमें प्रमुख भवन हुआ करते थे। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ एक वर्ग शासकों का था जो शासन चलाते होंगे। संभवतः केन्द्रीय शासन व्यवस्था रही होगी जिसके अधीन अन्य छोटे–छोटे प्रांत होते होंगे। वहाँ राजा होते थे या नहीं, हमें सही–सही पता नहीं है। किन्तु कुछ मूर्तियों को देखकर लगता है कि वे उनके राजाओं के रहे होंगे।

काम–धंधे

मोनू ने पूछा– सिंधु घाटीवासी क्या–क्या काम धंधे करते थे?

शिक्षिका – उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे पशुपालन भी करते थे। संभवतः इसी कारण वे नदियों के किनारे बसते थे। सिंधु वासियों की प्रमुख फसलें गेहूँ, जौ, तिल, कपास आदि थे।

सिंधु घाटी के शहरों में अच्छे कुशल कारीगर भी रहते थे। उन्हें धातुओं का ज्ञान भी था। वे ताँबा, पीतल, राँगा, शीशा एवं काँसा आदि धातुओं से परिचित थे। खुदाई में यहाँ से बड़ी मात्रा में कांसे और तांबे के बर्तन, औजार और मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। काँसे का प्रयोग होने के कारण इस सभ्यता को कांस्य युगीन सभ्यता भी कहते हैं, लेकिन इन्हें लोहे का ज्ञान नहीं था। इस कारण दैनिक जीवन में पत्थरों से बने औजारों का काफी महत्व था। औजारों के अलावा सिंधु घाटी के लोग रंग–बिरंगे कीमती पत्थरों के बारीक मनके से माला बनाते थे। समुद्री सीपों व शंखों से चूड़ियाँ भी बनाते थे। उनके कुम्हार तो कमाल के कारीगर थे। वे बहुत ही सुंदर बर्तन बनाते थे जिन पर चित्र भी बनाए जाते थे। यहाँ उद्योग से संबंधित वस्तुएँ, कुम्हार के भट्ठे, काँसा बनाने वाले कारीगर का भट्ठा, कपड़े रंगने के भट्ठे, और मनके बनाने के कारखानों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

व्यापार

सिंधु घाटीवासियों का व्यापार भी उन्नत अवस्था में था। यहाँ आंतरिक एवं विदेशी दोनों तरह के व्यापार होते थे। सिंधुवासी कपास, इमारती लकड़ी, ताँबे के औजार, हाथी दाँत एवं पत्थर के आभूषणों का निर्यात करते थे। वे सोना, रंग–बिरंगे कीमती पत्थर, आदि का आयात करते थे। विदेशी व्यापार में मेसोपोटेमिया के शहर प्रमुख केन्द्र थे। आंतरिक व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से और विदेशी व्यापार मुख्य रुप से जल मार्ग से होता था। लोथल की खुदाई से नाव का एक नमूना एवं गोदी के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि लोथल से जल मार्ग द्वारा व्यापार होता था।

काजू ने पूछा – गोदी किसे कहते है?

शिक्षिका – आपने ठीक पूछा– गोदी उस स्थान को कहते हैं, जहाँ समुद्र या नदी किनारे सामान चढ़ाने और उतारने के लिए जहाज खड़ा किया जाता है। यह आधुनिक बंदरगाह का छोटा रुप होता है। लोथल को हम बंदरगाह नगर भी कह सकते हैं।

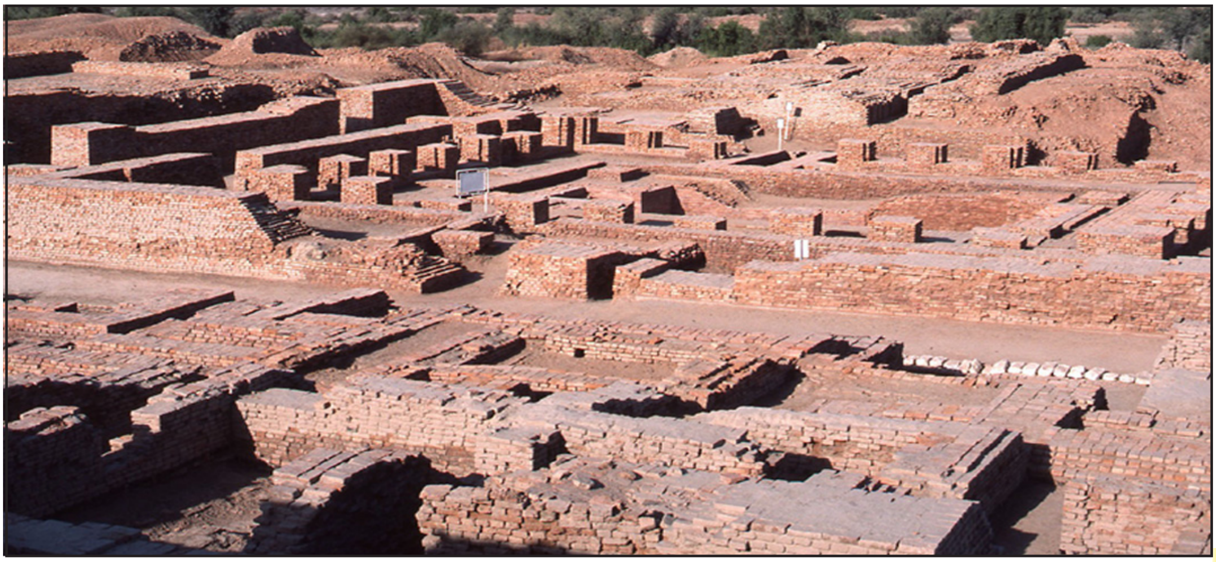

चित्र–3.5 मोहनजोदड़ो शहर की सड़कें एवं नालियाँ

खान–पान, रहन–सहन

संदीप ने पूछा – वहाँ के लोग क्या–क्या खाते होंगे और क्या पहनते होंगे? क्या वे भी आदि मानवों की तरह खाल पहनते थे ?

शिक्षिका – सिंधु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, तिल, दूध, मांस, मछली आदि खाते थे। वे सूती एवं ऊनी कपड़ों का प्रयोग करते थे। हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त श्रृंगारपेटी तथा अन्य आभूषणों के अवशेषों से पता चलता है कि स्त्री और पुरुष दोनों श्रृंगार करते थे। स्त्रियाँ माला, चूड़ियाँ, बाजूबंद, कर्णफूल, पायल आदि आभूषणों का प्रयोग करती थीं। जो सोना, हाथीदाँत, ताँबे और बहुमूल्य पत्थरों के बने होते थे।

सिंधुवासी मनोरंजन के लिए नृत्य, पासे का खेल आदि खेलते थे। बच्चे मिट्टी के खिलौनों का उपयोग करते थे। उन शहरों के खंडहरों से बहुत से खूबसूरत खिलौने मिले हैं।

सोनू जानना चाहता था कि वे लोग किन देवी–देवताओं की पूजा करते थे। शिक्षिका ने समझाया कि सिंधु सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त वस्तुओं से लोगों के धर्म के संबंध में भी पता चलता है। यहाँ मातृदेवी की बहुत–सी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनसे यह माना जाता है कि वे मातृदेवी की पूजा करते थे। हड़प्पा में तीन मुँह वाली आकृति की एक मोहर भी प्राप्त हुई है जिनके सिर पर सींग का मुकुट है और चारों तरफ शेर, हाथी, गेंडा और हिरन के चित्र बने हुए हैं। माना जाता है कि वह पशुपति या शिव का कोई पूर्व रूप रहा होगा। खुदाई से प्राप्त अधिकांश मोहरों और बर्तनों में पीपल के पेड़ तथा कई तरह के पशुओं के चित्र बने हैं। एक मुहर में कूबड़दार बैल का चित्र मिला है। इन बातों से लगता है कि वे वृक्ष पूजा एवं पशु पूजा भी करते थे। पीपल उनका प्रमुख पूजनीय वृक्ष था। सिंधुवासी मृतकों का अंतिम संस्कार भी करते थे। संभवतः वे शवों को जमीन में गाड़ देते थे।

चित्र–3.6 बैल गाड़ी का खिलौना

लिपि

शुभ्रकांत ने पूछा – क्या सिंधु सभ्यता के लोग पढ़ना लिखना भी जानते थे ?

शिक्षिका – बच्चो, खुदाई से जो मोहरें, मिट्टी के बर्तन एवं अन्य वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं उनमें लिपि के कुछ नमूने मिलते है। यह चित्रलिपि है। जो दाई से बाई ओर लिखी जाती थी। दुर्भाग्य से इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। अतः हमें उनकी पढाई–लिखाई के बारे में सही–सही जानकारी नहीं मिल पाई हैं।

HX7RHV

सिंधु सभ्यता का अंत

सोनू ने पूछा – इतनी विकसित सभ्यता का अंत कैसे हो गया ? किस प्रकार पूरा–का–पूरा शहर मिट्टी में दब गया ?

शिक्षिका – बच्चो, यह विषय आज तक रहस्यमय बना हुआ है कि इतनी बड़ी सभ्यता का अंत कैसे हो गया। किंतु ऐसा माना जाता है कि किन्हीं कारणों से उनका शहरी जीवन धीरे–धीरे कमजोर होता गया। लोग ऐसे काम धंधों में लगने लगे जिसके लिए शहरों में बसकर रहना जरूरी नहीं रहा होगा। इस कारण इन शहरों की आबादी घटने लगी होगी और शहर समय के साथ नष्ट हो गए होंगे। वहाँ रहनेवाले लोग छोटे–छोटे गांवों में रहने लगे होंगे।

कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि बाढ़ या भूकंप जैसे किसी प्राकृतिक उथल–पुथल के कारण सिंधुवासी धीरे–धीरे वह स्थान छोड़कर चले गए होंगे।

ये सभी बातें सुनकर बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। सब सिंधु घाटी के शहर कैसे थे, कैसे खत्म हुए होंगे, इन बातों पर चर्चा करते हुए अपने–अपने घर चले गए।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मोहनजोदड़ो की खुदाई सन् ––––– में हुई।
2. हड़प्पा की खुदाई सन् ––––– में हुई।
3. लोथल नगर को ––––– नगर भी कहा जाता है।
4. अनाज का गोदाम ––––– में प्राप्त हुआ है।
5. विशाल स्नानागार ––––– में है।
6. सिंधुवासी विदेशी व्यापार ––––– मार्ग से करते थे।

HXGMYI

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सिंधु सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था ?
2. सिंधुवासी कौन–कौन सी धातुओं से परिचित थे ?
3. सिंधुवासी किन–किन वस्तुओं का व्यापार करते थे ?
4. सभ्यताओं का नदियों के किनारे विकसित होने के क्या कारण हैं ?
5. इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता क्यों कहते हैं ?
6. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्यों प्रसिद्ध हैं ?
7. लोथल की प्रसिद्धि के क्या कारण हैं ?
8. सिंधु सभ्यता के लोगों के रहन–सहन का वर्णन कीजिए।
9. सिंधु सभ्यता के लोग किन–किन सामाजिक वर्गों में बँटे थे ?

(स) संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

1. नगर–योजना 2. भवन निर्माण 3. विशाल स्नानागार 4. अन्नागार 5. गोदी

;kX;rk foLrkj &

1. सिरकट्टी–पांडुका

   'लोथल की तरह छत्तीसगढ़ में गरियाबंद जिले के पांडुका ग्राम के पास सिरकट्टी नामक स्थान पर पैरी नदी में प्राचीन बंदरगाह का अवशेष प्राप्त हुआ है। यहाँ पर स्थित डाकयार्ड अर्थात् व्यापारिक नाव खड़े होने की गोदी (बंदरगाह) है। यह चट्टानों को काट कर बनाई गई थी जो 5 से 6.5 मीटर तक चौड़ी है। ऐसा अनुमान है कि बंदरगाह के साथ वस्तु–विपणन केन्द्र भी था। यहाँ से देश–विदेश में नदी मार्ग द्वारा व्यापार होता था।

   यह लोथल में प्राप्त बंदरगाह के बाद के किसी काल का है। लेकिन उसके समान ही है।
2. पकी मिट्टी से बने खिलौनों की सूची बनाइए। कौन से खिलौने बच्चों को अधिक पसंद आए होंगे?
3. सिंधु घाटी के सौन्दर्य प्रसाधन और आज के सौन्दर्य प्रसाधन में क्या अंतर है?

अध्याय 4

HXQJ16

वैदिक काल

(आज से 3500 से 4000 वर्ष पूर्व)

पिछले अध्याय में हमने सिंधु या हड़प्पा संस्कृति के बारे में जाना। उसके बाद हम सिंधु–सरस्वती नदियों के मैदान में पुनः एक नई संस्कृति का विकास होते देखते हैं। इसे वैदिक संस्कृति कहते है। वैदिक संस्कृति को विकसित करने वाले अपने आपको आर्य कहते थे। आर्य शब्द का अर्थ होता है– श्रेष्ठ या सुसंस्कृत!

चित्र–4.1

HXZF2T

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। ये व्यापक ज्ञान से पूर्ण हैं। इस प्रकार के साहित्य कहीं भी देखने के लिए नहीं मिलते हैं। वेदों की भाषा प्राचीन संस्कृत है। वेद चार हैं–

1.ऋग्वेद, 2.यजुर्वेद, 3. सामवेद, एवं 4. अथर्ववेद। संपूर्ण वैदिक साहित्य को "श्रुति" साहित्य कहा जाता है (श्रुति यानि सुना गया)। श्रुति परम्परा में गुरु द्वारा शिष्य को मौखिक रूप से वेद मंत्र सिखाए जाते हैं। सुनकर शिष्य सस्वर पाठकर स्मरण करते हैं। इस तरह यह ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी सावधानी पूर्वक हस्तांतरित होता रहा है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ हैं। इसके मंत्रों को "सूक्त" कहा जाता है। सूक्त का अर्थ है– अच्छी तरह से बोला गया। इन सूक्तों में देवी–देवताओं की स्तुति की गई है। इसके अध्ययन से हमें उस समय की विस्तृत जानकारी मिलती है।

वैदिककाल को हम दो भागों में बाँट सकते हैं–

1. ऋग्वैदिक या पूर्व–वैदिक काल ।
2. उत्तर–वैदिक काल ।

इन दोनों कालों की विशेषताओं का उल्लेख हम आगे करेंगे ।

ऋग्वैदिक या पूर्व–वैदिक काल–

आर्थिक जीवन

ऋग्वैदिक काल में लोग सप्तसिंधु प्रदेश में रहते थे। सप्तसिंधु का अर्थ है– सात नदियाँ, जो सिंधु नदी और उनकी सहायक नदियों का क्षेत्र है।

इन क्षेत्रों को मानचित्र 4.1 में पहचानें तथा बताएँ इनमें कौन–कौन–सी नदियाँ सम्मिलित है?

ekufp= 4-1

वैदिक काल के लोगों का प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था। वे खेती भी करते थे, जौ उगाते थे लेकिन खेती उनका प्रमुख व्यवसाय नहीं था। गायें उनकी मुख्य पूंजी थीं। वे गायों की पूजा करते थे और गायों से दूध, मक्खन, घी आदि प्राप्त करते थे। उनका एक अन्य उपयोगी पशु घोड़ा था जिसे वे रथों में जोतते थे। इनके अलावा वे भेंड़–बकरी और कुत्ते भी पालते थे। वे पशुओं को चारागाह में चराते थे। ये चारागाह संभवतः उनके सामूहिक अधिकार में थे। वे अपने पशुओं के लिए चारा कम पड़ने पर नई जगह में जाकर बस जाते थे।

रथकार या लकड़ी के रथ बनानेवाला उनका महत्वपूर्ण कारीगर था। आर्य महिलाएँ सूत कातती थीं और कपड़े भी बुनती थीं।

रहन–सहन

इस काल में आर्यों का जीवन सीधा–सादा एवं सरल था। वे लकड़ी एवं मिट्टी के घरों में रहते थे। अपनी गायों के लिए बड़ी–बड़ी गौशालाएँ बनाते थे। उनके भोजन में दूध, दही, मक्खन, छांछ, घी, गेहूँ, जौ, मांस आदि प्रमुख रूप से शामिल थे।

पिता परिवार का मुखिया होता था । समाज में पुरूषों का अधिक महत्व था । वैदिक समाज मे महिलाओं को सम्मान प्राप्त था। वे यज्ञ जैसी धार्मिक क्रियाओं में पुरूषों के साथ भाग लेती थी । इस समय महिलाएँ शिक्षित होती थी। कई महिलाओं ने वेदों के सूक्तों की रचना भी की है ।

वैदिक काल के लोगों के भोजन एवं हमारे भोजन मे क्या–क्या समानताएँ एवं असमानताएँ हैं ?

समाज

वैदिक काल में समाज का प्रमुख आधार परिवार होता था । एक गाँव या बस्ती में कई परिवार के लोग रहते थे । वे सभी एक दूसरे के रिश्तेदार होते थे । ऐसे कई गाँव के लोगों को मिला कर जन बनता था । उस समय ऐसे कई जन थे जैसे–पुरुजन, कुरुजन, यदुजन आदि

क्या आज भी एक गाँव के सभी लोग एक दूसरे के रिश्तेदार होते है ?

उन दिनों वैदिक लोगों के अलावा कई ऐसे लोग भी थे, जो संस्कृत नहीं बोलते थे। उनका रहन–सहन, आचरण आदि वैदिक लोगों से अलग था । इन्हे वैदिक लोग दास, दस्यु या पणि कहते थे। वैदिक जन और इन लोगों के बीच कभी–कभी युद्ध भी होते थे। लेकिन वे एक ही स्थान में रहने के कारण एक दूसरे की बातें भी सीखने लगे थे। उनमें मेल–मिलाप भी होने लगा था। ऋग्वैदिक कालीन समाज में जाति–पांति या छुआ–छूत जैसी बुराइयाँ नहीं थी। सभी लोग समान माने जाते थे।

राजा

ऋग्वेद से पता चलता है कि उन दिनों जन के सभी पुरूष मिलकर अपना राजा चुनते थे। राजा का काम युद्ध में नेतृत्व करना, यज्ञ करना और लोगों की समस्याओं का निपटारा करना था। तब राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था, अर्थात् पिता के बाद पुत्र ही राजा नहीं बन सकता था। राजा को सभी महत्वपूर्ण निर्णय सभा के सदस्यों की सलाह से लेना होता था। इसलिए वह अपने जन पर मनमानी नहीं कर सकता था । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैदिक जनों की शासन व्यवस्था गणतांत्रिक व्यवस्थाओं पर आधारित थी ।

1. आप जानते है कि आजकल गाँव या शहर से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय कहाँ लिए जाते है?
2. आज की शासन व्यवस्था कैसी है ?

युद्ध

कभी–कभी पशुओं या चारागाहों के लिए जन एक दूसरे से युद्ध करते थे उनकी कोई स्थाई सेना नहीं होती थी । आवश्यकता पड़ने पर जन के सभी पुरूष मिलकर युद्ध करने जाते थे । युद्ध में राजा उनका नेतृत्व करता था । हारे हुए लोगों के पशु ,धन–सम्पदा, चारागाह आदि विजेता राजा अपने जन

के लोगो मे बाँट देता था । समय–समय पर जन के लोग अपने राजा को भेंट भी देते थे, जैसे– दूध, घी, अनाज, आभूषण, गाय आदि । राजा इसमें से एक हिस्सा स्वयं रख लेता था और बाकी हिस्सा अपने जन के सभी लोगों में बाँट देता था ।

जन के लोग राजा को भेंट क्यों देते होंगे ?

देवी–देवता व यज्ञ

वैदिक लोग समय–समय पर अपने देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करते थे। वे अपने देवताओं से जीवन में खुशहाली, संतान, गायें, घोड़े, रोगमुक्ति और युद्ध में विजय की प्रार्थना करते थे। उनके प्रमुख देवता इंद्र, अग्नि, वरूण, सोम आदि थे। वे यज्ञ में अग्निकुंड के माध्यम से दूध, दही, घी, जौ आदि देवताओं को समर्पित करते थे। साथ में उनकी स्तुति में वैदिक सूक्तों का वाचन भी होता था।

वैदिक सूक्तों में देवताओं की स्तुति के अलावा प्रकृति का वर्णन, विश्व की उत्पत्ति, संबंधित विचार भी सम्मिलित हैं। वैदिक संस्कृति की सबसे बड़ी देन इस प्रकार है –

1. संस्कृत भाषा :– संस्कृत भारत की अधिकांश भाषाओं की जननी है।
2. वैदिक साहित्य :– ये भारत की सबसे प्राचीन साहित्य हैं।
3. गणतांत्रिक परम्पराएँ :– छोटे–छोटे जनपदों का युग।

उत्तरवैदिक काल

उत्तरवैदिक काल वह काल था जब यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद की रचना हुई। इस समय वैदिक संस्कृति सिंधु–सरस्वती नदियों के क्षेत्र से आगे बढ़कर गंगा–यमुना नदी के मैदान तक फैल चुकी थी। इस काल में कृषि की उन्नति के कारण नए उद्योग–धंधों का भी विकास हुआ। इससे राज्यों का बनना और विकास होना भी शुरू हो गया ।

जनपद

जन के लोग जिस क्षेत्र में निवास करते थे वह उनको जनपद कहा जाने लगा । जैसे–कुरुजनपद, पांचाल जनपद, सूरसेन जनपद आदि।

कृषि का विकास और भौतिक समृद्धि

उत्तर वैदिक काल में कृषि की उन्नति हुई। किसान कई प्रकार के अन्न का अधिक मात्रा में उत्पादन करने लगे, जैसे– चावल, गेंहू, तिलहन, दाल आदि।

खेती की उन्नति के कारण वैदिक कालीन समाज में भौतिक समृद्धि दिखाई देने लगी। इस समय नए–नए आभूषण, चमड़े की चीजें, लकड़ी की चीजें बनानेवाले कुशल कारीगर होने लगे। इसके साथ ही विभिन्न धातुओं का उपयोग लोगों के जीवन में बढ़ने लगा। विशेष रूप से वे लोहे का उपयोग करने लगे थे। इसे वे कृष्ण अयस्क या काला धातु कहते थे। इन सबकी जानकारी हमें वैदिक ग्रंथों से मिलती है। खुदाई से उस समय की चीजें जैसे मिट्टी के बर्तन, लोहे के औज़ार आदि चीजें मिली है।

उत्तर वैदिक काल में कौन–कौन से उद्योग धंधे विकसित हुए ?

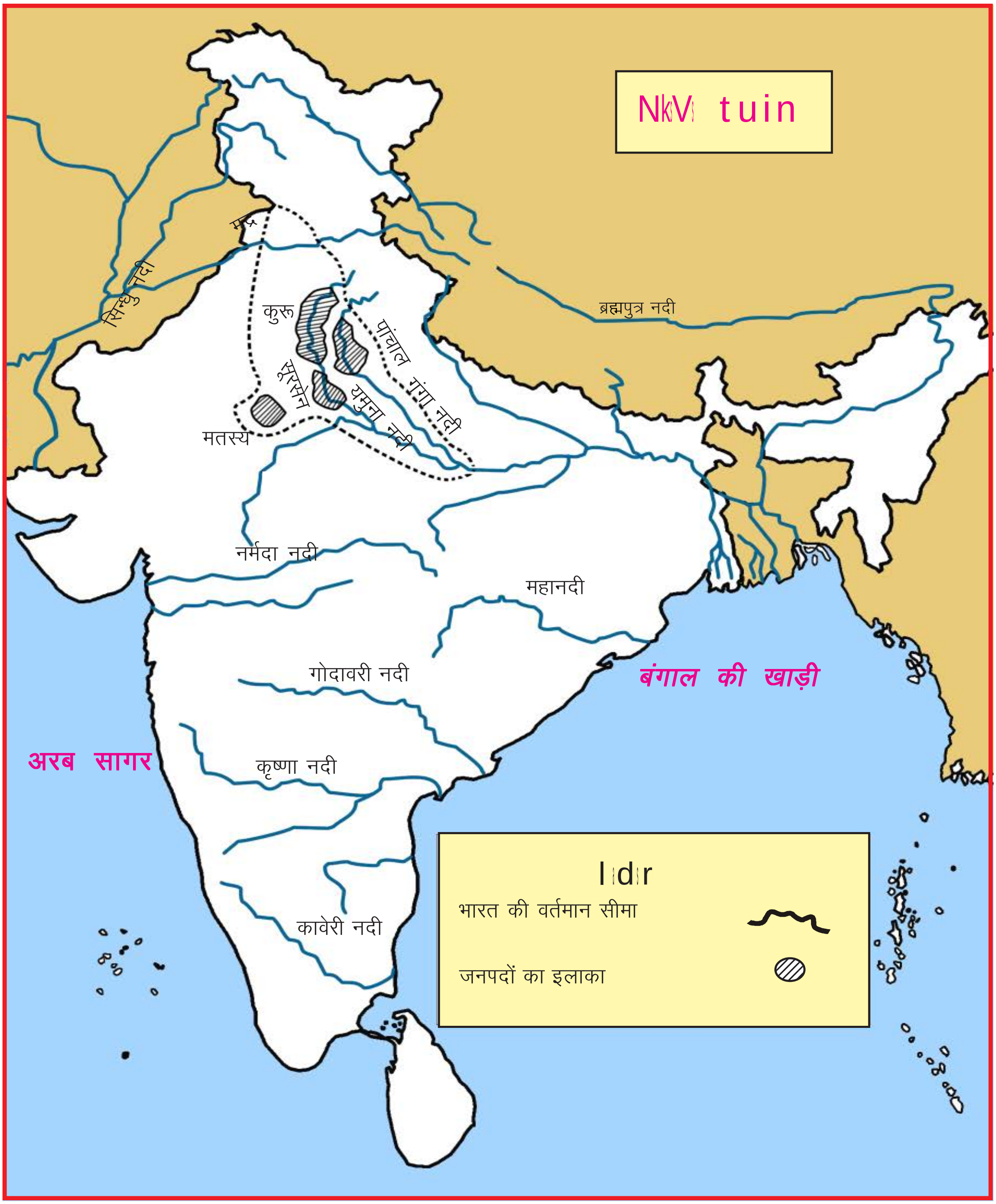

मानचित्र 4.2

मानचित्र 4.2 देखकर जनपदों को पहचानें। ये जनपद किन नदियों के किनारे बसे थे ?

समाज और धर्म

वैदिक काल में संयुक्त परिवार का प्रचलन था। सभी भाई व कई पीढ़ी के लोग एक ही परिवार

में साथ–साथ रहते थे। सबसे बुजुर्ग पुरूष परिवार का मुखिया होता था। उसे गृहपति कहते थे। सभी लोग उसकी बात मानते थे।

वैदिक साहित्य के अनुसार प्रत्येक मनुष्य का जीवन चार अवस्थाओं में बँटा था जिसे आश्रम–व्यवस्था कहा जाता था। इनमें पहला था ब्रह्मचर्य आश्रम– इसमें मनुष्य बाल्यावस्था में शिक्षा प्राप्त करता था। दूसरा, गृहस्थ आश्रम– इसमें मनुष्य विवाह कर परिवार चलाता था। तीसरा, वानप्रस्थ आश्रम–इसमें मनुष्य परिवार से दूर रहकर चिंतन–मनन करता था। चौथा, सन्यास आश्रम–इसमें मनुष्य घर परिवार से दूर होकर तीर्थ–यात्रा करते हुए जीवन का अंतिम समय व्यतीत करता था।

क्या आपका परिवार भी संयुक्त परिवार है ? चर्चा करें।

उत्तर वैदिक काल में ज्यादातर गृहपति खेती और पशुपालन करते थे। इन्हें वैश्य कहा जाता था। इन गृहपतियों के आस–पास उनकी सेवा करनेवाले सेवक लोग भी रहते थे। गृहपति समय–समय पर राजा को भेंट दिया करते थे। जिससे राजा और राज्य का खर्च चलता था।

पूरे जन के मुखिया को राजा कहते थे। उसके रिश्तेदार और सहयोगियों को राजन्य कहा जाता था। उनका मुख्य काम जनपद की रक्षा करना था। लेकिन युद्ध के समय पहले की तरह ही जन के सारे पुरूष सम्मिलित होते थे।

उत्तर वैदिक–साहित्यों से पता चलता है, कि राजा और राजन्य बड़े–बड़े यज्ञ करने लगे थे। जैसे– अश्वमेघ यज्ञ, राजसूय यज्ञ आदि। जो कई महीने चलते थे। इनमें बहुत धन खर्च होता था। इन यज्ञों को ब्राह्मण या पुरोहित संपन्न कराते थे। ब्राह्मणों को धन, गायें आदि दान में प्राप्त होते थे। उनकी मान्यता थी कि इन यज्ञों से जनपद में खुशहाली आएगी तथा राजा शक्तिशाली बनेगा।

उत्तर वैदिक काल में समाज चार वर्णों में बँटा था। पहला ब्राह्मण वर्ण, जो यज्ञ करवाते थे और वेद पढ़ते–पढ़ाते थे। दूसरा क्षत्रिय वर्ण, जो जनपद में शासन और उसकी रक्षा करते थे। तीसरा वैश्य वर्ण, जो जनपद में खेती और पशुपालन करते थे। चौथा शूद्र वर्ण, जो सेवा–कार्य करते थे। वर्ण–व्यवस्था के कारण ही आगे चलकर समाज में जाति–व्यवस्था पनपी।

महाकाव्यों की रचना

हमारे देश के दो महाकाव्यों रामायण और महाभारत की रचना उत्तर वैदिक काल की बातों पर आधारित है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना कोसल जनपद की बातों पर आधारित है। इसी प्रकार महर्षि व्यास द्वारा महाभारत की रचना कुरू, पांचाल और सूरसेन जनपद की बातों पर आधारित है। ये दोनों महाकाव्य भारतीय संस्कृति के आधार हैं। इन महाकाव्यों ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इनके अध्ययन से हमें इस समय के इतिहास की जानकारी मिलती है।

अभ्यास के प्रश्न

HY9B4G

(अ) खाली स्थान को भरिए–

क. वेदों की भाषा –––––––––––––– है ।

ख. संसार का सबसे प्राचीन ग्रंथ ––––––––––––––है ।

ग. आर्य———————————— धातु से परिचित थे।

घ. ऋग्वैदिक काल में सभी लोग ———————————— माने जाते थे।

इ. राजा को जन के लोग ————————————— देते थे।

(ब) उचित संबंध जोड़िए –

(क)	(ख)
1. सप्तसिंधु प्रदेश	राजन्य
2. रामायण	आर्य
3. महाभारत	वाल्मिकी
4. राजा के रिश्तेदार	व्यास

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वेदों के नाम बताइए।
2. आर्यो के प्रमुख देवी–देवताओं का नाम बताइए।
3. वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था कैसी थी ?
4. वैदिक काल के समाज में वर्ण व्यवस्था कैसी थी ?
5. आर्यों के रहन–सहन का वर्णन कीजिए।
6. वैदिक संस्कृति की प्रमुख देन का उल्लेख कीजिए।
7. ऋग्वैदिक काल में पशुपालन की विशेषताएं बताइए।
8. उत्तर वैदिक काल में कृषि एवं उद्योग–धंधों के विकास का वर्णन कीजिए।
9. ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति कैसी थी।
10. उत्तर वैदिक काल में परिवार की विशेषताएँ बताइए।

परियोजना कार्य

1. कालीदास की रचनाओं का पता करें और नाम लिखें।
2. आपके गाँव/शहर में किस–किस वर्ग के लोग रहते हैं? वे अपने त्यौहारों व उत्सवों को किस प्रकार मनाते हैं? क्या इन उत्सवों में अन्य वर्ग के लोग शामिल होते हैं?
3. आप अपने गाँव के बुजुर्गों से वनस्पतिक औषधियों के बारे में पता करें और उनके गुणों को लिखें।

अध्याय 5

HYI764

egk tuin dky

(600 ईसा पूर्व से 325 ईसा पूर्व तक)

भारत में 600 ईसा पूर्व अर्थात् आज से लगभग 2600 वर्ष पहले के काल को महाजनपद काल कहा जाता है। इस काल के भारत में अनेक छोटे–बड़े राज्य एवं गणराज्य बने। इस समय अनेक नए धार्मिक विचारों की भी शुरुआत हुई। साथ ही खेती, व्यापार, उद्योग–धंधे एवं नगरों का भी विकास हुआ। इसी प्रकार राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भी इस काल में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। ये बदलाव किस प्रकार के थे और किन कारणों से आए, इस पाठ में हम जानने की कोशिश करेंगे।

पिछले पाठ में हमने पढ़ा था कि गंगा–यमुना नदियों के मैदान में खेती होने लगी थी तथा वहाँ कई जनपद बन गए थे।

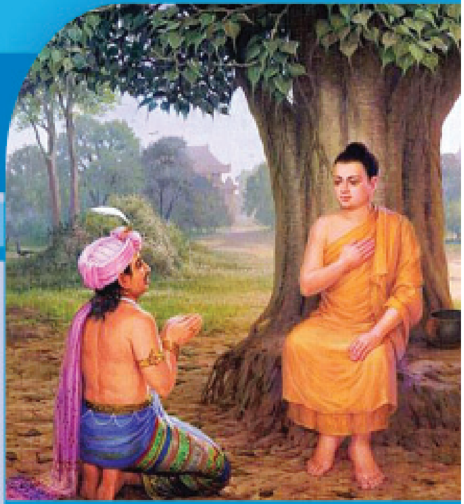

चित्र–5.1

1. जनपद किसे कहते है?
2. जनपदों में समाज कितने भागों में बँटा हुआ था?

इस काल में लोगों के जीवन में क्या–क्या परिवर्तन आए होंगे?

महाजनपद

HYS37R

धीरे–धीरे इन जनपदों का तेजी से विकास होने लगा। गंगा–यमुना के उपजाऊ मैदान में फसलें अच्छी होती थीं। दक्षिण बिहार (वर्तमान झारखंड) क्षेत्र में मिलने वाले खनिजों (मुख्य रुप से लोहा) से औज़ार एवं हथियार बनाए जाने लगे। इससे इस क्षेत्र के जनपदों की शक्ति बढ़ी तथा यहाँ उद्योग–धंधों का भी काफी विकास हुआ। उद्योग–धंधों के विकास के साथ यहाँ नगर भी बसने लगे। वे अपनी ताकत और आय बढ़ाना चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि कुछ शक्तिशाली जनपदों ने दूसरे जनपदों को जीत लिया। इन्हीं शक्तिशाली और बड़े जनपदों को 'महाजनपद' कहा गया।

याद रखिए

जन – एक वंश के लोगों का कबीला।

जनपद – एक जन के लोगों के बसने एवं खेती करने का इलाका।

महाजनपद – शक्तिशाली एवं बड़े जनपद।

इस प्रकार 600 ईसा पूर्व के भारत में अनेक जनपदों एवं महाजनपदों का उदय हो चुका था। इनमें से कुछ राजतंत्र एवं अन्य गणतंत्र शासनवाले थे। उस समय की बातें बताने वाले ग्रंथों के अनुसार उन दिनों पूरे भारत में 16 महाजनपद थे। ये सभी महाजनपद प्रभावशाली थे।

इन महाजनपदों में से अंग, काशी, कोसल, मगध आदि में ''राजतंत्र–शासन'' की व्यवस्था थी। इस व्यवस्था में शासन राजा द्वारा किया जाता था। इसमें राजा का पद वंशानुगत होता था अर्थात राजा के मरने के बाद उसका बड़ा बेटा राजा बनता था।

भारत के मानचित्र 5.1 में गंगा नदी के किनारे बसे महाजनपदों को पहचानिए।

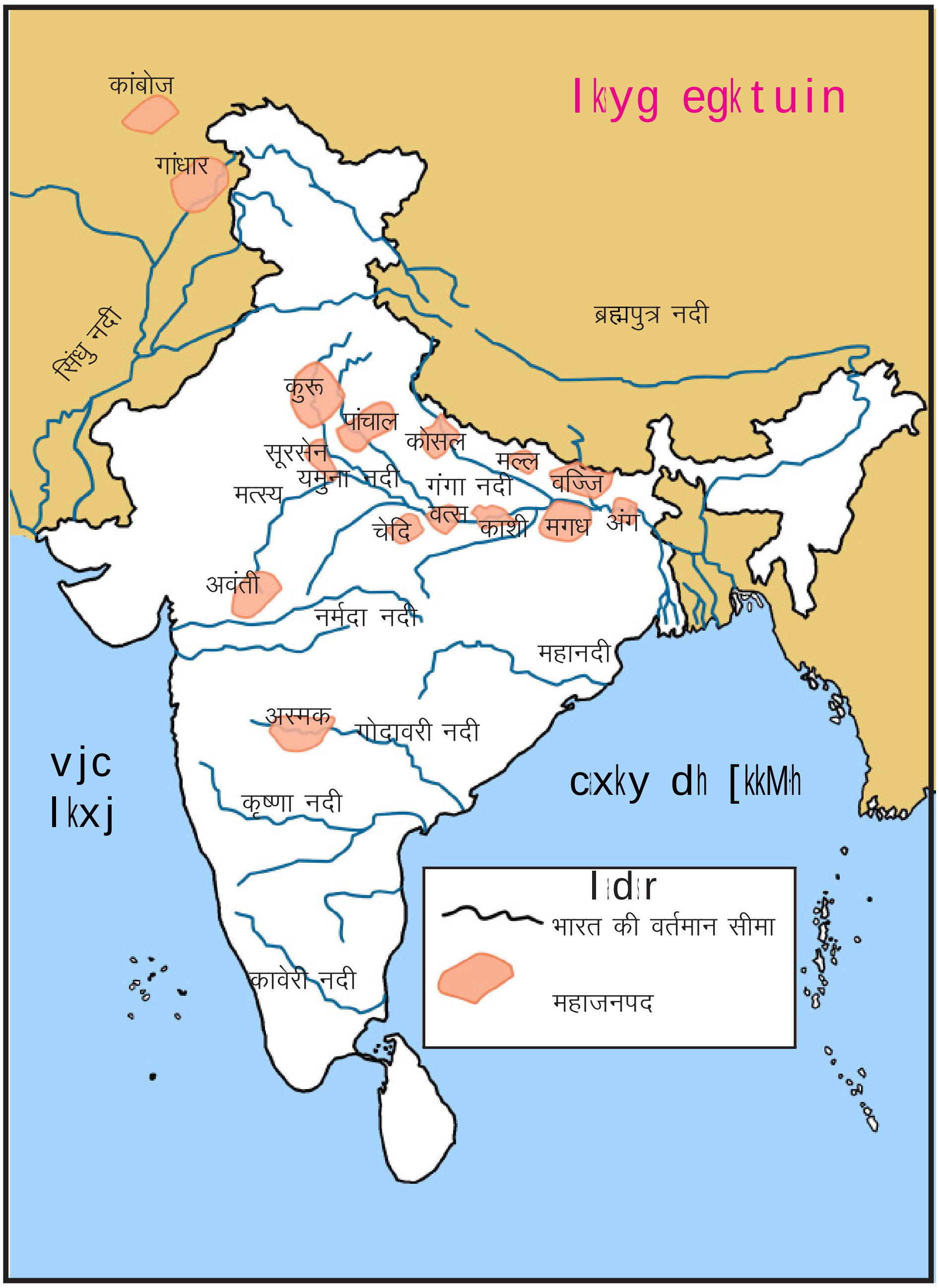

ekufp= 5-1

लेकिन वज्जि (वैशाली), शाक्य (कपिलवस्तु), मल्ल आदि महाजनपदों में गणतंत्र शासन की व्यवस्था थी। गणतंत्र शासन व्यवस्था में शासन एक ही वंश के पुरुषों की एक सभा के द्वारा किया जाता था। यह सभा अपने सदस्यों में से किसी एक को कुछ समय के लिए राजा भी चुन लेती थी। राजा का यह पद वंशानुगत नहीं होता था। गणराज्य के अंतर्गत आनेवाले दूसरे वर्ग के लोग, महिलाएँ, दास, व्यापारी आदि का शासन चलाने में कोई योगदान नहीं लिया जाता था। गणतंत्र शासन की यह व्यवस्था कुछ छोटे गणतंत्रों में बहुत लंबे समय तक चलती रही। मगर वज्जि जैसे कुछ महत्वपूर्ण गणराज्यों का अन्त मगध जैसे शक्तिशाली राज्यों के साम्राज्य–विस्तार की नीति के कारण हो गया।

याद रखिए

1. वंशानुगत – पिता से पुत्र को मिलनेवाला पद है।
2. राजतंत्र शासन – वह व्यवस्था जिसमें शासन किसी राजा या रानी द्वारा वंशानुगत रूप से किया जाता है।
3. गणतंत्र शासन – वह व्यवस्था, जिसमें शासन किसी चुने हुए व्यक्ति द्वारा एक निश्चित समय के लिए किया जाता है।
4. राज्यों एवं गणराज्यों में मुख्य अंतर क्या था?
5. आज की शासन–व्यवस्था और उस समय के गणराज्यों की शासन व्यवस्था में क्या अंतर है?

मगध साम्राज्य का उदय

544 ईसा पूर्व से 323 ईसा पूर्व तक महाजनपदकाल कहा जाता है। इस काल की शुरूआत में गंगा नदी की घाटी में कोसल, वत्स, और मगध सबसे शक्तिशाली राज्य थे। अवंति एक अन्य शक्तिशाली राज्य था, जिसकी राजधानी उज्जैन थी। ये अपने–अपने राज्यों की सीमाओं को बढ़ाने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। लेकिन अंत में सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में मगध साम्राज्य का उदय हुआ, जिसमें अनेक राज्य एवं गणराज्य हुए। राज्य को शक्तिशाली बनाने में वहाँ के राजा एवं जनता के अलावा वहाँ की प्राकृतिक संपदा का भी काफी योगदान रहा। मगध की भूमि बहुत उपजाऊ थी, इससे कृषि–उपज अच्छी होने लगी उसके दक्षिण क्षेत्र में लोहा प्रचुर मात्रा में मिलता था। इससे औजार और हथियार बनाए जाने लगे। इस प्रकार प्राकृतिक संपदा ने मगध को शक्तिशाली बनाया ।

बिंबिसार

बिंबिसार मगध का पहला प्रमुख राजा था। उसने एक शक्तिशाली सेना बनाई। उसने सेना एवं नीति दोनों से काम लेकर मगध को शक्तिशाली बनाना शुरू किया। उसने सबसे पहले कोसल की राजकुमारी से विवाह किया। इससे दहेज के रूप में उसे काशी का राज्य मिला। इसके बाद वैशाली की राजकुमारी से विवाह कर, वहाँ का समर्थन पाया। उसने दूर के जनपदों से मित्रतापूर्ण संबंध रखे। लेकिन अपने पड़ोसी जनपद पर चढ़ाई करके उसकी राजधानी चंपा पर अधिकार कर लिया।

बिंबिसार की शासन व्यवस्था

बिंबिसार एक योग्य शासक था। उसने राजगृह को अपनी राजधानी बनाया जो चारों तरफ से पहाड़ियों द्वारा सुरक्षित थी। वह अपने राज्य की शासन व्यवस्था पर कड़ी नजर रखता था। उसके समय में अपराधियों को कठोर सजा दी जाती थी। उसने किसानों और व्यापारियों से नियमित कर वसूल करने की व्यवस्था बनाई। उन करों से सेना, कर्मचारी एवं राजा का खर्च चलता था। लेकिन उसके ही पुत्र अजातशत्रु ने उसकी हत्या कर दी और स्वयं राजा बन गया।

1. बिंबिसार ने मगध को कैसे शक्तिशाली बनाया ?
2. बिंबिसार अपनी प्रजा से कर क्यों लेता था ?
3. मगध की प्राकृतिक संपदा का उसके विकास में क्या योगदान था ?

अजातशत्रु

राजा बनने के बाद अजातशत्रु ने भी अपने पिता की नीति को अपनाया तथा मगध का विस्तार किया। उसने वज्जि गणतंत्र में फूट डालकर उसे अपने राज्य में मिला लिया। उसके शासन काल में राजगृह के निकट सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध सम्मेलन हुआ था।

अजातशत्रु के बाद मगध में और कई राजा हुए जिन्होंने मगध राज्य का विस्तार किया।

नंद वंश

इस वंश का पहला शासक महापद्मनंद था। उसने अपनी विशाल सेना के बल पर उत्तर भारत के कई राज्यों तथा दक्षिण में कलिंग (उड़ीसा) को जीत लिया। इस समय तक मगध राज्य विस्तृत होकर साम्राज्य का रुप ले लिया था। नंद वंश का आखिरी राजा धनानंद था। वह कर वसूलते समय अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। इसलिए प्रजा उससे काफी दुखी थी।

इसी समय चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मगध पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में धनानंद मारा गया। इस प्रकार मगध में मौर्य वंश की शुरुआत हुई।

महाजनपदों में जनजीवन

महाजनपदों में राजा बहुत शक्तिशाली होता था। वह अपने राज्य में शासन एवं न्याय करता था। अपनी सहायता के लिये वह मंत्री, सेनापति एवं अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति करता था।

चित्र–5.2 महाजनपद काल के ठप्पे लगे आहत सिक्के

इस समय गाँवों में एक मुखिया होता था जो राजा एवं गांववासियों के बीच कड़ी का काम करता था। गाँवों के लोग मुख्यरुप से खेती एवं पशुपालन करते थे। जिन गाँवों में उद्योग–धंधे जैसे– शिल्पकारी, कारीगरी, धातुकर्म, बढ़ईगिरी एवं व्यापारी अधिक हुए वे गाँव धीरे–धीरे नगरों का रूप लेने लगे। इनमें से कई प्रसिद्ध नगर हुए – उज्जैन (मध्य प्रदेश में), चंपा, वैशाली, राजगृह (बिहार में), आदि। ये महानगर कहलाते थे। इन नगरों की खुदाई से पता चलता है कि यहाँ मकान लकड़ी, ईंट व पत्थरों से बनते थे। यहाँ तरह तरह की चीजें बनाने वाले कारीगर रहते थे। इन कारीगरों ने अपने अलग–अलग संगठन बना लिए थे, जिसे श्रेणी कहते थे। ये लोग अपनी श्रेणियों में रहकर साथ–साथ काम करते थे।

महाजनपद काल में व्यापार का भी खूब विकास हुआ। पहले वस्तुओं के बदले वस्तुओं से ही लेन–देन होता था। लेकिन इस काल में धातु (चाँदी एवं ताँबे) के सिक्कों का चलन शुरु हुआ। ये सिक्के धातु के टुकड़ों पर ठप्पा लगा कर बनाए जाते थे। ये आहत सिक्के कहलाते हैं। सिक्कों के चलन से व्यापार काफी सुगम हो गया।

इस समय सभी लोगों को कर देना पडता था। किसानों को अपनी उपज का छठवाँ हिस्सा कर के रुप में देना पड़ता था। शिल्पकारों को अपनी बनाई वस्तु के रुप में कर देना पड़ता था। व्यापारियों को भी वस्तु एवं नगद रुप में कर देना पड़ता था।

यह काल धार्मिक रुप से भी काफी बदलाव का काल था। इसके बारे में हम अगले पाठ में विस्तार से पढ़ेंगे।

क्या आज भी शिल्पकार व कारीगर संगठन बनाकर काम करते हैं?

महाजनपद काल में मगध साम्राज्य ने पूरे उत्तरी भारत में एक साम्राज्य स्थापित किया था। लेकिन

इसी समय पंजाब के क्षेत्र में कई छोटे–छोटे राज्य बने हुए थे। ईरान एवं यूनान के शासकों ने इन्हें हरा दिया।

सिकंदर

सिकंदर यूनान के मकदूनिया राज्य का राजा था। वह विश्व विजय करने निकला था और मध्य एशिया के राज्यों को जीतता हुआ 326 ई.पू. में उसने पंजाब के राज्यों पर आक्रमण किया। कुछ राज्यों को जीतने के बाद उसका सामना पंजाब के एक राजा पोरस से हुआ। कहा जाता है कि हारने के बाद जब राजा पोरस को सिकंदर के सामने लाया गया और सिकंदर ने उससे पूछा कि–आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए? तब पोरस ने उत्तर दिया– जैसे एक राजा दूसरे राजा के साथ व्यवहार करता है। पोरस के इस जवाब से सिकंदर बहुत प्रभावित हुआ और उससे मित्रता कर ली।

इसके बाद सिकंदर और आगे मगध की ओर बढ़ना चाहता था। लेकिन उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। इस प्रकार सिकंदर को लौटने के लिये विवश होना पड़ा।

सिकंदर के बाद यूनान और भारतीय राज्यों के बीच नए संबंध स्थापित हुए। भारतीय और यूनानी समाज के बीच विचारों का आदान–प्रदान शुरु हुआ तथा व्यापारिक संबंध भी स्थापित हुए। इसके अतिरिक्त भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में यूनानी और ईरानी लोगों की बसाहट भी शुरु हुई। इन लोगों ने आगे चलकर भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. गणतंत्र में वास्तविक शासन एक ही ——— के लोगों के हाथ में रहता था।
2. महाजनपद काल में मगध की राजधानी ——— थी।
3. प्राचीन भारत में ——— महाजनपद थे।
4. महाजनपद काल में ——— प्रसिद्ध गणराज्य था।

HZ1Y9E

(ब) सही/गलत बताइए–

1. राजतंत्र में राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।
2. गणराज्यों में राजा का पद वंशानुगत होता था।
3. किसानों को अपनी उपज का एक भाग कर के रुप में देना पडता था।
4. सिकंदर ईरान का राजा था।

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. महाजनपद कितने वर्ष पहले को कहा गया है?
2. धनानन्द से प्रजा क्यों दुःखी थी?
3. महाजनपद कैसे बने ?
4. महाजनपदों में नगरों का विकास कैसे हुआ ?
5. महाजनपदों में करों का क्या महत्व था ?
6. राज्यों एवं गणराज्यों की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
7. मगध को शक्तिशाली बनाने में बिंबिसार का क्या योगदान था ?

(द) गतिविधि–

अपने माता–पिता से पूछिए कि क्या वे कर देते हैं ? अगर हाँ तो कौन–कौन–से कर देते हैं ? वे कर वस्तु के रुप में देते हैं या नगद ?

अध्याय 6

HZAUB2

uohu /kkfeZd fopkjksa dk mn;

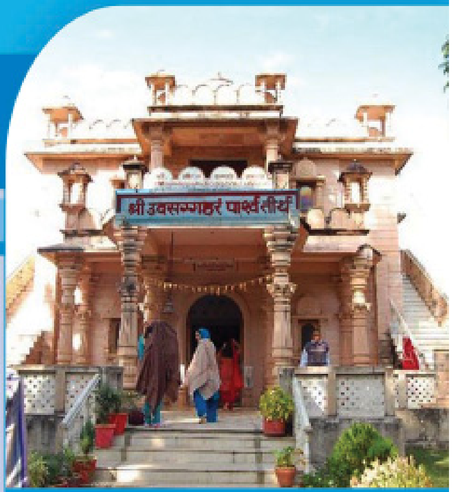

uxijk mo lXgj ik'oukFk rhFk

पिछले पाठ में हमने महाजनपद काल में राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों को जाना। इस पाठ में हम उसी समय धार्मिक मामलों में आए परिवर्तनों को जानने की कोशिश करेंगे।

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व समाज में और उस वक्त प्रचलित वैदिक धर्म में कई तरह की बुराइयाँ आ गई थी। वैदिक धर्म काफी खर्चीला हो गया था। यज्ञ, जिनका कि वैदिक धर्म में महत्वपूर्ण स्थान था, कर्मकांडों तथा पशुबली के कारण आम जनता की पहुँच से दूर हो गए थे।

समाज के विभिन्न वर्णों में भेदभाव के कारण संघर्ष दिखाई देने लगा था। आम जनता शक्तिशाली राजाओं के आपसी युद्धों से परेशान थी। इसके अलावा राजकीय कर्मचारी भी जनता का शोषण कर रहे थे। ऐसे वातावरण में सुधारवादी विचारों की शुरुआत हुई और जनता ने उनका खुशी से स्वागत किया।

सबसे पहले वैदिक धर्म में ही कर्मकांडों से अलग ऐसे मुद्दों पर विचार शुरु हुआ जिनसे आम आदमी रोजाना जूझता था। जैसे मनुष्य मरने के बाद कहाँ जाता है? आत्मा क्या होती है? मोक्ष किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? आदि। इन मुद्दों पर इस समय जो विचार उभरे वे पहले के विचारों से काफी सरल थे। इन नए विचारों का संकलन उपनिषदों में किया गया है।

इसी समय वैदिक परंपरा से अलग आडंबर विरोधी कई नए धर्मों की भी शुरुआत हुई। इनमें जैन और बौद्ध धर्म प्रमुख थे। आइये, हम इन दोनों धर्मों के बारे में थोड़ा विस्तार से जानें।

HZJQCP

स्वामी महावीर एवं जैन धर्म की शिक्षाएँ

जैन धर्म के महापुरूषों को तीर्थंकर कहा जाता है। स्वामी महावीर 24वें तीर्थंकर थे। उन्होंने जैन धर्म को नया स्वरूप प्रदान किया।

स्वामी महावीर का जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के निकट हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला देवी था।

इनके बचपन का नाम वर्धमान था। तीस वर्ष की उम्र में वर्धमान ने अपने बड़े भाई की आज्ञा प्राप्त कर सन्यास धारण किया। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद उन्हें ''कैवल्य'' अर्थात् सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई। कठोर तपस्या और सहनशीलता के कारण उन्हें ''महावीर'' कहा गया एवं इंद्रियों के विजेता होने के कारण उन्हें ''जिन'' भी कहा गया। 72 वर्ष की आयु में पावापुरी नामक स्थान में इनका निर्वाण हुआ।

चित्र–6.1 स्वामी महावीर

चित्र–6.2 महात्मा गौतम बुद्ध

जैन धर्म की शिक्षाएँ

जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने जीवन में त्रिरत्न (यानी तीन रत्नों) को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। ये त्रिरत्न पंचमहाव्रत (यानी पाँच व्रतों) के पालन करने से ही प्राप्त हो सकता है। इनका पालन करने से मनुष्य को ज्ञान तथा निर्वाण (जन्म एवं मृत्यु से मुक्ति) की भी प्राप्ति होती है। इन त्रिरत्नों में पहला था सत्य और असत्य का ज्ञान होना (सम्यक–ज्ञान)। दूसरा, सच्चा ज्ञान (सम्यक–दर्शन) और तीसरा था अच्छा कार्य करना और गलत कार्य त्यागना (सम्यक–चरित्र) इन त्रिरत्नों को प्राप्त करने के लिए जिन पाँच महाव्रतों को पालन करना जरुरी था वे थे – सदा सत्य बोलना (सत्य),मन वचन एवं कर्म से हिंसा न करना (अहिंसा), चोरी न करना (अस्तेय), धन का संग्रह न करना (अपरिग्रह), अपने इंद्रियों को वश में रखना (ब्रह्मचर्य)। महावीर स्वामी ने अहिंसा पर विशेष जोर दिया था। उन्होंने बुरे या कठोर वचन बोलने को भी हिंसा माना था। उन्होंने सभी मनुष्यों को समान बताया । जैन धर्म के सिद्धांतों को ''आगम'' ग्रंथों में संग्रह किया गया है। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर बहुत से लोगों ने जैन धर्म को अपनाया और भारत में दूर–दूर तक इस धर्म का प्रचार हुआ। इस धर्म को व्यापारी एवं शासक वर्ग ने विशेष आश्रय प्रदान किया। हमारे छत्तीसगढ़ में भी इस धर्म का प्रभाव प्राचीन काल से ही है। यहाँ रायपुर जिले के आरंग में एक प्राचीन जैन मंदिर है। दुर्ग जिले के नगपुरा नामक गांव में 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का प्राचीन मंदिर है। इसे उवसंग्हर पार्श्वनाथ तीर्थ कहा जाता है। पूरे भारत से यहाँ श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

महात्मा गौतम बुद्ध एवं बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा गौतम बुद्ध ने की थी। गौतम बुद्ध स्वामी महावीर के समय के ही थे। महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी नामक स्थान में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम मायादेवी था।

कहा जाता है कि एक दिन सिद्धार्थ महल से बाहर निकले तो उन्होंने सबसे पहले एक अत्यंत बीमार व्यक्ति को देखा। थोड़ा आगे जाने पर उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा तथा अन्त में एक मृत व्यक्ति को देखा। इन दृश्यों से उनके मन में प्रश्न उठा कि क्या मैं भी बीमार पड़ूंगा, बूढ़ा हो जाऊँगा और मर जाऊँगा। इन प्रश्नों ने उन्हें काफी परेशान कर दिया था। तभी उन्होंने एक परिब्राजक (सन्यासी) को देखा। इससे 29 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और सन्यास ग्रहण कर लिया। सिद्धार्थ ने ज्ञान की खोज में छः वर्षों तक कठोर तपस्या की। आपने एक पीपल के पेड़ के नीचे कठोर तपस्या की जहां पर उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ, जिसे ''संबोधि'' कहा गया। उस पीपल के पेड़ को तभी से बोधि–वृक्ष कहा जाता है। महात्मा गौतम बुद्ध को जिस स्थान पर बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ वह स्थान बोधगया कहा जाता है।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया था। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ

बौद्ध धर्म के अनुसार चार प्रमुख सच्चाइयों (चार आर्य सत्य) को हमेशा याद रखना चाहिए। ये सच्चाइयाँ ही बौद्ध धर्म के मूल आधार हैं।

ये हैं – संसार में दुख है (दुख का सत्य), दुख का प्रमुख कारण तृष्णा (तीव्र इच्छा) है। तृष्णा को त्यागकर दुख से छुटकारा पाया जा सकता है। सही आचरण एवं सभी बातों में मध्यम मार्ग अपनाकर दुख पर विजय (निर्वाण) पाया जा सकता है। इनके आधार पर यह लगता है कि बुद्ध ने अपने अनुयायियों को बीच का रास्ता अपनाने को कहा है अर्थात् न अधिक तप और न ही अधिक भोग–विलास करना

चाहिए। बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। बौद्ध धर्म ने जात–पाँत, ऊँच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया है। बुद्ध ने ईश्वर और आत्मा दोनों को नहीं माना। बुद्ध ने अपने शिष्यों को यह भी कहा कि उन्होंने किसी नए धर्म की स्थापना नहीं की है। यह धर्म हमेशा से चला आ रहा धर्म ही है। बुद्ध ने अपने विचार लोगों को उनकी ही भाषा (प्राकृत) में समझाया। उन्होंने बौद्ध संघों की भी स्थापना की जिसमें सभी जातियों के पुरुषों और महिलाओं को प्रवेश दिया। बौद्ध धर्म अपनी सादगी एवं सरलता के कारण भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी काफी लोकप्रिय हुआ। चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों में आज भी इस धर्म के अनुयायी हैं। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को तीन ग्रन्थों में एकत्र किया गया है जिन्हें ''त्रिपिटक'' कहते हैं। हमारा छत्तीसगढ़ भी किसी समय बौद्ध धर्म का एक बड़ा केन्द्र था। सातवीं शताब्दी में आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा विवरण में यह लिखा है कि दक्षिण कोसल की राजधानी सिरपुर बौद्ध शिक्षा का केन्द्र था। यहाँ सैंकड़ों विहार थे तथा यहाँ लगभग दस हजार बौद्ध भिक्षुक निवास करते थे। सिरपुर में की गई खुदाई से प्राप्त अनेक सुंदर बौद्ध मूर्तियों एवं मंदिरों के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि यहाँ बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

चित्र–6.3 सिरपुर के बौद्धकालीन मूर्तियाँ

बच्चों, आपने जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध के संबंध में पढ़ा। इन दोनों के अतिरिक्त इस समय कई और धार्मिक विचारक भी हुए थे। सभी ने अहिंसा, प्रेम और करूणा की शिक्षा दी तथा समाज में ऊँच–नीच के भेदभाव को गलत बताया। इससे हम समझ सकते हैं कि सभी धर्म मूलतः हमें बुराई से बचाते हैं और अच्छाई की शिक्षा देते हैं। इसलिए हमें सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थान को भरिए–

1 महावीर स्वामी का जन्म –––– ई.पू. में हुआ था।
2 महात्मा बुद्ध का जन्म –––– नामक स्थान में हुआ था।
3 महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश –––– में दिया था।
4 महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को –––– नामक ग्रंथों में संकलित किया गया हैं।
5 सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, और सम्यक चरित्र को जैन धर्म में –––– कहते हैं।

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. स्वामी महावीर का जीवन परिचय लिखिए।
2. जैन धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
3. महात्मा गौतम बुद्ध का जीवन परिचय लिखिए।
4. बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

HZTLEC

(स) संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

1 त्रिरत्न 2 चार आर्य सत्य 3 पंचमहाव्रत 4 आष्टांगिक मार्ग

(द) योग्यता विस्तार–

छत्तीसगढ़ के प्राचीन जैन मंदिर एवं बौद्धमठ के चित्र एकत्रित कीजिए।

अध्याय 7

I13HFZ

ek;l o'k vkj jktk v'kkd

(322 ई.पू. से 185 ई.पू.)

भारत के राष्ट्रध्वज को आपने लहराते देखा होगा। केसरिया, सफेद और हरे रंग से सजे तिरंगे के बीच में बना चक्र बहुत सुंदर दिखता है। यह चक्र कहाँ से आया?

चित्र–7.1 (भारत का राष्ट्रीय–चिन्ह)

यह चक्र लिया गया है सारनाथ स्तंभ से जिसे मौर्य वंश के प्रसिद्ध राजा अशोक ने बनवाया था। आमतौर पर इतिहास में उन राजाओं को महत्व मिलता है जिन्होंने बड़े–बड़े युद्ध जीते हैं। लेकिन अशोक की बात सबसे अलग है क्योंकि उसने युद्ध की जगह धर्म के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीता। दया, प्रेम और करुणा को अपने शासन का आधार बनाया।

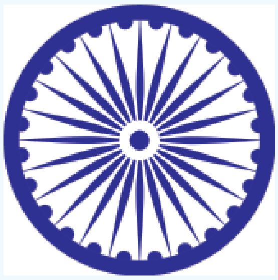

चित्र–7.2

अशोक–चक्र में कितनी धारियाँ हैं ?

हम राजा अशोक के बारे में बहुत–सी बातें करेंगे। लेकिन पहले चर्चा करते हैं चंद्रगुप्त मौर्य और बिंदुसार की, जो मौर्यवंश में अशोक से पहले हुए थे। अशोक के दादा चंद्रगुप्त मौर्य बहुत वीर और साहसी थे। चाणक्य नाम के एक बुद्धिमान पंडित की मदद से चंद्रगुप्त ने मगध के राजा धनानंद को हरा दिया। उत्तर और पश्चिम के कई हिस्सों को जीतने के अलावा उसने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस को भी हराकर यूनानी राजाओं का आगे बढ़ना रोक दिया। बाद में सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त से मित्रता कर ली और मेगस्थनीज नाम का राजदूत उसके पास भेजा। चाणक्य एक अच्छे लेखक भी थे, उनकी पुस्तक "अर्थशास्त्र" से हमें उस समय की शासन–व्यवस्था के बारे में काफी जानकारी मिलती है। इसी समय मेगस्थनीज ने भारत में जो कुछ देखा उसका अपनी पुस्तक "इंडिका" में वर्णन किया है। उसमें लिखा है कि भारतीय सभ्य थे। वे अपने घरों में ताले नहीं लगाते थे। अधिकतर गाँवों में रहकर खेती करते थे। सैनिकों को अच्छा वेतन मिलता था आदि। चंद्रगुप्त के बाद उसका बेटा बिंदुसार राजा बना। उसने दक्षिण के अनेक हिस्सों को जीतकर अपने राज्य को और बड़ा बना लिया। बिंदुसार के बाद अशोक सिंहासन पर बैठा। इस समय मौर्य राज्य बहुत बड़ा और शक्तिशाली हो चुका था। अशोक भी अपने पिता और दादा की तरह वीर और साहसी था। उसने कलिंग नामक स्वतंत्र जनपद के साथ युद्ध किया और उसे हराकर अपने राज्य में मिला लिया।

कलिंग–युद्ध

आमतौर पर यह देखा गया है कि युद्ध में सफलता मिलने पर राजा खुश होते हैं। कलिंग–युद्ध जीतकर भी अशोक का मन दुख से भरा रहा, क्योंकि युद्ध में लाखों सैनिक मारे गए, हजारों घायल हुए और अनेक स्त्री–बच्चे बेसहारा हुए। यह सब देखकर उसे युद्ध में मिली सफलता बेकार लगने लगी। तभी उसने संकल्प किया कि वह अब कभी युद्ध नहीं करेगा। उसने यह भी निश्चय किया कि वह हथियारों से शत्रु को हराने की जगह धम्म (धर्म) के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीतेगा, जिससे लोगों की भलाई हो सके। इन भावनाओं को प्रजा तक पहुँचाने के लिए उसने इन्हें चट्टानों पर खुदवाया।

''राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग को जीता।''

''इससे मुझे बहुत दुख हुआ। यह क्यों? जब एक आजाद जनपद हराया जाता है, वहाँ लाखों लोग मारे जाते हैं और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं। वहाँ रहनेवाले ब्राह्मण–भिक्षु मारे जाते हैं।''

'' ऐसे किसान जो अपने बंधु– मित्रों, दास और मजदूरों से नम्रतापूर्ण बर्ताव करते हैं – वे भी युद्ध में मारे जाते हैं और अपने प्रियजनों से बिछुड़ जाते हैं।''

'' इस तरह हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं दुखी होता हूँ। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।''

''मैं मानता हूँ कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूँ ताकि मेरे पुत्र और पोते भी युद्ध करने की बात न सोचें।''

अशोक का धम्म

अशोक के धम्म में न तो कोई देवी–देवता थे और न ही उसमें कोई व्रत, उपवास या यज्ञ करने की बात कही गई थी। धम्म का पालन करने के लिए पूजा आदि की बात भी नहीं कही गई थी।

चित्र–7.3 स्तंभ लेख

आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि व्रत–उपवास नहीं, देवी–देवताओं की पूजा नहीं तो धम्म कैसा। दरअसल कलिंग युद्ध के भंयकर विनाश ने अशोक की सोच को काफी बदल दिया था।

अशोक का व्यवहार अपनी प्रजा के लिये वैसा ही था जैसा पिता का अपनी संतान के प्रति होता है। अशोक जब लोगों को झूठ बोलते, गलत आचरण करते, मूक प्राणियों के प्रति हिंसा करते और धर्म के नाम पर आपस में संघर्ष करते देखता तो उसे बहुत दुख होता। उसने इन बातों पर विचार किया तो पाया कि राजा होने के कारण उसकी यह जिम्मेदारी है कि प्रजा को सही राह दिखाए। इस काम के लिए उसने धर्ममहामात्र नामक अधिकारी रखे जो गाँव–गाँव, नगर–नगर के दौरे कर प्रजा को सही

व्यवहार की बातें बताते थे। दूर–दराज के क्षेत्रों में यही बातें उसने पत्थर के स्तंभों (खंभो) और चट्टानों पर खुदवाए।

1. ''यहाँ किसी जीव को मारा नहीं जाएगा। उसकी बलि नहीं चढाई जाएगी। पहले राजा की रसोई में हजारों जानवर रोज मांस के लिए मारे जाते थे। पर अब सिर्फ तीन जानवर मारे जाते हैं, दो मोर और एक हिरण। ये तीन जानवर भी भविष्य में नहीं मारे जाएँगे।''

2. ''अपने माता और पिता की आज्ञा मानना अच्छा है। मित्रों, संबंधियों और श्रमणों के प्रति उदार भाव रखना अच्छा है। थोड़ा ही व्यय और थोड़ा संचय करना अच्छा है।''

3. ''लोग विभिन्न अवसरों पर तरह तरह के संस्कार करते हैं। ''ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलनेवाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलते हैं। वे क्या हैं? गुलामों और मजदूरों से नम्रतापूर्ण व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव–जंतुओं से संयम से व्यवहार करना, ब्राह्मणों और भिक्षुओं को दान देना, आदि।''

4. "अपने धर्म के प्रचार में संयम से काम लेना चाहिए। अपने धर्म के गुणों को बढ़ा–चढ़ा कर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों ही गलत है। हर तरह से, हर अवसर पर, दूसरे संप्रदायों का आदर करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति अपने संप्रदाय की उन्नति और दूसरे संप्रदायों का उपकार करता है।"

अशोक ने ये संदेश लोगों की बोलचाल की भाषा पाली में खुदवाए।

अशोक ने अपने विचार प्राकृत भाषा में ही क्यों खुदवाए ?

अशोक की शासन–व्यवस्था

भारत के मानचित्र 7.1 में आपने देखा कि अशोक का राज्य बहुत विशाल था। उसकी राजधानी थी पाटलिपुत्र। इतने बड़े राज्य पर शासन करना आसान नहीं था। शासन में उसकी सहायता के लिये योग्य लोगों का एक दल था जिसे मंत्रिपरिषद कहा जाता था।

विशाल राज्य की देखभाल के लिए उसे चार प्रांतों में बाँटा गया था।

उत्तर में तक्षशिला, दक्षिण में सुवर्णगिरी, पूर्व में तोसली और पश्चिम में उज्जयिनी। इन नगरों और उसके आसपास के इलाकों की देखभाल राजकुमार करते थे। अनेक अधिकारी और कर्मचारी उन्हें सहयोग देते थे। ये कर्मचारी गाँवों और शहरों में व्यवस्था को सँभालते थे। किसानों, कारीगरों व व्यापारियों से लगान वसूल करते और राजा की आज्ञा का पालन न करने वालों को दंड देते थे।

उनके अलावा कुछ बड़े अधिकारी भी थे जिन्हें महामात्र कहा जाता था। वे राज्यभर का दौरा करते और शासन का काम देखते थे। इतना ही नहीं प्रजा के सुख–दुख को जानने तथा अधिकारियों के काम पर नजर रखने के लिए अशोक स्वयं राज्य में दूर–दूर के गाँवों का दौरा करते थे। उन्होंने लोगों की भलाई के लिये कई सड़कें बनवाई। उनके दोनों तरफ छायादार व फलदार वृक्ष लगवाए। अस्पताल व धर्मशालाएँ बनवाई और कुएँ खुदवाए थे।

क्या आपको इतिहास का कोई और राजा याद आ रहा है जिसने अशोक की तरह अपनी प्रजा को सुख पहुँचाने का प्रयत्न किया हो ?

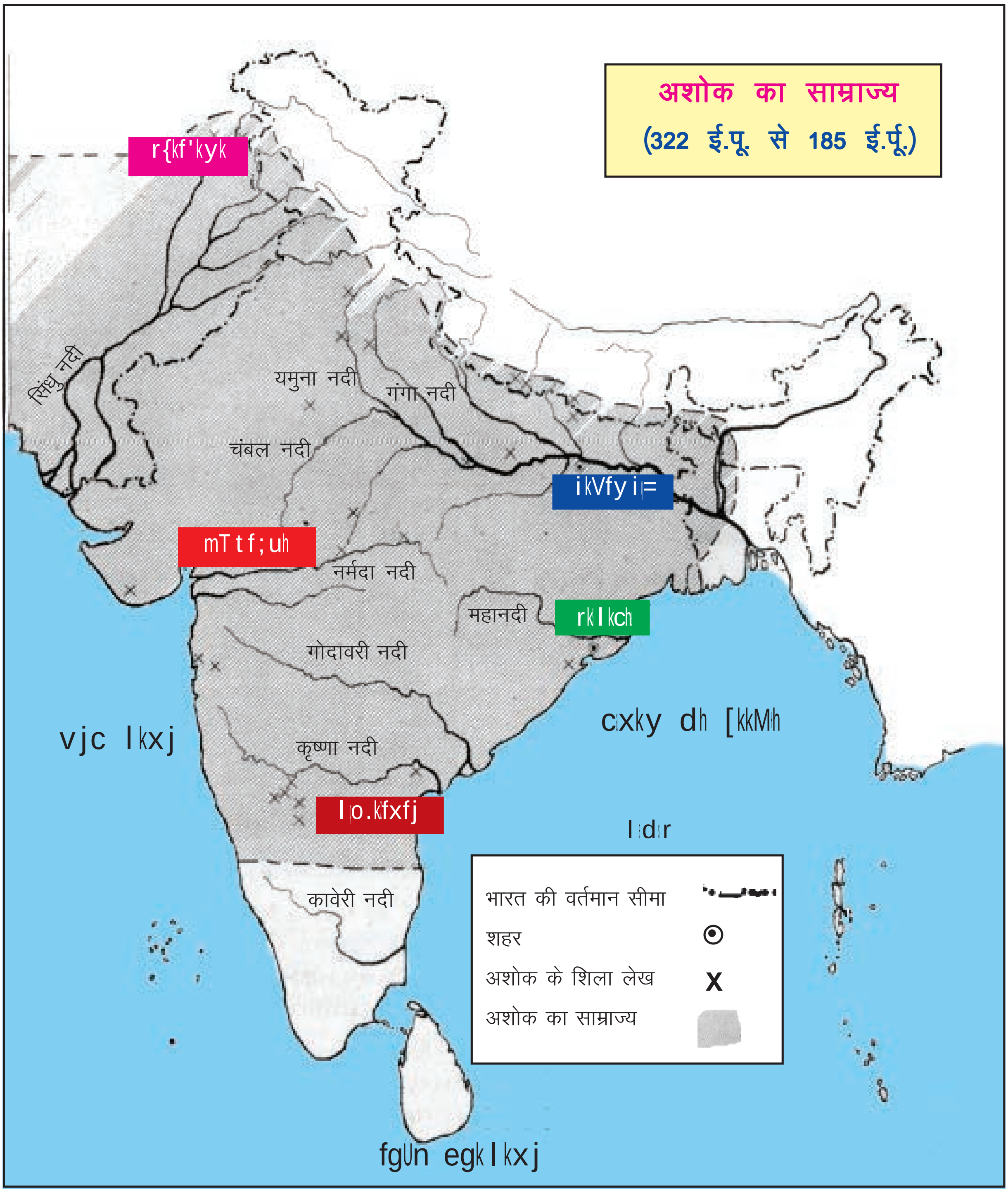

मानचित्र 7-1

यद्यपि अशोक बौद्ध धर्म को माननेवाला था तथापि वह सभी धर्मो का सम्मान करता था और उन्हें दान भी देता था। वह प्रजा से भी कहता था, कि वे सभी धर्मो की बातें सुने और उनका सम्मान करें।

अशोक कलाकारों को भी आगे बढ़ने में मदद करता था। आज भारत–सरकार के नोटों और कागजातों पर चार सिंहवाली जो मूर्ति दिखाई देती हैं वह अशोक के समय की ही है। सारनाथ और दूसरी जगहों से प्राप्त स्तंभ और मूर्तियाँ कला के ऐसे नमूने हैं, जो हमें आज भी अशोक की याद दिलाते हैं।

बच्चों! आपको याद होगा कि पिछली कक्षा में आपने हमारे राष्ट्रीय प्रतीक चिह्नों के बारे में पढ़ा था। जिसमें चार सिंहवाली मूर्ति में सिंह के अतिरिक्त बैल, घोड़ा और चौबीस तीलियों या धारियों वाली चक्र की आकृति बनी हुई है। सिंह को शक्ति का, बैल को श्रम का, घोड़े को ऊर्जा और गति का और चक्र को निरंतर कार्य और प्रगति का प्रतीक माना गया है। चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा है जिसका अर्थ है–केवल सत्य की जय होती है।

अशोक के बाद मौर्य वंश करीब 50 वर्षों तक और चला। उसके बाद उसका स्थान अनेक छोटे–छोटे राज्यों ने ले लिया।

> राजा अशोक के दया, प्रेम, शांति, और सभी धर्मो के प्रति सम्मान की भावना के कारण उसके सारनाथ स्तंभ–शीर्ष को हमारा राष्ट्रीय–चिह्न माना गया है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) जोड़ी बनाइए–

क		ख
सेल्यूकस	–	मगध का शासक
बिंदुसार	–	पाली भाषा
धनानंद	–	अशोक का पिता
अशोक के शिलालेख	–	यूनानी सेनापति

I1CDHM

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. चंद्रगुप्त मौर्य ने किस प्रकार विशाल राज्य की स्थापना की ?
2. युद्ध न करने का संकल्प अशोक ने क्यों किया ?
3. अशोक ने राज्य की व्यवस्था को भलीभाँति चलाने के लिये क्या काम किए ?
4. अशोक के 'धम्म' के बारे में आप क्या सोचते हैं ? अपनी भाषा में लिखिए।
5. भारत के मानचित्र में अशोक के राज्यों को चिह्नांकित कीजिए।
6. अशोक अपने राज्य के आदेश जनता तक कैसे पहुँचाता था? पता लगाइए।

(स) आइए कुछ नया करें –

उन वस्तुओं की सूची बनाइए जिन पर आपको अशोक–चिह्न मिलते हैं।

अब बताइए अशोक–चिह्न में आपको क्या–क्या दिखाई देता है।

अध्याय 8

ICQLY7

fon'kk ls 0;kikj vkj lid

(ईसा पूर्व 100 से 300 ईस्वी)

चित्र–8.1

एक दिन स्कूल लगने से पहले अंजली और राजू बाजार गए। किताब की दुकान से कापी खरीदकर बाहर आए तो उनकी शिक्षिका मिली। वे तीनों साथ–साथ शाला की ओर चल पड़े।

शिक्षिका ने उनसे पूछा, ''तुम दोनों के बैग तो बहुत अच्छे हैं। इन्हें कहां से खरीदा ?''

अंजली ने बताया– ''दीदी, इन्हें हमारे पिता जी ने रायपुर के किसी दुकान से खरीदा था।''

शिक्षिका ने बैग को ध्यान से देखा और कहा– ''देखो, इसमें बनानेवाली कंपनी का लेबल लगा है। अरे ! यह तो कोलकता से बनकर आया है।'' यह बात सुनकर अंजली और राजू को भी आश्चर्य हुआ। शिक्षिका ने दुकानों की ओर इशारा करके बताया, ''वो देखो कितनी सारी दुकानें हैं। यहाँ कितना सारा सामान बिकता है। यह सामान दूर–दराज़ के गाँव व शहरों में रहनेवाले लोग बनाते हैं और व्यापारी इन्हें यहाँ लाकर बेचते हैं।'' राजू ने पूछा– ''दीदी, क्या यहाँ विदेशों में बने सामान भी आते हैं।''

चित्र–8.2 हिंद यवन राजाओं के सिक्कें

शिक्षिका ने बताया, हाँ, यहाँ तो न सिर्फ अपने देश में बने सामान बिकते हैं बल्कि चीन, जापान, अमरीका, अफ्रीका और यूरोप में बने सामान भी बिकते हैं।

अंजली को इतिहास का पाठ याद आया तो उसने पूछा– ''क्या सम्राट अशोक के समय भी व्यापारी दूसरे देशों से व्यापार करते थे ?'' इतने में स्कूल आ गया और शिक्षिका ने कहा, ''चलो, इस बात पर हम कक्षा में सब के साथ चर्चा करेंगे।''

शिक्षिका बताने लगीं– अशोक के समय में अपने देश में बड़े–बड़े व्यापारी होते थे। उन्हें ''श्रेष्ठी'' या "सेट्ठी" कहा जाता था, इसी शब्द से ''सेठ'' शब्द बना है। ये लोग दूर–दूर तक जाकर वहाँ की चीजें खरीदकर लाते थे। उदाहरण के लिए दक्षिण प्रांतों से वे मोती, सोना, कीमती पत्थर, चंदन, इमारती लकड़ी, जानवरों की खाल आदि लाते थे और वहाँ वे सुंदर बर्तन, महंगे कपड़े, ताँबा आदि बेचते थे।

अब आप ही सोचकर बताइए उन दिनों न तो रेलगाड़ी थी न मोटरगाड़ी, फिर सामान एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाते होंगे ?

उन दिनों कई व्यापारी एक–साथ व्यापार करने जाते थे। उनके साथ उनके गाड़ी–बैल,गधे, घोड़े, ऊँट सब पर सामान लदे होते थे। गाँव या जंगलों से जब वे गुजरते थे तो वे दिन में चलते और रात को पड़ाव डालकर रुक जाते थे। इसके विपरीत रेगिस्तानों को पार करते समय वे दिन में आराम करते और रात को चलते थे। रास्ते में उन्हें बाढ़, तूफान, डाकू आदि खतरों से बचकर चलना पड़ता था। रास्ते में सराय या बौद्ध भिक्षुओं के मठ भी होते थे जिनमें वे ठहरते थे। इस प्रकार वे किसी शहर के बाजार में जाकर अपना सामान बेचते थे और वहाँ की सस्ती व अच्छी चीज़ें खरीद लेते थे। कुछ अन्य व्यापारी जहाज़ों से समुद्री–यात्रा करके इंडोनेशिया, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका आदि देशों में पहुँचते थे।''

''उन दिनों भी धनी लोग दूर दराज़ की चीजें ऊँची कीमतों में खरीदते थे। इस कारण सेट्ठियों को बहुत मुनाफा होता था। इन पैसों से वे अपने लिए आरामदेह घर बनवाते थे। साथ ही वे देवताओं के लिए मंदिर बनवाते थे। वे बौद्ध–स्तूपों व मठों को दान भी देते थे।''

अंजली ने शिक्षिका से पुनः सवाल किया– ''दीदी, क्या अशोक के समय के बाद भी यहाँ के व्यापारी दूसरे देशों से व्यापार करते थे ?''

शिक्षिका ने जवाब दिया, ''हाँ! राजा अशोक के समय के बाद भी यह व्यापार होता था। उसके बाद विदेशों से व्यापार और तेजी से बढ़ता गया। आप लोगों ने पिछले पाठ में पढ़ा है कि कैसे यूनान व ईरान के राजाओं ने भारत के उत्तर–पश्चिम में अपना राज्य बनाया था। उनके दूत व व्यापारी भारत आने लगे और भारतीय व्यापारी भी वहाँ जाने लगे।''

''जब मौर्य–साम्राज्य का अंत हुआ तो उसकी जगह शुंग–वंश के राजा मगध पर शासन करने लगे और दक्षिण में सातवाहन–राजवंश आया। इस बीच कई यूनानी राजाओं ने भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में अपना राज्य बनाया। इनमें सबसे प्रमुख राजवंश थे–शक और कुषाण। कुषाण–वंश का प्रमुख राजा कनिष्क था। इसका राज्य मध्य–एशिया के आमू दरिया से लेकर भारत के मथुरा तक फैला था। उसके बाद मध्य–एशिया के सूखे इलाकों से आए कबीलों के राजाओं ने उत्तर–पश्चिम में अपना राज्य बनाया। उनका राज्य काफी विशाल था जिसमें भारत, अफगानिस्तान, ईरान, उजबेकिस्तान आदि देशों के हिस्से थे। इस कारण भी भारत और इन देशों के बीच व्यापार बढ़ा। भारतीय व्यापारी इन सब देशों में बेरोक टोक आ–जा सकते थे। भिक्षुओं व श्रमणों ने वहाँ अपने मठ भी स्थापित किए थे।''

''चीन से मध्य–एशिया होते हुए भूमध्य सागर तक एक रास्ता जाता था। उस रास्ते से चीन के रेशम का व्यापार होता था। इसलिए इसको रेशमी (रेशम) मार्ग या "सिल्क रूट" कहते थे। इस रास्ते में भारतीय व्यापारियो के ठिकानों व बौद्ध–बिहारों के अवशेष मिले हैं। इससे पता चलता है कि यहां के लोग व्यापार व धर्म–प्रचार के लिए दूर–दूर तक जाते थे।''

''लेकिन भारतीय व्यापारी यहीं नहीं रुके। वे और पश्चिम में मिस्र के सिकंदरिया, यूनान और रोम तक गए। आमतौर पर भारतीय व्यापारी समुद्री मार्ग से अपना सामान सिकंदरिया ले जाते थे, जहाँ से मिस्र और यूरोप के व्यापारी उन्हें अपने–अपने देश ले जाते थे।''

मानचित्र 8.1 में रेशमी मार्ग, सिकंदरिया, यूनान, ईरान और इराक को पहचानिए और चर्चा कीजिए ।

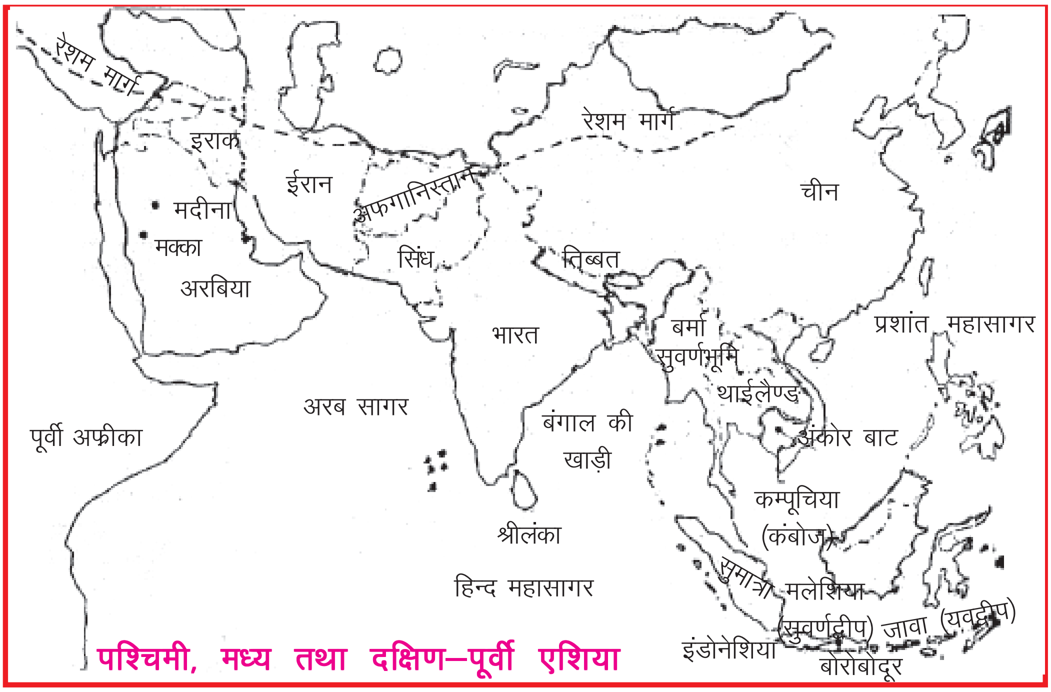

पश्चिमी, मध्य तथा दक्षिण–पूर्वी एशिया

ekufp= 8-1

कई बच्चों ने पूछा – "भारतीय व्यापारी उन देशों में क्या–क्या बेचते थे और उनसे क्या–क्या खरीदते थे ?"

शिक्षिका ने जवाब दिया –"हमारे देश में तरह–तरह के मसाले होते हैं, जैसे – कालीमिर्च, इलायची, दालचीनी आदि। ये यूरोप में नहीं होते थे । लेकिन वहाँ के भोजन में इनका काफी उपयोग था। भारतीय व्यापारी इन्हें वहाँ ले जाते थे। इसके अलावा हमारे देश के सुंदर कपड़े, चंदन, कीमती पत्थरों के आभूषण, हाथी, मोर, बंदर इत्यादि की उन देशों में बड़ी माँग थी। इन चीजों के बदले वहाँ से सोना, मूँगा, आदि भारत मँगवाया जाता था।"

पता कीजिए आजकल हमारे देश से बाहर क्या–क्या बिकने जाता है ?

अब राजू ने एक सवाल किया – "क्या उन देशों के व्यापारी भी भारत आते थे ?"

शिक्षिका ने समझाया –हाँ, भारत में कई जगह रोम के व्यापारियों की बस्तियाँ थीं। इनमें वे आकर रहते थे और व्यापार करते थे। जैसे यूनान, ईरान व मध्य–एशिया के लोगों ने भारत में राज्य बनाया, वैसे ही कई भारतीयों ने भी दक्षिण–पूर्वी एशिया के श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया आदि देशों में राज्य बनाया।

विदेशों से संपर्क का प्रभाव

आपने पिछले अंश में पढ़ा कि भारत के लोगों का दूसरे देशों के लोगो से कई तरह से संपर्क हुआ जैसे, एक–दूसरे के यहाँ राज्य स्थापित करके, व्यापार करके, धर्म प्रचार द्वारा आदि। इसी प्रकार यूनान व मध्य–एशिया के कई लोग भारत आकर बस गए। कई भारतीय भी दूसरे देशों में जाकर बस गए। इन सब बातों का लोगों के रहन–सहन व सोच–विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये प्रभाव क्या थे, इनके बारे में जानें–

सिक्के

चित्र–8.3 कनिष्क के सिक्कों की बनावट

व्यापार में सोने–चाँदी के सिक्कों का बहुत महत्व था। अजातशत्रु और अशोक के समय के सिक्के चाँदी या ताँबे के टुकड़ों पर एक तरह के निशानों ठप्पा (आहत) लगाकर बनाए जाते थे।

जबकि हिंद–यूनानी राजाओं के सिक्के साँचों में ढलते थे। इनमें राजा की तस्वीर और उसका नाम लिखा होता था। इनके प्रभाव में आकर भारतीय राजा भी इसी तरह के सिक्के ढालने लगे।

यहाँ दिए गए सिक्कों को पहचानिए कौन–से पुराने ठप्पेवाले सिक्के हैं और कौन–से ढाले गए सिक्के हैं? आजकल के सिक्कों के बारे मे अनुमान लगाइए।

मूर्तिकला

उन दिनों गांधार और मथुरा में मूर्तिकला का काफी विकास हुआ। गांधार भारत के उत्तर–पश्चिम में है। यह हिस्सा यूनानी व कुषाण–साम्राज्य में था। इस कारण यहाँ भारतीय और यूनानी कला का मेल–मिलाप हुआ। गांधार में बनी मूर्तियों में हम यूनानी मूर्तिकला के प्रभाव को देख सकते हैं। इन मूर्तियों में चुन्नटों की बनावट पर जोर है।

लेकिन मथुरा में बनी मूर्तियों में ये प्रभाव नहीं दिखता। मथुरा के कलाकार मूर्तियों की हृष्ट–पुष्ट आकृति पर ज्यादा जोर देते हैं और चुन्नटों पर कम। इन्हें आप चित्र 8.4 एवं 8.5 के बीच तुलना करके भी समझ सकते हैं।

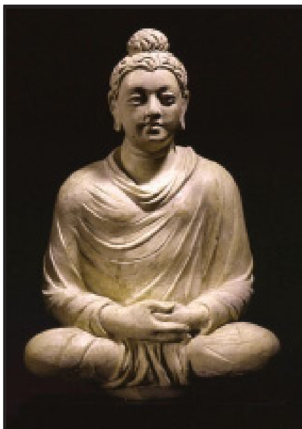

चित्र–8.4. बुद्ध गांधार शैली

चित्र–8.5. महावीर स्वामी मथुरा शैली

ICZHZU

धर्म और दर्शन

रोमन–साम्राज्य और यूनान से संपर्क के कारण गणित, ज्योतिष और खगोलशास्त्र की जानकारियों का आदान–प्रदान हुआ। इन विषयों से संबंधित यूनानी–ग्रंथों का अनुवाद संस्कृत में हुआ। हफ्ते के सात दिन, बारह–राशियाँ आदि बातें भारतीय विद्वानों ने उनसे अपनाया। जबकि उन्होंने शून्य, दशमलव–चिहन आदि हमसे अपनाया।

यूनानी यात्रियों ने भारतीय धर्म व दर्शन की जानकारियाँ अपने भूगोल और इतिहास की किताबों में लिखा। भारत से जो बौद्ध–भिक्षु व श्रमण उन दिनों चीन, मध्य–एशिया व दक्षिण–पूर्वी एशिया गए थे। उन्होंने वहाँ के लोगों की सोच (दर्शन) और धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशो में भी भारतीय मंदिरो की तरह भव्य मंदिरो का निर्माण हुआ, जैसे–कंबोडिया में 'अंकोरवाट मंदिर'। जावा में 'बोरोबोदूर' आज भी उस क्षेत्र का सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर है। इसी प्रकार इंडोनेशिया में रामायण की कथा बहुत लोकप्रिय है।

इन्हीं दिनों भारत में चिकित्सा–शास्त्र काफी विकसित हुआ। इस पर दो विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ–"चरक–संहिता" और "सुश्रुत–संहिता" लिखे गए। इस प्रकार यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल था।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) fn, x, 'kCnk d }kjk [kkyh LFkkuk dh ifr dhft,&

(सांचे / लेबल / चिकित्सा / गांधार)

1. सुश्रुत संहिता में ——— की जानकारी है।
2. सिक्के ——— में ढ़लते थे।
3. भारत के उत्तर पश्चिम में ——— है।
4. सामान बनानेवाली कंपनी पहचान के लिए ——— लगाते हैं।

(ब) ,d&,d okD; e mÙkj fyf[k,&

1. भारतीय व्यापारी किस मार्ग से अपना माल सिकंदरिया ले जाते थे?
2. कुषाण वंश के प्रमुख राजा का नाम बताइए।
3. भारतीयों का व्यापारिक संबंध किन–किन देशों से अधिक था?
4. भारत में पैदा होनेवाले मसालों के नाम बताइए।

(स) bu i'uk d mÙkj nhft,&

1. रेशमी मार्ग किसे कहते हैं ?
2. व्यापारी व्यापार के अलावा और क्या–क्या कार्य करते थे।
3. उन दिनों विदेशों में किन–किन चीजों की अधिक माँग थी।
4. गांधार शैली की मूर्तियों की विशेषताएँ बताइए।
5. दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशो में भारतीय धर्म और दर्शन के प्रभाव का उदाहरण बताइए।
6. सिक्के क्यों बनाए गए थे ?
7. व्यापारियों को सेट्ठी क्यों कहा जाता था ?

(द) ;kX;rk foLrkj &

अपने राज्य के मुख्य संग्रहालय में स्थित बौद्ध मूर्तियों का अवलोकन कीजिए तथा उनकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अध्याय 9

x|r dky

(300 ईस्वी से 500 ईस्वी)

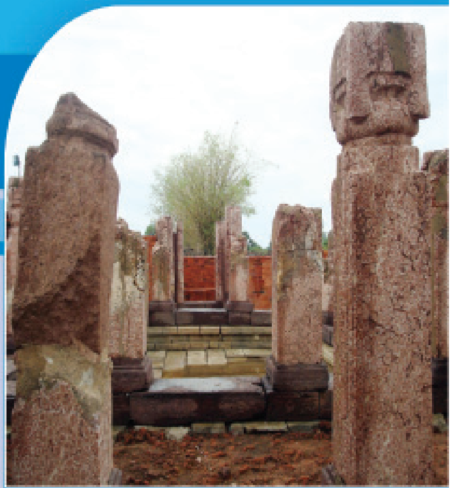

चित्र–9.1

इस पाठ में हम आज से लगभग 1700 साल पहले की बातें पढ़ेंगे। उस समय तक आते–आते भारत के हर क्षेत्र में लोग खेती करने लगे थे। गाँव सघन होने लगे थे और उनके बीच कई छोटे बड़े शहर भी बस गए थे। इसके साथ इस समय पूरे भारत में अनेक छोटे–छोटे राज्य भी बन गए थे। इन राज्यों का अपना–अपना राजवंश और राजा होने लगा था।

इस काल में छत्तीसगढ़ दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था। यहाँ पर श्रीपुर(सिरपुर) जैसे प्रमुख वैभवशाली नगर का उदय हो चुका था। दक्षिण कोसल के अंतर्गत वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनाँदगाँव और उड़ीसा राज्य के संबलपुर जिले आते थे।

इस समय इस इलाके का राजा महेंद्र भी समुद्रगुप्त से पराजित हुआ। समुद्रगुप्त ने महेन्द्र से वार्षिक कर लेकर उसका राज्य वापस कर दिया। उसे स्वतंत्र रुप से राज्य करने दिया।

1. समुद्रगुप्त ने महेन्द्र को उसका राज्य क्यों लौटाया होगा ?
2. दक्षिण कोसल के कुछ प्रमुख स्थानों के नाम बताइए।

समुद्रगुप्त

इस समय मगध (वर्तमान बिहार राज्य) में गुप्त वंश के राजाओं का शासन था। समुद्रगुप्त इसी राजवंश का एक महत्वपूर्ण राजा था। उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी (इसे आज पटना कहते हैं)। उन दिनों शक्तिशाली राजा दूसरे राज्यों पर हमला करते थे। वे दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिलाना चाहते थे ताकि उनका अपना राज्य बड़ा हो और उन्हें ज्यादा–से–ज्यादा आमदनी हो। समुद्रगुप्त भी यही चाहता था।

समुद्रगुप्त की प्रशंसा इलाहाबाद के एक स्तंभ (खम्भे) पर शिलालेख के रूप में खुदी हुई है। उस शिलालेख के अनुसार समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त (उत्तर भारत), आटविक राज्य (वनांचल) तथा दक्षिणापथ (दक्षिण भारत) के कई राज्यों को हराया। दक्षिणापथ में जिन राज्यों को उसने हराया उनमें से दो राज्य वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य में थे–दक्षिण कोसल, जिसकी राजधानी सिरपुर थी और महाकांतार, जो वर्तमान बस्तर और उड़ीसा क्षेत्र में था।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं को हराकर उनके राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। इस तरह उसका राज्य बहुत बड़ा हो गया और वह उत्तर भारत का सबसे बड़ा राजा बन गया। लेकिन उसने दक्षिणापथ के राजाओं को हराने के बाद भी उनका राज्य उन्हें लौटा दिया।

चित्र–9.2 सिरपुर से प्राप्त अवशेष

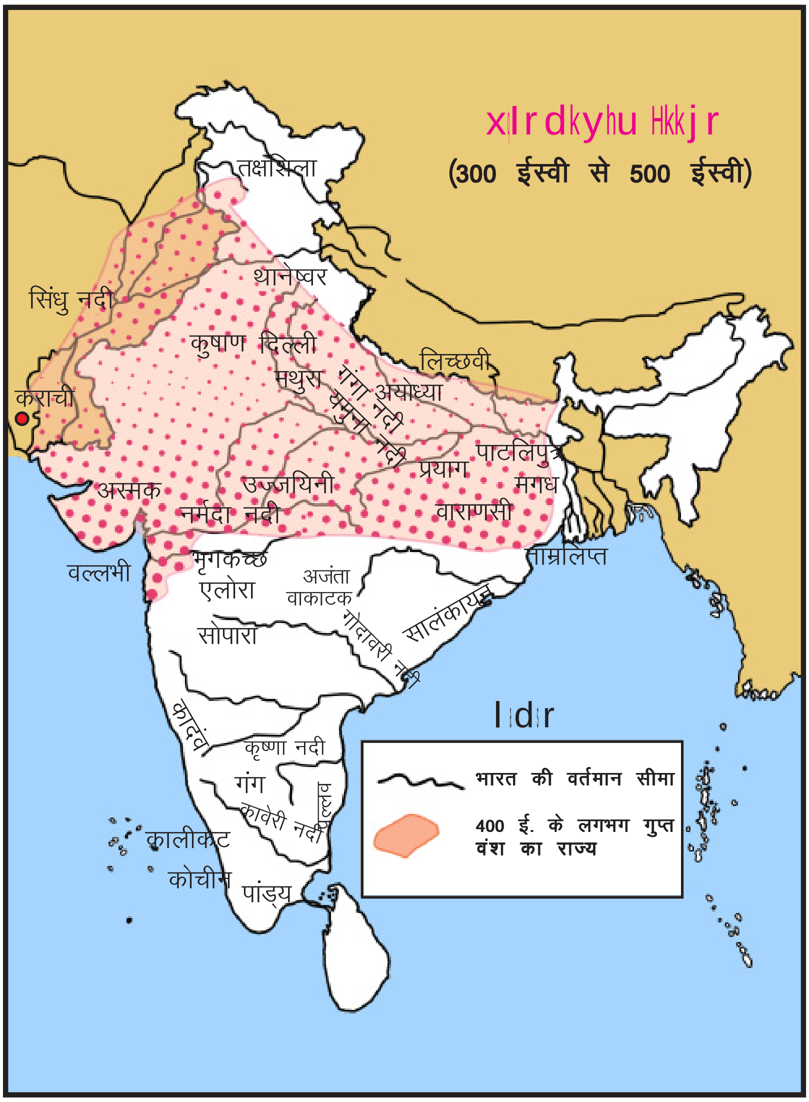

EkkUkfPk«k 9-1

भारतवर्ष के मानचित्र 9.1 में उत्तर तथा दक्षिण के राज्यों को पहचानिए और बताइए कि समुद्रगुप्त का राज्य कहाँ–से–कहाँ तक था और उसकी राजधानी कहाँ पर थी ?

कक्षा में चर्चा कीजिए कि समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राज्यों को अपने राज्य में क्यों मिला लिया किन्तु उसने दक्षिण के राज्यों को नहीं मिलाया।

समुद्रगुप्त न केवल योद्धा था बल्कि कलाप्रेमी भी था। उसके समय में ढाले गए सोने के कुछ सिक्कों में उसे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। समुद्रगुप्त के बाद उसका बेटा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य राजा बना। उसने भी उत्तर भारत में अपने राज्य का विस्तार किया उसने दक्षिण के कुछ महत्वपूर्ण राजाओं से दोस्ती की। उसका राज्य बंगाल से गुजरात तक फैला हुआ था।

गुप्त राज्य कई प्रांत या भुक्ति में बँटा था और हरेक प्रांत कई जिलों या विषयों में बँटा था। इनका प्रशासन वहीं के स्थानीय लोग करते थे और राजा केवल कुछ महत्वपूर्ण बातों पर उन्हें आज्ञा देता था। गाँव का प्रशासन गाँव के महत्वपूर्ण लोगों की सभा करती थी। इस प्रकार गुप्त साम्राज्य के प्रशासन में स्थानीय लोगों की अधिक भूमिका थी।

इन राजाओं के अतिरिक्त गुप्तवंश में अन्य कई महत्वपूर्ण राजा हुए जिनमें कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त प्रसिद्ध हैं। इस वंश का शासन लगभग 500 ई. तक चलता रहा। भारतीय विज्ञान, कला और धर्म की प्रगति के लिए यह काल बहुत महत्वपूर्ण है। इस काल में लोगों के जीवन में भी बहुत बदलाव आया।

XkIRkdkYk Ek; YkkXkk; dk TkhOkUk

उन दिनों लोगों का जीवन कैसा था? यह हमें कैसे पता चल सकता है? उन दिनों बहुत सी पुस्तकें लिखी गईं– जो धर्म, कहानी, नाटक और विज्ञान से संबंधित थीं। उनको पढ़कर हम उन लोगों के बारे में बहुत कुछ जान पाते हैं। इसके अलावा उस समय कई शिलालेख खुदवाए गए थे। उनसे भी हमें कई जानकारियाँ मिलती हैं। उन दिनों चीन से कई यात्री भारत आए थे। वे लोग बौद्ध धर्म को मानते थे। इसलिए बौद्ध पुस्तकों को पढ़ने और बुद्ध से संबंधित स्थानों को देखने के लिए भारत आते थे। उनमें से एक थे, फाह्यान जिन्होंने अपनी यात्रा के अनुभवों का विवरण अपनी पुस्तक में लिखा है। उससे भी हमें भारत के बारे में कई बातों की जानकारी मिलती है।

फाह्यान ने लिखा है – यहाँ के लोग धनी और सुखी हैं। उन पर लगान का अधिक बोझ नहीं है न ही उन पर शासकीय रोक–टोक है। यहाँ के लोग किसी जीव की हत्या नहीं करते हैं, शराब नहीं पीते हैं। प्याज या लहसुन को केवल चांडाल खाते हैं। बौद्धों के कई मठ हैं जिन्हें घर, बगीचे, कृषक और बैल सहित खेत दिए गए हैं।

भारत में मठों का बहुत सम्मान था। मठों को खेतिहर जमीन दान में दी जाती थी। मठों में रहने वाले साधु खुद अपने खेतों में काम करते थे। भारत में लोग अहिंसा में विश्वास करते थे। भारतीय लोग बहुत बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन करते थे। भारतीय लोग शाकाहारी भोजन को पसंद करते थे।

भारत में ही लिखी गई दूसरी पुस्तकों से पता चलता है कि फाह्यान के कुछ कथन पूरी तरह सही नहीं हैं। दूसरे ग्रंथों से पता चलता है कि समाज में जातिप्रथा और छुआछूत का भेदभाव था।

शहरों में ऊँचे वर्ग के लोग सुसंस्कृत जीवन बिताते थे। वे कविता, नाटक, संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्तिकला में विशेष रुचि रखते थे। उन्हीं दिनों उच्च वर्गों की महिलाओं पर कई तरह के रोक लगने लगे। बाल विवाह (छोटी उम्र में शादी करना) और सतीप्रथा (विधवाओं को मरे हुए पति के साथ जलाना) आदि कुरीतियाँ शुरू हो रही थी। शहरों में गरीबों की हालत भी कठिन होती जा रही थी। उन दिनों दूर देशों से व्यापार कम हो रहा था और इसके कारण उद्योग धंधे मंद पड़ रहे थे। लोग काम के अभाव में शहर छोड़कर गाँव में जाकर बसने लगे। इससे बड़े शहर छोटे होने लगे थे।

उस समय के शिलालेखों व पुस्तकों से यह भी पता चलता है कि राजा, ब्राह्मणों, मठों व बौद्ध विहारों को गाँव–के–गाँव दान में दे देते थे। दान प्राप्त करनेवाले लोग उनमें किसानों से खेती करवाते थे और उससे मिली आय से अपना काम चलाते थे।

1. गुप्त काल में शहरों में काम का अभाव क्यों हो रहा था ?
2. क्या आज भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर अधिक रोक–टोक है ?
3. राजा ब्राह्मणों व मठों को दान में पैसे न देकर गाँव क्यों दिए होंगे ?

धर्म

गुप्त काल कई धार्मिक विचारों के मेलजोल और परिवर्तन का समय था। वैदिक धर्म ने बौद्ध व जैन धर्मों की कई बातों को अपनाया। अब वैदिक धर्म में भी अहिंसा पर जोर दिया जाने लगा। वैदिक धर्म ने कई छोटे संप्रदायों की बातों को अपनाया। जैसे शिव, देवी, विष्णु की पूजा आदि। अब पुराने वैदिक देवता जैसे इन्द्र, अग्नि या वरुण को लोग कम महत्व देने लगे थे। अब यज्ञों की जगह देवी–देवताओं की मूर्तियाँ व मंदिर बनाकर पूजा–अर्चना करना लोकप्रिय होने लगा। पुराने समय के यज्ञ आदि खर्चीले धार्मिक रिवाजों की जगह पूजा, व्रत और दान की सरल विधियों के प्रचलन से गरीब तबके के लोग भी धार्मिक क्रियाओं में भाग लेने लगे। गुप्त राजा खुद तो वैष्णव धर्म को मानते थे किन्तु उनके शासन काल में सभी लोगों को अपना–अपना धर्म मानने की स्वतंत्रता थी।

विज्ञान

गुप्त काल के सबसे प्रमुख खगोलशास्त्री और गणित के विद्वान आर्यभट्ट थे। आर्यभट्ट ने सन् 499ई. में "आर्यभट्टीयम्" की रचना की, जिसमें उन्होंने कई जटिल गणितीय सवालों का निदान दिया। उन्होंने यह भी बताया कि पृथ्वी गेंद की तरह गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। ग्रहण के बारे में आर्यभट्ट ने कहा कि यह पृथ्वी और चंद्रमा की परछाईं के कारण होता है न कि राहु–केतु के निगलने से। इन बातों को उनके समय में कम लोगों ने ही स्वीकार किया था।

इस काल के एक और प्रमुख वैज्ञानिक वराहमिहिर थे। इन्होंने खगोलशास्त्र और फलित ज्योतिष (भविष्य बताने का काम) को जोड़ने का प्रयास किया। आधुनिक विज्ञान ने पृथ्वी के संबंध में जानकारी के लिए आर्यभट्ट को ही सही सिद्ध किया है। इस समय चिकित्सा, खासकर पशुओं की चिकित्सा और खेती पर कई पुस्तकें लिखी गईं।

लोगों ने आर्यभट्ट की बातों को क्यों नहीं माना होगा ?

साहित्य

गुप्त काल में संस्कृत भाषा में उच्च कोटि के साहित्य रचे गए। संस्कृत साहित्य के महान कवि जैसे कालिदास, भारवि, शूद्रक, माघ इसी काल में हुए थे। कहा जाता है कि विष्णुशर्मा ने पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियाँ भी इसी काल में लिखी थी तथा नारायण पंडित ने हितोपदेश की रचना की थी। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबार अपने नौ रत्नों के लिए प्रसिद्ध था, इनमें सबसे प्रमुख कालिदास थे। कालिदास की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं मेघदूतम् और कुमारसंभवम्। उनका अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक विश्वप्रसिद्ध है। इस समय के साहित्य में प्रमुख रूप से मनुष्यों की भावनाओं व समस्याओं का व्यापक वर्णन है।

कक्षा में पंचतंत्र की कुछ कहानियाँ सुनाइए।

चित्रकला एवं वास्तुकला

साहित्य तथा विज्ञान की तरह ही इस काल में विभिन्न प्रकार की कलाएँ जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्यकला, आदि के क्षेत्र में प्रगति हुई। अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्र इस युग की चित्रकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। ये चित्र महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित कहानियों पर आधारित हैं। ये इतनी कुशलता से बनाए गए हैं कि अभी भी सजीव दिखाई पड़ते हैं।

दीवारों पर बनाए गए चित्र को भित्ति–चित्र कहते हैं।

चित्र–9.3 भीतरगाँव में बना विष्णु मंदिर, कानपुर (उ.प्र.)

चित्रकला के साथ–साथ इस युग में अनेक मंदिर, गुफा, चैत्य, विहार, स्तूप आदि बनाए गए। इस काल में मूर्तिकला के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति हुई। इस समय बड़ी संख्या में विष्णु, शिव, बुद्ध और जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों का निर्माण हुआ। इस समय की मूर्तियों में भावनाओं को व्यक्त करने की शुरुआत हुई थी ।

गुप्त राजाओं के समय में बड़ी संख्या में मंदिरों, चैत्यों, विहारों व स्तूपों का निर्माण हुआ। ये मंदिर ईंट और पत्थरों से बनाए जाते थे। कुछ बौद्ध विहार व मंदिर पहाड़ियों को काट कर बनाई गई गुफाओं के रूप में थे। गुप्त काल में सारनाथ में विशाल बौद्ध विहार बना। झाँसी स्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर व विदिशा स्थित उदयगिरी की गुफाएँ इसी समय की बनी है। कानपुर के पास भीतरगाँव में बना विष्णु मंदिर संसार में ईंटों से बना सर्वाधिक पुराना मंदिर है।

छत्तीसगढ़ में गुप्त कालीन कला

इसी तरह ईटों से बने वास्तु कला की एक अनुपम कृति छत्तीसगढ़ में भी है। यह है सन् 650 ई. के आसपास का बना सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर। यह राजधानी रायपुर से लगभग 79 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका शिखर भीतरगाँव के मंदिर के शिखर से काफी मिलता–जुलता है। भीतरगाँव की तरह यहाँ भी पौराणिक दृश्यों का अंकन तथा चौखट, प्रवेशद्वार आदि पर अलंकरण किया गया है। इससे पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में भी गुप्त कालीन कला का प्रभाव था। आज भी माघ पूर्णिमा एवं बुद्ध पूर्णिमा के पर्व पर सिरपुर में मेला लगता है।

चित्र–9.4 लक्ष्मण मंदिर सिरपुर (छत्तीसगढ़)

अभ्यास के प्रश्न

(अ) जोड़ी मिलाइए–

IE227F

क	ख
समुद्रगुप्त	चीनी यात्री
सिरपुर	ज्योतिषी
फाह्यान	महान योद्धा
वराहमिहिर	दक्षिण कोसल

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पंचतंत्र के लेखक का नाम क्या है ?
2. आर्यभट्ट की पुस्तक का नाम क्या है ?
3. अजंता की गुफाएँ क्यों प्रसिद्ध हैं ?
4. भीतरगाँव का मंदिर किस सामग्री का बना हुआ है ?
5. किसने कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है और अपनी धुरी पर घूमती है ?
6. समुद्रगुप्त ने छत्तीसगढ़ के राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया ?
7. गुप्त साम्राज्य के प्रशासन की विशेषता क्या थी ?
8. गुप्त काल के समाज में आपको कौन–सी बातें अच्छी लगीं ?
9. गुप्त काल के धर्म में ऐसी क्या बात थी जो गरीबों को अच्छी लग सकती थी ?
10. समुद्रगुप्त ने दूसरे राज्यों पर अधिकार करने के लिए कौन–सी नीति अपनाई थी ?

(स) योग्यता विस्तार –

1. सिरपुर के संबंध में अधिक जानकारी एकत्रित कीजिए ।
2. अपने गाँव/शहर में स्थित मंदिरों में से किसी एक की वास्तुकला की विशेषताओं का पता लगाइए?

अध्याय 10

IEAX93

ikrh; jkT;k dk ;qx

(500 ई. से 700 ई. तक)

चित्र–10.1

गुप्तवंश के समाप्त होने के बाद उत्तर भारत में कई छोटे–छोटे राज्य हुए। एक तरफ कुछ नए छोटे राज्य उभरे तो दूसरी तरफ कुछ पुराने राज्यों ने, जो गुप्त राजाओं के अधीन थे, अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर लिया। ये राज्य अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए एक–दूसरे से लड़ते रहते थे। इस काल के राज्यों में उत्तर भारत का वर्धन और दक्षिण भारत के चालुक्य एवं पल्लव वंश प्रमुख हैं। इस पाठ में हम इन्हीं राज्यों के बारे में पढ़ेंगे।

हर्षवर्धन (606 ई. से 647 ई. तक)

गुप्त वंश के पतन के लगभग 100 साल बाद एक नए राज्य का उदय हुआ। दिल्ली के पास थानेश्वर नामक जगह पर इस राज्य की राजधानी थी। इसी राज्य में हर्षवर्धन नाम का एक प्रसिद्ध राजा हुआ, जिसे हर्ष के नाम से भी जाना जाता है। वह 606 ई. के आसपास थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। वह एक शक्तिशाली शासक था और उसने गुप्त वंश की तरह उत्तर भारत में एक बड़ा साम्राज्य बनाने का प्रयास किया। उसने उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों को जीत लिया। लेकिन जब उसने दक्षिण के राज्यों पर चढ़ाई करनी चाही तो चालुक्य वंश का राजा पुलकेशिन द्वितीय उसे रोकने में सफल हुआ।

हर्ष का साम्राज्य पंजाब से उड़ीसा तक फैला था। उसने आगे चलकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई क्योंकि कन्नौज उसके राज्य के बीच में पड़ता था। 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हर्ष की मृत्यु हो गई।

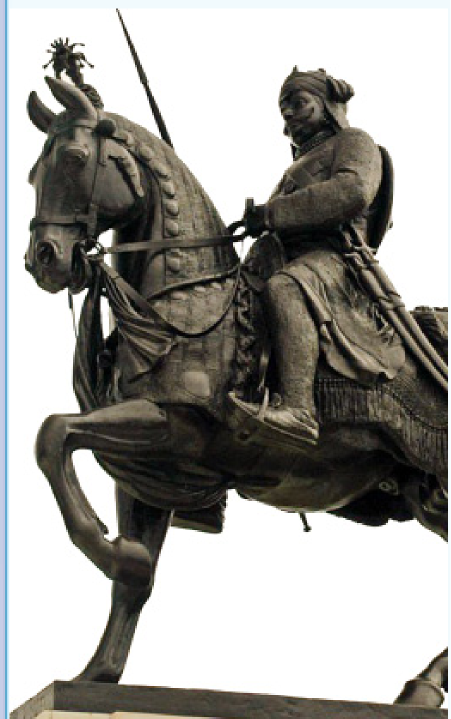

चित्र–10.2 सम्राट हर्षवर्धन

हर्ष ने जिन राज्यों को जीता वे उसे कर देते थे और जब वह युद्ध करता तो उसकी सहायता के लिए अपने सैनिक भेजते थे। वे हर्ष के अधीन तो थे लेकिन अपने राज्य पर स्वयं शासन करते थे। अपने मामलों में निर्णय भी स्वयं लेते थे। संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान बाणभट्ट हर्ष का दरबारी कवि था। उसके द्वारा रचित ''हर्षचरित'' में हर्ष की जीवनी के साथ उस समय के शहर, गाँव, जंगल आदि का वर्णन मिलता है। हर्ष के समय में चीन से ह्वेनसांग नामक बौद्ध भिक्षु भारत आया था। उसने भारत के विभिन्न बौद्ध तीर्थों व विहारों की यात्रा की और वहाँ रहकर बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया था। उसने भारत में अपने अनुभवों का विस्तृत संस्मरण लिखा है। इससे हमें उन दिनों के बारे में काफी जानकारी मिलती है।

हर्ष विद्वान तथा विद्या का संरक्षक था। उसने संस्कृत में रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका नामक नाटक लिखे।

हर्ष शिव का उपासक था। उसने अपने शासन काल में कन्नौज में बौद्ध सभा का आयोजन किया था। वह प्रत्येक चौथे वर्ष प्रयाग में धर्म सम्मेलन आयोजित करता था। इस सम्मेलन में वह अपना सब कुछ अनाथों, गरीबों और भिक्षुओं को दान कर देता था।

चित्र–10.3 चीनी बौद्ध यात्री

ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध यात्री था। वह 630 ई. में भारत यात्रा पर आया था। शिक्षा के प्रति उसका लगाव इतना था, कि बहुत मुसीबतों को झेलते हुए, मरुस्थलों एवं पहाड़ों को पार करते हुए भारत आया और नालंदा विहार में बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया। हर्ष के काल में नालंदा बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। हर्ष ने 100 गांव नालंदा के विहार को दान में दिए थे जिसकी आय से इसका खर्च चलता था।

ह्वेनसांग भारत में 5 वर्षों तक रहा और वापस अपने देश जाकर उसने अपनी यात्रा का विवरण लिखा। वह कहता है कि भारत में उस वक्त बौद्ध धर्म उतना लोकप्रिय नहीं था जितना कि वह समझता था। ह्वेनसांग ने छत्तीसगढ़ की भी यात्रा की थी। उसने दक्षिण कोसल के मुख्य शहर सिरपुर (श्रीपुर) को उस समय के बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बताया है।

दक्षिण भारत के राज्य

चालुक्य

इस समय भारत के दक्षिणी भाग अर्थात महाराष्ट्र और कर्नाटक में चालुक्यों का शासन था। उनकी राजधानी वातापी थी। चालुक्य वंश का पुलकेशिन द्वितीय एक शक्तिशाली शासक था। उसने हर्षवर्धन को पराजित किया और दक्कन (दक्षिण) पर लंबे समय तक शासन किया। उसने पल्लव वंश के राजा महेन्द्रवर्मन को भी पराजित किया। लेकिन कुछ समय बाद नृसिंहवर्मन से पराजित हो गया।

चालुक्यों की राजधानी वातापी काफी समृद्ध नगर था। पश्चिम में ईरान, अरब तथा लाल सागर के बंदरगाहों से तथा दक्षिण पूर्व एशिया के राज्यों से यहाँ के व्यापारियों के व्यापारिक संबंध थे।

चालुक्य राजा कला के प्रेमी व संरक्षक थे। उन्होंने दक्कन की पहाड़ियों में गुफा मंदिर तथा अन्य मंदिरों के निर्माण के लिए काफी धन दिया था। विश्वप्रसिद्ध अजंता एलोरा की गुफाओं के निर्माण में भी चालुक्यों ने बहुत धन दिए थे। अजंता की गुफा के एक चित्र में पुलकेशिन द्वितीय को ईरान के राजदूतों का स्वागत करते हुए दिखाया गया है। चालुक्यों के काल में ऐहोल, बादामी और पटट्दकल नगर कला के प्रमुख केन्द्र थे।

चालुक्य राजा जैन धर्म को मानते थे लेकिन कुछ शैव व वैष्णव धर्म को भी मानते थे।

पल्लव वंश

पल्लवों ने सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु में अपना राज्य स्थापित किया था। पल्लव राजाओं की राजधानी कांचीपुरम् (कांची) थी। इस वंश का प्रमुख शासक महेन्द्रवर्मन था। वह हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय का समकालीन था। उसने चट्टान खोदकर मंदिर बनाने की प्रथा शुरू की थी। वह एक प्रसिद्ध लेखक व नाटककार भी था। लेकिन वह पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध में हार गया। उसका बेटा नृसिंहवर्मन भी एक प्रसिद्ध शासक था। उसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय को हराकर अपने पिता की हार का बदला लिया था।

पल्लव राजा शुरू में जैन धर्म को मानते थे, मगर बाद में शिव व विष्णु के उपासक बन गए। उन्होंने अनेक मंदिर बनवाए। कुछ मंदिर पत्थर की विशाल शिलाओं को काट कर बनाए गए थे। महाबलिपुरम का रथ मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है। कुछ मंदिर पत्थरों की शिलाओं को जोड़कर बनाए जाते थे जैसे, कांची का कैलाश मंदिर। ये मंदिर केवल पूजा करने के स्थान ही नहीं थे बल्कि ये आसपास के लोगों के इकट्ठा होकर विचार–विमर्श करने, बच्चों को शिक्षा देने तथा उत्सव आदि मनाने के स्थान भी थे।

चित्र–10.4 कांची का कैलाश मंदिर

इस काल में दक्षिण भारत में एक ऐसा समुदाय उभरा जिनका विश्वास था कि धर्म ईश्वर, शिव या विष्णु की व्यक्तिगत उपासना है। यही विचारधारा आगे चलकर 'भक्ति' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसमें मुख्य रुप से समाज के सामान्य वर्ग के लोग शामिल थे। ये लोग जगह–जगह शिव या विष्णु के भजन गाते हुए घूमते थे। इनके भजन जनसाधारण की भाषा तमिल में लिखे होते थे। इनमें विष्णु के उपासक आल्वार के नाम से जाने जाते थे तथा शिव के उपासक नायनार के नाम से जाने जाते थे। दक्षिण भारत के समाज में इनका बहुत प्रभाव था।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) [kkyh LFkku dh ifr dhft,&

1. ठोस चट्टानों को काटकर मंदिर बनवाने की कला की शुरूआत ———— ने की थी।
2. पल्लवों के काल में ———— शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।
3. पल्लव राजा ———— लेखक और नाटककार भी था।
4. पुलकेशिन द्वितीय ने ———— को युद्ध में पराजित किया था।
5. चालुक्य नरेश नृसिंहवर्मन ने ———— को युद्ध में पराजित किया था।

IEJTAQ

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हर्षवर्धन का राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला था ?
2. हवेनसांग ने भारतीय समाज के बारे में क्या कहा है ?
3. हर्ष के धार्मिक कार्यो का वर्णन कीजिए ?
4. चालुक्यों का व्यापार किन–किन क्षेत्रों से होता था ?

(स) lf{kIr fVIi.kh fyf[k,&

1 आल्वार एवं नायनार

2 हवेनसांग

छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय, बिलासपुर

नागरिक-शास्त्र

Hkkjr dk lafo/kku
Hkkx 4 v

ukxfjdksa ds ewy drZO;

ewy drZO; & भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

1. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों,संस्थाओं,राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
3. भारत को प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।
4. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म,भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध हैं।
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
7. प्राकृतिक पर्यावरण को जिसके अंतर्गत वन, झील,नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मावनवाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले।
11. 6से 14 वर्ष के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर अभिभावकों द्वारा प्रदान करना।

संदर्भ – भारत का संविधान (2005) भारत सरकार,विधि और न्याय मंत्रालय।

अध्याय 1

IETPCD

ijLij fuHkZjrk

मनुष्य समाज में ही पलता–बढ़ता है और अपनी जरूरतों को पूरा करता है। समाज के बाहर रहकर वह अपनी बुद्धि का विकास भी नहीं कर सकता। इस बात को एक उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है।

futZu Vkiw ij eaxy

एक बार एक जलयान में कुछ लोग विदेश यात्रा पर निकले। लगभग एक सप्ताह बाद जब वे समुद्र में बहुत दूर निकल गए, तब अचानक भारी तूफान आया। तूफान में जलयान समुद्र में डूब गया। साथ ही कई यात्री भी डूबकर मर गए, परंतु इनमें से एक व्यक्ति तैरना जानता था इसलिए वह बच गया। उसका नाम था मंगल।

मंगल कई घंटे तैरने के बाद एक निर्जन तट पर पहुँचा। वहाँ दूर–दूर तक उसे कोई गाँव या शहर नहीं मिला। वास्तव में वह समुद्र के बीच में एक टापू था। महीनों तक उसे इस निर्जन स्थान पर कंदमूल और फल खाकर अकेले रहना पड़ा। अकेले रहते–रहते वह पागल–सा हो गया। उसके कपड़े फट गए। वह बीमार भी पड़ गया। वह दिनभर समुद्र के किनारे अकेले घूमता रहता।

IF3KE1

चित्र–1.1 निर्जन टापू पर

हमने देखा कि सिर्फ एक परिवार या गाँव के लोग ही एक दूसरे पर निर्भर नहीं है। बल्कि गाँव–शहर, राज्य तथा देश भी एक दूसरे पर निर्भर हैं। इन सबको एक दूसरे के साथ मिलकर जीवन बिताने के लिए कुछ तौर तरीके, नियम–कानून आदि मानने होते हैं।

कई दिनों बाद एक छोटा–सा जलयान उधर से गुज़रा। जलयान देखकर मंगल को बड़ी खुशी हुई। मंगल ने एक डण्डे पर अपने कपड़ों को लपेटकर जलयान की तरफ इशारा किया, उसे देखकर जलयान के यात्री समझ गए कि वह व्यक्ति संकट में फँसा हुआ है। इसलिए उन्होंने जलयान किनारे रोककर मंगल को अपने साथ ले लिया।

मंगल ने जलयान के यात्रियों को धन्यवाद दिया और कहा, ''अब मैंने जाना कि मनुष्य अकेले नहीं रह सकता। दूसरों के सहयोग के बिना जीवन बहुत मुश्किल हो जाता है।''

1. क्या आप कभी अकेले रहे हैं? ऐसी स्थिति में आपको क्या अनुभव हुआ ?
2. टापू पर मंगल के कपड़े क्यों फट गए थे ?
3. बीमारी में उसका इलाज क्यों नहीं हो पाया ?

ukxfjd thou e ijLij fuHkjrk

हर व्यक्ति कई लोगों पर निर्भर है। आप किन–किन लोगों पर निर्भर हैं और क्यों ? नीचे दी गई तालिका भरकर बताइए।

vki fdu ij] fdlfy, fuHkj g \

माता–पिता पर –	
डॉक्टर पर –	
शिक्षक पर –	
किसान पर –	
कुम्हार पर –	
लुहार पर –	
दुकानदार पर –	
कारखाने के मजदूरों पर –	
सफाई कर्मचारी पर –	

आप अपने परिवार के साथ रहते हैं। आपके परिवार में और कौन–कौन लोग रहते हैं? सूची में उनका नाम भरिए। घर के कार्यों में हर व्यक्ति क्या–क्या योगदान देता है, लिखें। अब सूची को फिर एक बार देखकर बताएँ कि क्या सब लोग मिलकर परिवार की जरूरतों को पूरा करते हैं या कोई एक व्यक्ति? इसी तरह आपके पड़ोसी भी अलग–अलग तरह से आपके काम आते हैं। बाल काटनेवाले, कपड़े धोनेवाले, दुकानदार, दूधवाला और ऐसे ही अन्य लोग एक दूसरे के काम आते हैं। आपके विद्यालय में भी प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अन्य कर्मचारी, विद्यालयीन कार्यों में सहयोग करते हैं।

l ph	
uke	dk;

हम अपने परिवार के अलावा पड़ोस, विद्यालय गाँवों तथा शहरों में अनेक तरह के काम करते हैं। इस तरह हम एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं, यही है ijLij fuHkjrk ;kfu ,d nlj ij fuHkj jgukA परिवार, पड़ोस, विद्यालय तथा समाज आदि में जो गतिविधियां चलती रहती हैं इसे हम नागरिक जीवन कहते हैं। यह नागरिक जीवन परस्पर निर्भरता पर आधारित है।

lkfp,] D;k gkxk] ;fn&

1- vkid xko dk ,dek= o| ;k MkDVj yEc le; d fy, ckgj pyk tk,A
2- fdlku dk Qly dkVu d fy, etnj u feyA
3- lyu oky cky dkVuk cn dj nA
4- vkid xko dk ygkj dke djuk cn dj nA
5- 0;fDr vdy thou ;kiu djuk 'k: dj nA

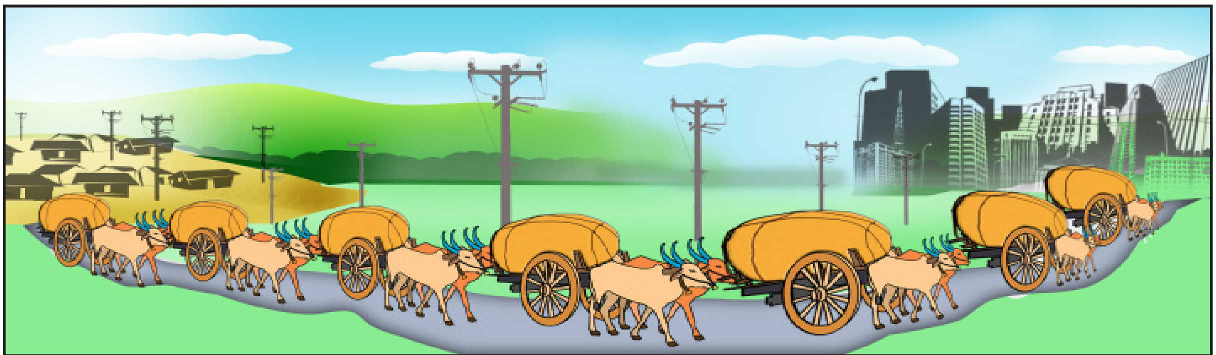

चित्र–1.2 शाहपुर गाँव से बिलासपुर शहर को भेजी जानेवाली चीजें

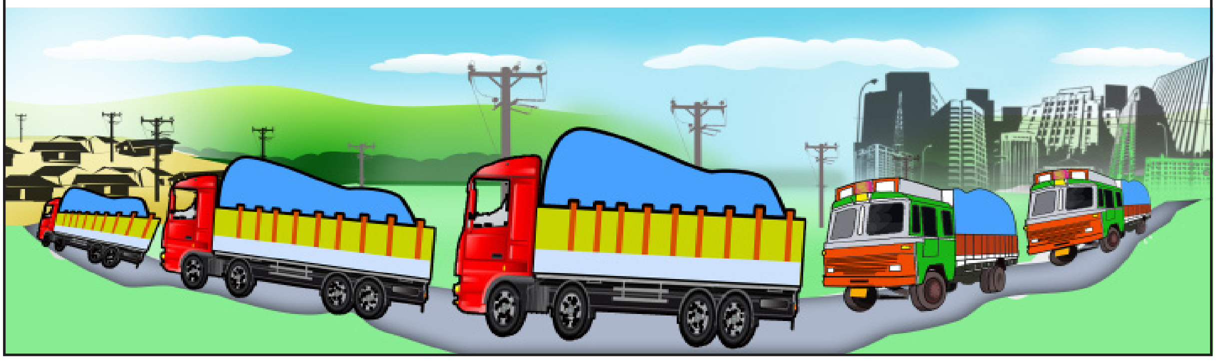

चित्र–1.3 बिलासपुर शहर से शाहपुर गाँव को भेजी जानेवाली चीजें

xko o 'kgj e ijLij fuHkjrk

जिस प्रकार हर व्यक्ति एक–दूसरे पर निर्भर होता है, ठीक उसी प्रकार गाँव के लोग शहरों पर निर्भर हैं तथा शहरों में रहनेवाले गाँवों पर निर्भर हैं।

चित्र 1.2 और 1.3 को देखकर समझें कि शाहपुर गाँव व बिलासपुर शहर कैसे परस्पर निर्भर हैं ?

lph cukb, &

1. आपके गाँव से शहरों में क्या–क्या भेजा जाता है ?
2. आपके गाँव में शहर से क्या–क्या सामान मँगाया जाता है ?

न केवल वस्तुओं के आदान–प्रदान में परंतु कई अन्य सुविधाओं के लिए भी गाँव शहर पर और शहर गाँवों पर निर्भर होते हैं। अस्पताल और डाक्टर शहरों में अधिक मिलते हैं। इसलिए गाँव के लोग अक्सर इलाज के लिए शहर जाते हैं। इसी तरह गाँव से मज़दूर और कारीगर शहर में काम करने जाते हैं। चर्चा करके लिखिए कि गाँव और शहर एक दूसरे पर कैसे निर्भर हैं।

,d jkT; dh nljs jkT; ij fuHkZjrk

किसी एक राज्य में सभी प्रकार की चीज़ें नहीं होतीं या सभी प्रकार की फसलें नहीं उगाई जातीं। अलग–अलग वस्तुएँ अलग–अलग राज्यों या क्षेत्रों में बनाई जाती हैं। जैसे, कहीं शक्कर बनती है, तो कहीं नमक। इसलिए ये चीजें मँगवाना ज़रूरी हो जाता है और इस तरह राज्य भी एक–दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं।

आओ देखें, हमारा छत्तीसगढ़ राज्य अन्य राज्यों से क्या–क्या मँगाता है।

महाराष्ट्र से	–	पेट्रोल, डीजल, दवाइयाँ, केला।
गुजरात से	–	खाद्यतेल, तंबाकू, नमक, कपड़ा।
उत्तरप्रदेश से	–	शक्कर।
केरल से	–	नारियल, मसाले।
पंजाब से	–	साइकिल,गेहूँ, शक्कर, मशीन, खेल सामग्री।
जम्मू–कश्मीर	–	ऊनी वस्त्र, फल।
असम से	–	चाय।

छत्तीसगढ़ से अन्य राज्यों को भेजी जानेवाली वस्तुएँ –

1. चावल	4. लोहा–इस्पात	7. काजू	10. लेमन ग्रास तेल
2. कोयला	5. मूँगफली/तेल	8. कोसा	
3. चना	6. बिजली	9. वनोपज	

xfrfof/k&

दैनिक उपयोग में लाई जानेवाली कुछ वस्तुओं जैसे माचिस, दवाईयाँ, ब्लेड, चाय, साबुन आदि का लेबल लाएँ और उन्हें देखकर पता करें कि वे कहाँ–कहाँ बनी हैं। इन स्थानों को भारत के नक्शे में खोजिए।

ns'kksa dh ijLij fuHkZjrk

हर देश में सभी वस्तुएँ पर्याप्त मात्रा में नहीं होती। इसीलिए उन्हें दूसरे देशों से मँगाना पड़ता है। इस प्रकार संसार के सभी देश दूसरे देशों पर निर्भर हैं– हमारा भारत बहुत सारी चीजें दूसरे देशों से आयात करता है, तथा बहुत सारी चीजें दूसरे देशों को निर्यात करता है।

vkb, irk yxk,¡ gekjk ns'k vU; ns'kksa ls D;k&D;k eaxkrk gS o ns'kksa dks fu;kZr djrk gSA

विदेशों से मंगाया (आयात) जाता है	विदेशों को भेजा (निर्यात) जाता है
पेट्रोलियम पदार्थ	चावल
दवाइयाँ	चाय
मशीनें	मसाले
रक्षा उपकरण	कपड़े

पता करें अपने देश में कौन–कौन–सी चीज़ें किस देश से आती हैं और अपने देश से कौन–कौन सी चीज़ें किन–किन देशों को भेजी जाती है। (इन देशों को नक्शे में देखिए।)

अब टी.वी. कम्प्यूटरों आदि के माध्यम से बहुत तेजी से हम विश्व के सभी देशों से विचारों व सूचनाओं का आदान– प्रदान भी कर लेते हैं। यह भी एक प्रकार की परस्पर निर्भरता है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

IFCGFN

1. नागरिक जीवन ––––– पर आधारित है।
2. छत्तीसगढ़ केरल से ––––– और ––––– मँगाता है।
3. भारत पेट्रोलियम पदार्थ ––––– करता है।
4. एक क्षेत्र या राज्य में सभी तरह की ––––– नहीं उगाई जाती।

(ब) सही/गलत का निशान लगाइए–

1. भारत में चावल बाहर से मँगाया जाता है ?
2. सब्जी तथा वनोपज गाँव से शहर भेजे जाते हैं ?
3. सभी देश अन्य देशों पर निर्भर हैं।
4. छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश से शक्कर मँगाता है।
5. हमारा देश किसी भी अन्य देश पर निर्भर नहीं है।

(स) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मंगल क्यों परेशान हो गया था ?
2. हम एक–दूसरे पर कैसे निर्भर हैं ?
3. समाज से दूर हम अकेले क्यों नहीं रह सकते ?
4. आपके गाँव/शहर में बाहर से क्या–क्या वस्तुएँ मंगाई जाती हैं ?

(द) नीचे दो स्थानों की जानकारी दी गई है। उनके आधार पर चित्र 1.2 की तरह एक चित्र बनाइए।

मीरपुर से पाली जानेवाली चीजें – खाद, बिजली–मोटर, जूते, दवाईयाँ ।

पाली से मीरपुर आनेवाली चीजें – धान, तिवरा, केला, सब्जियाँ, दूध।

1. इन दोनों में से गाँव कौन–सा है और शहर कौन–सा है? कारण सहित बताइए।
2. गाँव के लोग शहर किस काम के लिए जाते हैं ?

अध्याय 2

IFLCHB

कातिक और केकती का गाँव

मेरा नाम विजय सिंह बर्मन है। दो वर्ष पहले तक मैं भी एक गाँव पेंड्रीकला के माध्यमिक शाला में प्रधान अध्यापक रहा। अब शिक्षकीय सेवा पूर्णकर बिलासपुर में रहने लगा हूँ। बच्चों से मेरा गहरा लगाव रहा है। इसलिए आज भी अपने उन विद्यार्थियों से संबंध नहीं तोड़ पा रहा हूँ। कुछ बच्चे चिट्ठी में अपने स्कूल, अपने घर, अपनी पढ़ाई और अपने गाँव का वर्णन लिख भेजते हैं। इससे मुझे यहाँ बैठे–बैठे पेण्ड्रीकला की समस्त जानकारियाँ मिल जाती हैं। मुझे बच्चों के पत्र पढ़कर ऐसा लगता है कि जैसे मैं उन बच्चों के बीच पहुँच गया हूँ। आप भी उनमें से एक पत्र पर नज़र डालिए?

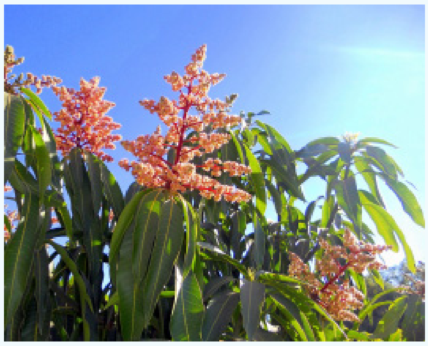

ग्राम – पेंड्रीकला
दिनांक : 2.10.07

J)s; xq:nso]

सादर प्रणाम, आशा है आप कुशल होंगे। जब से आप पेंड्रीकला छोड़कर गए हैं, हम सभी को आपकी बहुत याद आती है। आपको पेण्ड्री की प्यारी–सी हाफ नदी की याद तो आती ही होगी। सुबह–सुबह आपने जो नदी किनारे टहलने की आदत डाली थी वह अब भी जारी है। आज सोमू ने एक छोटा–सा केकड़ा पकड़ा, उसे चलता देख हमें उस दिन की याद आई जब आपने हमें बताया था कि इस छोटी–सी नदी में भी कई प्रकार के जीव–जंतु रहते हैं।

चित्र–2.1 बोरियों से बंधा हुआ बाँध

vkidks izHkkfor djus okys fdlh ,d f'k{kd ds ckjs esa fyf[k,A

चित्र–2.2 स्वरोजगार

IFV8IY

आप यह जानकर खुश होंगे, कि गाँव के सभी लोगों ने मिलजुलकर बोरियो में रेत भरकर नदी पर बाँध बना लिया है। बाँध के पानी का उपयोग नहाने और पशुओं को पिलाने के लिए होता है। कुछ लोग सब्जी–भाजी की खेती के लिए मोटर पंप लगाकर नदी में एकत्रित जल का उपयोग सिंचाई के रूप में करने लगे हैं। वे उसे आस पास के बाजारों में बेचने जाते हैं। इससे उनकी अच्छी आमदनी हो जाती है।

नदी पार पटेल की अमराई में इस साल खूब आम लगे हैं लेकिन पहले जैसे कच्चे आमों का मजा लेना मुश्किल हो गया है। कातिक, तीजन, चैतू, बैसाखू, केकती, देवकी, मनवा और समारू की माँ ने मिलकर महिला बचत समूह बना लिया है। इन्होंने इस वर्ष अमराई को ठेके पर लिया है और बारी–बारी से उसकी रखवाली करती हैं। उनकी मेहनत की कमाई का नुकसान हम कैसे कर सकते हैं। शाम को गिरे हुए कच्चे आम को वे खुद ही हमें उठाने से नहीं रोकती हैं।

हम देर तक अमराई में गिल्ली–डंडा और अन्य खेल खेलते हैं। आजकल कमल का चचेरा भाई भी गर्मी की छुट्टियों में यहाँ आया हुआ है। उसने पहली बार हमारे साथ गिल्ली–डंडा खेला। उसे बड़ा मजा आया।

प्रीति दीदी शहर से आम, बिही, आँवला, जाम के अचार, मुरब्बे व जैम बनाना सीखकर आई हैं। उन्होंने बचत समूह की महिलाओं को ये सब बनाना सिखा दिया है। सबने मिलकर आम और नींबू के आचार, आँवले का मुरब्बा, जैम, शरबत आदि बनाया है। सेमरसल के मेले (मड़ई) में उनके बनाए सभी सामान हाथोंहाथ बिक गए। यह आमदनी उन्होंने समूह के खाते में जमा कर दिया है।

प्रीति दीदी ने उन्हें मशीनों के लिए बैंक से ऋण दिलवा दिया है, जिससे उनका महिला कुटीर उद्योग और बढ़ गया है।

dVhj m|kx d ckj e f'k{kd l ppk dhft,A

xfrfof/k

lph cukb,&

Lo lgk;rk dUn	dk;l
1.	
2.	

कुंडा के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर,नर्स और कंपाउंडर हमारे विद्यालय में टीकाकरण के लिए आए थे। उन्होंने कुछ संक्रामक रोगों से बचाव के बारे मे बताया।

1. अपने आसपास फैलनेवाले प्रमुख संक्रामक रोगों के बारे में लिखिए ?

2. संक्रामक रोगों से कैसे बचाव हो सकता है ?

केकती को नदी की रेत में घरौंदे बनाना और पेड़ों की झुरमुट में लुकाछिपी खेलना खूब अच्छा लगता है। कातिक अभी भी भैंस की पीठ पर बैठे–बैठे बाँसुरी की ऐसी तान छेड़ता है कि सभी सुनने वाले मुग्ध हो जाते हैं। छुट्टियों के दिनों में चाँदनी रात में नदी की रेत में विष–अमृत खेलना, जंगल में लासा (गोंद), चार व तेंदू खाने के लिए घंटों घूमना, तितलियों के पीछे दौड़ना हमें आज भी खूब अच्छा लगता है।

चित्र–2.3 बाँसुरी की तान छेड़ता कातिक

गुरु जी आपको यह जानकर खुशी होगी कि केकती और कातिक भी स्कूल जाने लगे हैं। दोनों पढ़ाई मे ध्यान दे रहे हैं। केकती बहुत सुंदर चित्र बना लेती है और कातिक विद्यालय के कार्यक्रमो में बाँसुरी की धुन सुनाकर सबका दिल जीत लेता है।

मंगल माझी आपको याद करते हुए नदी के घाट की सफाई पर ध्यान देता है। गाँव के लोग भी घरों का कचरा अपने खाद के गढ्ढे में ही फेंकते हैं और उसे खाद के रूप में प्रयोग करते हैं।

1- unh d ?kkV dh lQkbl l ykxk dk D;k ykHk gkxk \

2- dpj dk x<<s e Mkyuk D;k t:jh g \

बाँस की सींकों से ग्लोब बनाने वाले रामू काका ने ग्रामीण बैंक से लोन लेकर दुकान खोल ली है। वे अपनी दुकान पर सूप, डलिया, टोकरी, झाड़ू आदि बेच रहे हैं।

चित्र–2.4 रामू काका की दुकान

fdUgh ikp okl;=k d uke fyf[k,A

xfrfof/k

,lh lkexh dk irk dhft, ftldk fuek.k vkid xko e gkrk g vkj ftl cpk tkrk g।

सुभाष को आप भूले नहीं होंगे। वह आज भी खो–खो और कबड्डी का सबसे अच्छा खिलाड़ी है। उसने इस वर्ष राज्य स्तर पर भाग लेकर कई इनाम जीते हैं। ढोलक बजाने के लिए आप जिस मोहन की तारीफ करते थे अब वह माँदर, ढोलक, नगाड़ा बजाने के लिए पूरे इलाके में मशहूर हो गया है।

अंत में हम सभी छात्रगण आपको अपने विद्यालय के वार्षिक उत्सव के लिए आमंत्रित करते हैं और निवेदन करते हैं, कि आप हमे और नई जानकारियाँ देवें तथा बिलासपुर शहर के बारे में ढेर सारी बातें बताएँ।

आपके
सोमेश, मनीषा
और आपके सभी नटखट छात्रगण

अभ्यास के प्रश्न

IS9GZI

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. हाफ नदी के पानी का उपयोग.................................. की खेती के लिए करते हैं ।
2. प्रीति दीदी शहर से.. बनाना सीखकर आई हैं।
3. बचत समूह की महिलाएँ ....के मेले में आँवले का मुरब्बा, आम......................नींबू का आचार आदि हाथोंहाथ बेच लेती थी।

(ब) सही जोड़ी बनाइए–

1. सुभाष	घरौंदे बनाता है।
2. मोहन	भैंसे की पीठ पर बैठकर बाँसुरी बजाता है।
3. कातिक	माँदर, ढ़ोलक बजाता है।
4. केकती	खो–खो, कबड्डी का खिलाड़ी है ।

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सुबह नदी के तट पर बच्चों ने क्या देखा ?
2. पेंड्रीकला के लोगो ने रेत की बोरियों से नदी को क्यों बाँधा था ?
3. प्रीति दीदी ने बचत समूह की क्या सहायता की ?
4. बचत समूह की महिलाएँ गाँव में क्या–क्या बनाती हैं ?
5. महिलाओं को मशीन की सहायता से क्या लाभ हुआ ?
6. रामू काका ने किसकी सहायता से दुकान खोली ?
7. स्वसहायता समूह से क्या आशय है ?

अध्याय 3

ISD26

ipk;rh jkt

1. आपके गाँव या शहर में सड़क, पानी, स्कूल, अस्पताल, आदि की व्यवस्था कैसी है? क्या उनसे संबंधित आपकी कुछ समस्याएँ हैं?
2. आपके ग्राम पंचायत या नगर पालिका ने उन समस्याओं के समाधान के लिए क्या उपाय किए हैं?

आइए, इस पाठ में हम ग्राम पंचायत के गठन और उसके कार्यो के बारे में पढ़ेंगे।

xke ipk;r

कमालपुर गाँव के सामाजिक विज्ञान के शिक्षक ने कक्षा 6 के छात्र–छात्राओं से पंचायत के बारे में पता करने को कहा है।

एक सप्ताह के भीतर उन्हें अपने ग्राम पंचायत के पंच, सरपंच, उपसरपंच, सचिव और ग्रामसभा के बारे में जानकारी लाने को कहा।

काम इस प्रकार बँटा था–नेहा पंच से संबंधित जानकारी देगी। संध्या सरपंच के विषय में कक्षा को बताएगी। जगमोहन और सुभाष ग्रामसभा के काम और अधिकारों का पता लगाएँगे। शिक्षक ने अभय से कहा कि वह ग्राम पंचायत के गठन के नियमों एवं उसके कामों के बारे में पता करें।

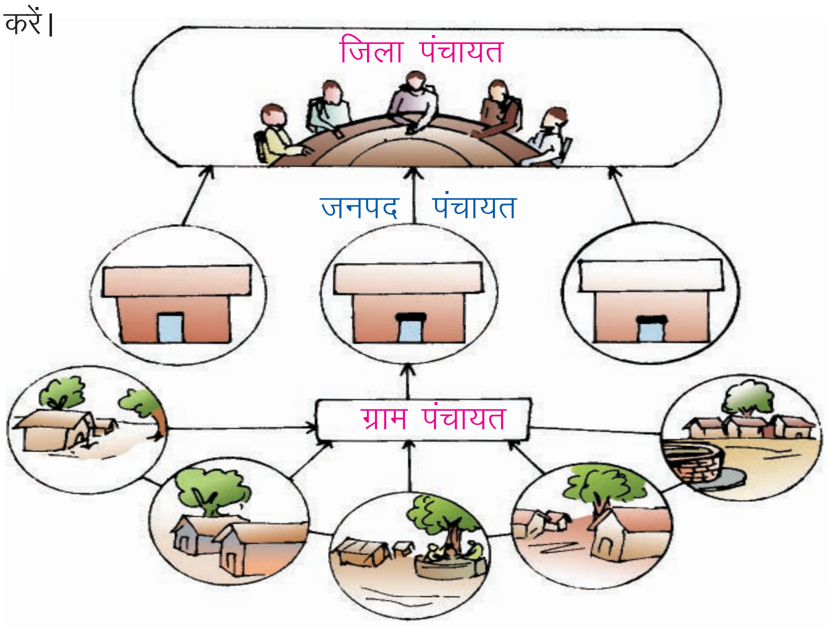

त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था

ISS93T

xke ipk;r puko

नेहा का काम बहुत सरल था, उसकी भाभी उमा मदनपुर की पंच थी। पंचों के बारे में जानने के लिए नेहा शाम का खाना खाकर उमा भाभी के पास पहुँच गई।

okM vkj ipk dk puko

नेहा – भाभी, ये तो हम जानते हैं कि आप पंच हैं, मगर आप पंच कैसे बनी? क्या पंचायत में आपकी तरह और भी पंच हैं?

उमा – किसी भी पंचायत में 10 से 20 तक पंच होते हैं। सभी वार्डों के वयस्क लोग मिलकर उन पंचों को चुनते हैं।

नेहा – ये वार्ड क्या होता है, भाभी?

उमा – प्रत्येक ग्राम पंचायत के इलाके को जनसंख्या के आधार पर कई भागों में बाँटा जाता है। इन्हें वार्ड कहते हैं। प्रत्येक वार्ड के वयस्क लोग मिलकर एक व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि या पंच चुनते है। इस तरह प्रत्येक पंचायत में 10 से 20 वार्ड होते हैं। मैं मातापुरा वार्ड से पंच बनी हूँ।

उमा भाभी ये तो ठीक है, मगर आप इस वार्ड की पंच कैसे बनीं?

उमा – पंच के चुनाव में 21 साल या उससे अधिक उम्र वाला कोई भी व्यक्ति खड़ा हो सकता है। चुनाव में खड़े होनेवालों को 'उम्मीदवार' कहते हैं। मैं मातापुरा वार्ड से खड़ी हुई थी। जब एक से अधिक 'उम्मीदवार' होते हैं तो उनमें से एक को चुनने के लिए मतदान होता है। वार्ड के लोग वोट देते हैं और जिसको सबसे ज्यादा वोट मिले वह पंच बन जाता है।

लेकिन मातापुरा वार्ड से मैं अकेली ही चुनाव में खड़ी हुई थी इसलिए मतदान की जरूरत ही नहीं पड़ी इसलिए मैं तो "निर्विरोध" चुनी गई।

पंचायत को वार्डों में बाँटने के क्या–क्या फायदे होंगे? कक्षा में शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए।

ernkrk

नेहा – भाभी क्या हम भी चुनाव में मत दे सकते हैं?

उमा – नहीं! अभी तुम और संध्या केवल 12 वर्ष के हुए हो। मतदाता की उम्र कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। हर गाँव की एक मतदाता सूची होती है। गाँव का पटवारी या वहाँ के शिक्षक घर–घर जाकर चुनाव के पहले मतदाता सूची को सही बना लेते हैं। यह सभी जानकारी नेहा ने अपनी कक्षा को दी।

1- irk dhft, fd vkid xke ipk;r e fdru okM vkj ip gA

2- vki viu okM d ip dk uke irk dhft,A

3- mek HkkHkh fufojk/k D;k puh xb \ lgh dkj.k ij lgh dk fu'kku yxkb,&

¼v½ D;kfd og ,d efgyk FkhA

¼c½ D;kfd mldk lcls T;knk ykx ilan djr FkA

¼l½ D;kfd mld okM l vkj dkb puko e [kMk ugh gvk FkkA

bue: l: dku&dku ekrkijk okM d: ernkrk gkx\

Ø-	uke	firk dk uke	me:	fyx	okM dk uke
1.	सोनल	रामसिंह	16	महिला	मातापुरा
2.	सपना	रामसिंह	19	महिला	मातापुरा
3.	शंकर	कमलभान	18	पुरूष	मातापुरा
4.	कल्लू	कोमलसिंह	25	पुरूष	मातापुरा
5.	समीना	अफजल	15	महिला	मातापुरा

ikp lky e: puko

नेहा के मन में एक सवाल उठा – क्या एक बार चुनाव जीत लिया तो भाभी हमेशा पंच बनी रहेंगी? उसने यह बात उमा भाभी से पूछा।

उमा – नहीं, पंचायत का चुनाव हर पाँच साल में होता है। कोई भी केवल पाँच साल के लिए ही पंच चुना जा सकता है। पिछला पंचायत चुनाव दो साल पहले हुआ था। मैं बस तीन साल और पंच रहूँगी। उसके बाद फिर से चुनाव होंगे।

चित्र–3.1 पंचायत चुनाव

1- ip doy ikp lky d: fy, pu: tkr: gA D;k \ d{kk e: ppk dhft,A

2- fdlh dk ge'kk d: fy, ip D;k ugh puk tkrk g & d{kk e: ppk dhft,A

ljip vkj mi ljip

संध्या को सरपंच के बारे में पता करना था। वह एक दिन पंचायत भवन में गई और सीधे सरपंच कलावती से ही पूछताछ करने लगी।

संध्या – आप सरपंच कैसे बनीं ?

कलावती – पंचो की तरह सरपंच को भी सभी लोग वोट डालकर चुनते हैं। फर्क यह है कि पंच को सिर्फ एक ही वार्ड के लोग चुनते हैं जबकि सरपंच को पूरे ग्राम पंचायत के मतदाता चुनते हैं।

संध्या – मगर सरपंच बनकर आपको काम क्या करना पड़ता है?

कलावती – सरपंच ही पंचायत का मुखिया होता है। मुझे हर महीने सभी पंचों को बुलाकर बैठक करानी होती है। इस बैठक की अध्यक्षता मैं ही करती हूँ यानी बैठक को मैं ही संचालित करती हूँ। पूरे

ग्रामपंचायत के मतदाताओं को बुलाकर ग्राम सभा भी करानी पड़ती है। इन बैठकों में जो विकास के काम कराने का निर्णय होता है उसके बारे में जनपद या जिला पंचायत या सरकारी अधिकारियों से मिलकर पैसे का इंतजाम करती हूँ। ये काम ठीक से चल रहे हैं या नहीं ये भी मुझे देखना पड़ता है। पैसे, जो पंचायत को मिल रहे हैं और खर्च हो रहे हैं उनका हिसाब–किताब भी देखना पड़ता है।

संध्या – अरे, आपको तो काफी काम करना पड़ता है। लेकिन अगर आप बीमार पड़ें या कहीं शादी ब्याह में जाएँ तो क्या होगा? क्या पंचायत तब तक के लिए बंद हो जाएगी?

कलावती – नहीं–नहीं, मैं नहीं रहती हूँ तो मेरी जगह उपसरपंच पंचायत का काम देखते हैं। मेरे न रहने पर तो वे बैठक की अध्यक्षता भी करते हैं।

संध्या – क्या उपसरपंच को भी सारे गाँव के लोग मिलकर चुनते हैं?

कलावती – नहीं। सारे पंच मिल कर अपने में से एक को उपसरपंच चुन लेते हैं।

l/;k us viuh dkih esa fy[k fy;k fd d{kk esa ljiap ds ckjs esa D;k&D;k dguk gSA ysfdu dqN 'kCn NwV x,A bUgsa vki Hkfj,A

1. एक ––––– के मतदाता मिलकर पंच को चुनते है, जबकि सरपंच को पूरे ––––– के मतदाता चुनते हैं।
2. सभी पंच मिलकर अपने में से एक को ––––– चुनते हैं।
3. सरपंच की अनुपस्थिति में ––––– बैठकों की अध्यक्षता करते हैं।
4. पंचायत के बैठकों की अध्यक्षता करना ––––– का काम है।

xzke iapk;r dh cSBd

अभय की जिम्मेदारी थी – ग्राम पंचायत के कामों के बारे में पता करना। उसने सोचा, क्यों न पंचायत की किसी बैठक में जाकर देखूँ वहाँ क्या होता है? अभय जब पंचायत भवन पहुँचा तो बैठक शुरू नहीं हुई थी। 12 पंचो में से सिर्फ 5 पंच ही आए थे। सब इंतजार कर रहे थे कि दो और पंच आ जाएं तो बैठक शुरू करने के लिए कम–से–कम आधे से अधिक सदस्य उपस्थित हो जाएँगे। यानी कमालपुर पंचायत के 12 पंचों में से कम–से–कम 7 पंचों को बैठक में होना जरुरी था।

1. आधे से अधिक पंचों की उपस्थिति पंचायत की बैठक में क्यों आवश्यक है ?
2. रूपपुर पंचायत में कुल 18 सदस्य हैं। वहाँ की बैठकों में कम–से–कम कितने पंचों को रहना चाहिए?

चित्र–3.2 ग्राम पंचायत की बैठक

कुछ ही देर बाद दो–तीन सदस्य और आ गए, एवं बैठक शुरू हो गई। सरपंच कलावती बाई बैठक की अध्यक्षता कर रही थी।

सबसे पहले सचिव ने पिछली बैठक के निर्णयों को पढ़कर सुनाया और उन पर जो काम हुआ था उसकी जानकारी दी। उसके बाद परसवारा गाँव के पंच बोले, ''हमारे गाँव के कुंओं में जलस्तर लगातार कम हो रहा है। ऐसे में कुछ ही महीनों में गाँव में पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा। गाँववाले चाहते हैं कि यहाँ जलग्रहण योजना चलाई जाए ताकि बारिश के पानी को संजोकर रख सकें। पंचायत में इसके बारे में योजना बननी चाहिए।''

> पंच, सरपंच और उपसरपंच के अतिरिक्त प्रत्येक पंचायत में एक पंचायत सचिव होता है। सचिव का चुनाव नहीं होता बल्कि यह सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। इसका काम पंचायत की बैठकों में हुई चर्चाओं एवं निर्णयों का रिकार्ड रखना तथा पंचायत की आमदनी और खर्च का लेखा–जोखा रखना होता है। सचिव को सरकार द्वारा वेतन दिया जाता है जबकि पंच, सरपंच और उप सरपंच को कोई वेतन नहीं मिलता है।

चंगोरा के पंच ने कहा, ''चंगोरा और मुख्य सड़क को जोड़नेवाली पुलिया का निर्माण होना था। यहाँ से प्रस्ताव पास होकर जनपद पंचायत के पास अनुदान राशि के लिए गया था। उसका क्या हुआ?''

सरपंच कलावती बाई ने कहा, ''पुलिया के लिए स्वीकृत राशि आ गई है। शीघ्र ही आपको काम चालू करवाना होगा।''

गांधी वार्ड के पंच ने कहा, ''हमारे वार्ड की प्राथमिक शाला में पिछले एक महीने से एक ही शिक्षक पढ़ा रहे हैं जबकि यहाँ चार शिक्षकों को होना चाहिए। एक शिक्षक छुट्टी पर हैं, और दो किसी सर्वेक्षण में लगे हैं। ऐसे में शाला में पढाई कैसे होगी? ''सरपंच ने वादा किया कि वे विकासखंड शिक्षा अधिकारी से इसके बारे में चर्चा करेंगी।

मातापुरा की पंच उमा बाई ने बताया कि आजकल गाँव में मलेरिया और पीलिया बहुत फैला हुआ है। गाँव के डबरों व कुँओं की सफाई करवानी है। कुँओं में दवाई भी छिड़कवानी है। मैं अपने मोहल्ले की जिम्मेदारी लेती हूँ पर कुछ पैसे चाहिए। उप सरपंच ने सभी उपस्थित पंचों से अपने–अपने मोहल्लों की जिम्मेदारी लेने के लिए कहा। उसके बाद मुंगेली–पंडरिया रोड से कमालपुर पहुँच मार्ग को जोड़ने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से बनाया गया। सभी ने उस पर हस्ताक्षर किए और दोपहर 2 बजे बैठक समाप्त हो गई।

चित्र–3.3 साफ सुथरा गाँव

xke ipk;r dk dke

बैठक के बाद अभय सरपंच के पास गया उसने कलावती बाई से कहा, ''मौसी मुझे नहीं पता था कि पंचायत में इतनी सारी बातें होती हैं। मै तो सोचता था कि इसका काम सड़क बनवाना है।'' जरा आप ही मुझे बताएँ कि पंचायत के और क्या–क्या काम हैं?

चित्र–3.4 अव्यवस्थित गाँव

कलावती ने कहा, बेटा हमारे कामों की सूची तो बहुत लंबी है, मगर मुख्य काम –

गाँव की साफ–सफाई करवाना, गाँव में पीने व निस्तार के पानी की व्यवस्था करवाना, सड़क, पुलिया, शाला का निर्माण और मरम्मत, विवाह, जन्म–मृत्यु को दर्ज करना। गाँव में पाठशाला और स्वास्थ्य सेवा की निगरानी करना, आदि है। इसके अलावा गाँव के विकास के लिए योजना बनाना तथा शासन द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं के क्रियान्वयन में मदद करना भी पंचायत का काम है।

ग्राम पंचायत की आमदनी

अभय ने यह सब सुनकर पूछा, ''मौसी , मगर ये सब काम करने के लिए तो बहुत पैसे लगेंगे। पंचायत को पैसे कहाँ से मिलते है' ?''

कलावती बोली, ''अच्छा हुआ जो तुमने यह पूछ लिया। ये सब काम करने के लिए पंचायत को केन्द्र और राज्य सरकार से पैसे मिलते हैं। इन सरकारों को गाँव में जो भी विकास कार्य कराना होता है वे उसे पंचायत के माध्यम से ही कराते हैं। वे इसके लिए निर्धारित राशि पंचायत को दे देते हैं और पंचायत उन कामों को करवाती हैं। इसके अलावा पंचायत गाँव के लोगों पर छोटे–मोटे कर लगाकर भी पैसे इकट्ठा कर सकती है।

अभय को आश्चर्य हुआ, ''पंचायत भी कर लगा सकती है? पंचायत कौन–से कर लगाती है?''

कलावती ने बताया, ''सफाई कर, गाँव में लगनेवाले दुकानों पर कर, मेले में लगने वाले दुकानों पर कर, आदि। इसके अलावा अगर गाँव में रेत–मुरम, पत्थर आदि के खदान हों तो उन पर ''रायल्टी'' भी वसूली जा सकती है। इन सबसे जो आय होती है उसी से पंचायत का काम चलता है।

अगले हफ्ते सामाजिक विज्ञान की कक्षा में ग्राम पंचायत पर चर्चा हुई। छात्रों की टोलियों ने सबको बताया कि उन्होंने क्या–क्या पता किया।

नेहा ने पंचों के चुनाव के बारे में बताया। कक्षा में इस बात को लेकर बहस हुई कि बच्चों को वोट देने का अधिकार क्यों नहीं दिया गया है।

jkT; o dUnz ljdkj dk ckj e viu f'k{kd ls ppk djA

iapk;r esa vkj{k.k

IT255G

संध्या ने सबको सरपंच और उपसरपंच के बारे में जानकारी दी। उसको बहुत गर्व महसूस हो रहा था कि उसके गाँव की सरपंच एक महिला है। उसने सबको समझाया कि यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि पंचायतों में महिलाओं तथा अनुसूचित जाति व जनजातियों तथा पिछड़े वर्गो के लिए विशेष आरक्षण है। यानी हर पंचायत के कुछ वार्डों से केवल महिलाएँ, अनुसूचित जाति या जनजाति या पिछड़े वर्ग के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं। दूसरी जाति के लोग वहाँ से चुनाव नहीं लड़ सकते। इसी तरह हर विकासखंड के कुछ पंचायतों में केवल महिलाएँ या फिर आरक्षित वर्ग के लोग ही सरपंच के लिए चुनाव लड़ सकते हैं।

शेख इमरान के मन में एक सवाल उठा –''क्या दूसरे वार्डों से केवल पुरूष या सामान्य जाति के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं?''

इस पर संध्या बोली – ''नहीं, उन अनारक्षित पदों के लिए कोई भी – चाहे वह महिला हो या अनुसूचित जाति या जनजाति या पिछड़ा वर्ग का हो– चुनाव लड़ सकता है।''

चंपा ने गुरु जी से पूछा – ''गुरु जी यह आरक्षण होता ही क्यों है? अगर सब समान हैं तो कोई किसी भी पद के लिए चुनाव क्यों नहीं लड़ सकता?''

गुरु जी ने जवाब दिया , ''जिन वर्गों के लिए आरक्षण किया गया है, वे आमतौर से गरीब और सुविधाओं से वंचित होते हैं। वे सामान्य तौर पर चुनाव जीतकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग नहीं ले पाते। इसलिए उनका निर्णय प्रक्रिया में शामिल होना बहुत ज़रूरी है।''

''यदि उन्हें इस प्रकार के अवसर न दिए जाए तो समाज के ये वर्ग उपेक्षित रहेगें और समाज में समानता नहीं आ सकेगी। इस कारण अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और महिलाओं को उचित आरक्षण दिया गया है। इसी आरक्षण के कारण ही आज हर पंचायत में कम–से–कम हर वर्ग के लोग भी पंच और सरपंच बन पाए हैं।''

''यदि किसी ग्राम पंचायत में 12 पंच हैं तो उनमें से कोई भी 4 पद महिलाओं के लिए आरक्षित होंगें। आरक्षण का मतलब है कि उस पंच के पद पर पुरुष प्रत्याशी चुनाव नहीं लड़ सकते। पर इसका मतलब यह नहीं कि महिलाएँ सामान्य पदों से चुनाव नहीं लड़ सकतीं। महिलाएँ अपने लिए आरक्षित क्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों से भी चुनाव लड़ सकती हैं। इसी तरह अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों के सदस्यों के लिए भी पद आरक्षित किए जाते हैं। आरक्षण का मतलब यह होता है कि सामान्य जाति के लोग इन पदों पर चुनाव नहीं लड़ सकते, पर अनुसूचित जाति या जनजाति या अन्य पिछड़े वर्ग के लोग समान्य क्षेत्रों से चुनाव लड़ सकते हैं।''

1. आप कक्षा में चर्चा कीजिए कि आरक्षण के उद्देश्य आपके इलाके में पूरे हुए हैं या नहीं।
2. पता कीजिए कि आपके यहाँ ग्रामपंचायत के सरंपच का पद आरक्षित है या नहीं। यदि है तो किस वर्ग के लिए?

xzke lHkk

अब सुभाष की बारी थी। उसे ग्रामसभा के बारे में पता करना था। सुभाष ने कहा, ''आप सब जानते हैं कि पिछले ही हफ्ते अपने गाँव की ग्रामसभा हुई थी। मैं पूरे समय सभा में रहा और जानकारी हासिल की।''

तभी रंजन पूछ बैठा– ''क्या ग्रामसभा में हम बच्चे भी भाग ले सकते हैं ?''

सुभाष ने स्पष्ट किया– ''ग्रामसभा में कोई भी बैठ सकता है मगर इसमें सिर्फ गाँव के मतदाताओं को ही वोट देने का अधिकार है।''

चित्र–3.5 ग्रामसभा की बैठक

फिर वह ग्रामसभा के बारे में बताने लगा। ''जब मैं ग्राम सभा में पहुँचा तो बैठक शुरू हो गई थी, पहला मुद्दा था गरीबी रेखा के नीचे आनेवाले परिवारों का अनुमोदन। दरअसल राज्य सरकार की तरफ से एक योजना आई थी जिसके अंतर्गत गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों को गैस का चूल्हा और टंकी बाँटनी थी। इसलिए गाँव के ऐसे परिवारों का चयन किया जा रहा था।''

''गाँव का पंच होने के नाते भोला काका ने गाँव के उन परिवारों के नाम पढ़ना शुरू किया जो 'गरीबी रेखा' के नीचे पाए गए थे। उन्होंने करीब पंद्रह नाम पढ़े। इनमें से पाँच नामों पर कुछ लोगों ने आपत्ति उठाई। लखन तो गरीब नहीं है– उसके पास मोटरसाइकिल है, पक्का मकान है– किसी ने कहा। भोला काका ने बताया कि उसने यह सब कर्ज़ लेकर किया है। फिर भी सभी लोगों को लगा कि उसकी आमदनी इतनी है कि वह कर्ज़ की राशि पटा सके। तो उसका नाम सूची से काट दिया गया। ऐसे ही चार और लोगों के नाम काटे गए।''

''फिर गाँव में पंचायत द्वारा किए जा रहे कामों पर चर्चा की गई। स्कूल के अतिरिक्त कमरों पर चर्चा की गई। स्कूल का अतिरिक्त कमरा अधूरा पड़ा था, कई दिनों से काम भी बंद था। भोला काका ने बताया कि जिस ठेकेदार को ठेका दिया गया था, वह बीमार हो गया है। लोगों ने कहा कि अगर वह ठीक नहीं हुआ है तो दूसरा ठेकेदार लाया जाए। बरसात से पहले कमरा पूरा हो जाना चाहिए। भोला काका ने काम पूरा करवाने का आश्वासन दिया।''

''अगले दो– तीन घंटे ऐसे ही बैठक चलती रही। कई मुद्दों पर बातें हुईं। ग्राम पंचायत की आमदनी खर्च को भी प्रस्तुत किया गया और उस पर चर्चा हुई।''

सुभाष ने आगे बताया कि ''पंचायत को जो भी काम करने होते हैं, उसके संबंध में उसे ग्राम सभा में प्रस्ताव पेश करना होता है। ग्रामसभा प्रस्ताव पर चर्चा करती है और उसे स्वीकृत करती है। ग्राम सभा की स्वीकृति के बगैर पंचायत कोई भी काम नहीं कर सकती। पंचायत सदस्यों को समय समय पर उन कामों की प्रगति के बारे में भी ग्रामसभा को बताना पड़ता है।''

ये सब सुनकर कक्षा की एक छात्रा केतकी खुश होकर बोलने लगी कि ग्रामसभा के माध्यम से गाँव का हरेक व्यक्ति अपने गाँव के विकास कार्य के निर्णय में भाग ले सकता है और इस बात पर निगरानी भी रख सकता है कि कहीं कोई गड़बड़ी न हो रही हो।

xjhch js[kk ds ckjs esa viuh f'k{kd ls ppkZ djsaA

tuin ipk;r

हमारी पंचायती राज व्यवस्था त्रिस्तरीय है। ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत, ये तीनों संस्थाएँ एक–दूसरे से कड़ी की भाँति जुड़ी हुई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के कार्य ये तीनों संस्थाएँ आपस में मिलकर करती हैं।

tuin ipk;r xBu

ग्राम पंचायत की भांति जनपद पंचायत का भी गठन चुनाव द्वारा होता है। जनपद पंचायत के सदस्यों का चुनाव उस क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा होता है। 5 वर्ष के लिए चुने हुए सदस्यों के अलावा उस खण्ड के निर्वाचित विधायक, लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य भी जनपद पंचायत के पदेन सदस्य होते हैं तथा सहकारी बैंक के प्रतिनिधि भी सहयोजित सदस्य होते हैं।

जनपद पंचायत के कामों की देखरेख के लिए जनपद पंचायत के सदस्य अपना अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष चुनते हैं। पंचायत की भाँति यहाँ पर भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग एवं महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान है। दोनों में से एक पद पर आरक्षित वर्ग का प्रतिनिधि होता है।

1. आपकी पंचायत किस जनपद पंचायत के अंतर्गत आती है ?
2. आपके क्षेत्र का जनपद सदस्य कौन है?
3. मतदाता, निर्वाचित और सहयोजित (पदेन) शब्दों का अर्थ अपने गुरू जी से समझो।

tuin ipk;r d dk;

जनपद पंचायत का सबसे महत्वपूर्ण कार्य ग्राम पंचायतों को राज्य सरकार से धन दिलवाना है। जनपद पंचायत ही ग्राम पंचायत के कार्यों की देख–रेख भी करती है।

ग्रामों के समग्र विकास के लिए पंचायतों को विशेषज्ञों की सेवा उपलब्ध कराना है, जैसे–कृषि विशेषज्ञ, शिक्षा विशेषज्ञ, पशु चिकित्सक आदि जनपद पंचायत महिला, युवा तथा बाल – कल्याण व निःशक्त, निराश्रितों के कल्याण हेतु कार्य, परिवार नियोजन, खेलकूद और ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम आदि की व्यवस्था, सहायता तथा संचालन करती है। प्राकृतिक आपदाओं में आपात् सहायता की व्यवस्था, करना, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रचार–प्रसार इसका कार्य है। आजकल जनपद पंचायत शिक्षा कर्मी, पंचायत कर्मी और स्वास्थ्य कर्मी के कुछ पदों पर नियुक्ति भी करती है।

tuin ipk;r dh vk; d lk/ku

जनपद पंचायत को अपने क्षेत्र के विकास के कार्यों के लिए विभिन्न साधनों से आय प्राप्त होती है। वह जनपद पंचायत क्षेत्र में मकान, जमीन, मेलों और बाजारों पर कर लगाकर धन एकत्र करती है। दूसरा जनपद पंचायत राज्य सरकार से वित्तीय सहायता तथा अनुदान प्राप्त करती है।

जनपद पंचायत स्तर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी सर्वोच्च अधिकारी होता है। इसका मुख्य कार्य जनपद पंचायत के निर्णयों को लागू करवाना होता है।

ftyk iapk;r

जिला पंचायत पंचायती राज व्यवस्था की तीसरी और सर्वोच्च कड़ी है। इसका गठन जिला स्तर पर होता है। इसके अंतर्गत जिले की सभी जनपद पंचायतें आती हैं।

ftyk iapk;r dk xBu

जनपद पंचायत की भाँति जिला पंचायत के सदस्य जिले के मतदाताओं द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं। प्रत्येक 50,000 की जनसंख्या पर जिला पंचायत के लिए एक सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से वयस्क मताधिकार द्वारा चुना जाता है। जिला पंचायत के सदस्यों की संख्या न्यूनतम 10 और अधिकतम 35 हो सकती है। जिले की विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य भी जिला पंचायत के पदेन सदस्य होते हैं। जिला सहकारी बैंक का अध्यक्ष भी इसका पदेन सदस्य होता है। जिलापंचायत में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग तथा महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी है।

> ftyk lgdkjh cad d ckj e viu f'k{kd l ppk djA

vkid {k= d ftyk iapk;r lnL; dk uke D;k g \

जिला पंचायत के सदस्य अपने अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का चुनाव मिलकर करते हैं। इनमें से एक पद पर आरक्षित वर्ग का प्रतिनिधि होता है। अगर कोई अध्यक्ष या उपाध्यक्ष अपना काम ठीक तरह से नहीं करते, तो उनके विरूद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पारित कर उन्हें पद से हटाया जा सकता है।

ftyk iapk;r d dk;

जिला पंचायत का मुख्य कार्य ग्राम पंचायतों और जनपद पंचायतों के कार्यों की देखरेख करना है। यह ग्राम पंचायत और जनपद पंचायतों को उनके कार्यों के लिए धन उपलब्ध करवाती है। सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं को जिले में चलाने के लिए जिले के सभी सरकारी विभागों से तालमेल रखती है। जिला पंचायत कुछ पदों पर नियुक्ति भी करती है।

ftyk iapk;r dh vk; d lk/ku

जिला पंचायत की आय का प्रमुख साधन राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान होता है। इसके अलावा जिला पंचायत मकानों, दुकानों, मेलों, आदि पर कर लगाकर आय प्राप्त करती है।

e[; dk;ikyu vf/kdkjh

जिला पंचायत के निर्णयों को जिलों में लागू करवाने के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी होता है जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा की जाती है।

> viu fty d ftyk iapk;r d e[; dk;ikyu vf/kdkjh dk uke fyf[k,A

vH;kl d: i:'u

ITB174

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पंचायत के चुनाव में खड़े होनेवाले उम्मीदवार को –––– वर्ष का होना ज़रूरी है।
2. –––– वर्ष से कम उम्र का व्यक्ति चुनाव में वोट नहीं डाल सकता है।
3. पंचायत सचिव पंचायत के कामों का –––– रखता है।
4. पंचायत के सदस्यों को पंचायत के कामों का लेखाजोखा समय–समय पर –––– में पेश करना होता है।
5. जनपद पंचायत के सदस्य ––––– साल के लिए चुने जाते है।
6. पंचायती राज व्यवस्था की सर्वोच्च कड़ी ––––– है।
7. सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं को जिले में चलाना ––––– का काम है।
8. जिले में मुख्य कार्यपालन अधिकारी की नियुक्ति ––––– द्वारा की जाती है।

(ब) गलत वाक्यों को सुधारकर लिखें–

1. किसी भी ग्राम पंचायत के सरपंच का महिला होना ज़रूरी है।
2. सरपंच के चुनाव में पंचायत क्षेत्र में रहनेवाला कोई भी व्यक्ति वोट डाल सकता है।
3. ग्राम पंचायत के सचिव का चुनाव किसी एक वार्ड के मतदाता करते हैं।
4. उपसरपंच पंचायत की बैठक का संचालन करता है।
5. ग्राम पंचायत के सरपंच सरकारी कर्मचारी हैं।
6. पंचायतकर्मी का चुनाव जनता अपने मताधिकार के उपयोग से करती है।
7. गाँव का हर नागरिक ग्राम पंचायत का सदस्य होता है।

(स) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. ग्राम पंचायत का गठन कैसे होता है ?
2. सरपंच का चुनाव किस प्रकार होता है ?
3. उप सरपंच का चुनाव कैसे होता है।
4. आरक्षण के क्या फायदे हैं? क्या आपके विचार से विशेष वर्गों के लिए आरक्षण होना चाहिए ?
5. अगर आपके वार्ड का पंच एक पुलिया बनवाना चाहता है तो उसे क्या–क्या करना पड़ेगा ?
6. आपके विचार में ग्राम पंचायत से संबंधित चार सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या–क्या हैं? लिखो।
7. पंचायत की आमदनी के क्या–क्या साधन हैं ?
8. ग्रामसभा के तीन अधिकार लिखिए।
9. जनपद पंचायत में चुने हुए सदस्यों के अलावा और कौन–कौन सदस्य होते है ?
10. जनपद पंचायत का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है ?
11. जिला पंचायत के अध्यक्ष का चुनाव कैसे होता है ?
12. जिला पंचायत को आय कैसे प्राप्त होती है ?

(द) अपने शिक्षक या घर के लोगों से पता कीजिए –

अगर आपकी बड़ी बहन की शादी दूर के किसी गाँव में हो जाए तो क्या वह आपके गाँव के पंचायत के चुनाव में वोट डाल सकती है ?

अध्याय 4

uxj ikfydk vkj uxj fuxe

सीतापुर एक छोटा–सा शहर है। यहाँ के एक मोहल्ले में माध्यमिक शाला है जिसमें रमेश, राधिका और समीना पढ़ते हैं।

पिछले दो–तीन दिनों से बच्चों को काफी परेशानी हो रही थी। स्कूल के नल में पानी नहीं आ रहा था। स्कूल में पीने के लिए या हाथ धोने के लिए पानी नहीं था। आज सुबह जब बच्चे स्कूल में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि कई लोग शाला के नल के पाईप को खोदकर निकाल रहे हैं और उसकी जगह नया पाईप बिछा रहे हैं। बच्चे बहुत खुश हुए कि अब उन्हें स्कूल में ही पीने का पानी मिलने लगेगा।

चि–4.1 पानी भरती हुई महिलाएँ

कक्षा में जब बड़ी बहन जी आई तो रमेश ने उनसे पूछा& "बहन जी, ये पानी का पाईप कौन सुधरवा रहा है? क्या हमें इसके लिए पैसे देने पड़ेंगे?"

बहन जी बोलीं, ''नहीं, नहीं? यह तो अपने नगर पालिका का काम है। मैंने अपने मोहल्ले के पार्षद से कहा था कि स्कूल में पानी नहीं आ रहा है पानी के लिए सब बच्चे परेशान हो रहे हैं। पार्षद द्वारा ही नगर पालिका के कर्मचारियों से बोलकर ये मरम्मत का कार्य करवाया जा रहा है।''

सब बच्चे नगर पालिका के बारे में जानना चाहते थे। सबके मोहल्ले में कोई–न–कोई समस्या थी। वे जानना चाहते थे कि नगर पालिका इस संबंध में क्या–क्या कर सकती हैं।

vkb, irk djs

1. आपके मोहल्ले के पार्षद (नगर पालिका के सदस्य) कौन हैं?
2. आपके शहर की समस्याओं का समाधान कौन–सी संस्था करती है?
3. आपकी नगर पालिका के अध्यक्ष का क्या नाम है?

बहन जी ने भी सबसे कहा कि वे अपने–अपने मोहल्ले की समस्याओं के बारे में बताएँ। राधिका बोली, ''बहन जी, हमारे मोहल्ले की गलियों में रात को लाईट नहीं जलती, बहुत अंधेरा रहता है और शाम के बाद चलने में हमें डर लगता है। वहाँ कई बार चोरियाँ भी हो चुकी हैं।''

रमेश बोला – '' बहन जी, हम तो झोंपड़ी में रहते हैं। हमारे मोहल्ले में लाईट तो जलती है, मगर सड़कें व नालियाँ नहीं बनी हैं। रास्ते में कीचड़ भरा रहता है। आने–जाने में दिक्कत होती है।''

कल्लू बोला & अरे, हमारे मोहल्ले में तो सीमेंट की सड़कें बनी हैं, नल में पानी बहुत कम आता है। दिन में वह केवल एक ही घंटा चलता है। पानी की बड़ी परेशानी है।''

''हमारे मोहल्ले में बाकी सब ठीक है, लेकिन सड़कों की सफाई नहीं होती, गंदगी इकट्ठी होती रहती है और बदबू आती है।'' सलमा बोली। इस तरह सब बच्चों ने अपने–अपने मोहल्ले की समस्याएँ सुनाई।

चित्र–4.2 नगर पालिका के कार्य

बहन जी ने बताया कि, हम अपने–अपने मोहल्ले से नगर पालिका के सदस्य चुनते हैं। उनका काम है कि अपने वार्ड की समस्याओं को नगरपालिका तक पहुँचाएँ और उसका हल करवाएँ। अगर हमारे यहाँ ऐसी कोई समस्या हो तो हमें अपने पार्षद से बात करनी चाहिए। उनसे कहना चाहिए कि वे हमारी समस्याओं को जल्दी ही हल करें।''

बच्चो, आप ने पिछले पाठ में ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा है। याद कीजिए, उसमें पंच और सरपंच कैसे चुने जाते है? नगर पंचायत, नगर पालिका या नगर निगम वैसे ही बनती है जैसे कि ग्राम पंचायत। ये तीनों ही स्थानीय संस्थाएँ जनसंख्या के आधार पर बनाई जाती हैं।

शहर गाँवों की तुलना में बहुत बड़े होते हैं और उसमें हजारों लोग रहते हैं। बड़े शहरों में तो लाखों लोग रहते हैं। वहाँ की साफ–सफाई, प्रकाश, पानी, सड़कें, नालियां आदि की व्यवस्था के लिए नगर पालिका या नगर निगम कार्य करता है।

नगर पालिका या नगर निगम के सदस्य बनने के लिये कम–से–कम 21 वर्ष की आयु आवश्यक है। नगर पालिका के सदस्यों की संख्या 15 से 60 होती है। इसी प्रकार नगर निगम के सदस्यों की संख्या 50से 150 होती है।

पूरे शहर को जनंसख्या के आधार पर वार्डों में बाँटा जाता है। शहर के वे सभी लोग जो 18 वर्ष या अधिक उम्र के हों, अपना मत दे सकते हैं। ये लोग अपने–अपने वार्डों में एक–एक पार्षद को पाँच वर्ष के लिए चुनते हैं। लोगों की समस्याओं को नगर निगम या नगर पालिका परिषद् में रखना, तथा उसका हल करवाना पार्षद का काम होता है, ये शहर के लिए विकास की योजनाएँ बनाने में और उन्हें लागू करवाने में मदद करते हैं।

सारे चुने गए पार्षद नगर पालिका या निगम की बैठकों में शामिल होते हैं। इन बैठकों की अध्यक्षता–नगर पालिका या नगर निगम के अध्यक्ष करते हैं। इन्हें भी सारे वार्ड के लोग अपना मत देकर चुनते हैं। नगर निगम के अध्यक्ष को महापौर कहते हैं।

नगर पालिका या नगर निगम की बैठक में शहर की समस्या, किए जानेवाले काम और आगे की योजना के बारे में चर्चा करते है। यहाँ अलग–अलग काम के लिए अलग–अलग समितियाँ होती हैं प्रत्येक समिति का एक अध्यक्ष होता है और 5 से 12 सदस्य होते हैं।

राज्य सरकार प्रत्येक नगर पालिका में एक मुख्य नगर पालिका अधिकारी नियुक्त करती है। ठीक उसी प्रकार नगर निगम में नगर निगम आयुक्त की नियुक्ति की जाती है। इन अधिकारियों का काम नगर पलिका, नगर निगम के निर्णयों को नियमानुसार लागू करवाना और नगर पालिका के कर्मचारियों के काम की देखरेख करना है।

क्र.	जनसंख्या	संस्था का नाम	अधिकारी	प्रमुख
1.	5 हजार से 20 हजार	नगर पंचायत	मुख्य नगर पंचायत अधिकारी	अध्यक्ष
2.	20 हजार से 1लाख	नगर पालिका	मुख्य नगर पालिका अधिकारी	अध्यक्ष
3	1 लाख से अधिक	नगर निगम	आयुक्त	महापौर

uxj ikfydk ds dk;Z

1. पानी की व्यवस्था, सफाई की व्यवस्था, चिकित्सा की व्यवस्था करना।
2. सड़कों की व्यवस्था और सड़कों पर प्रकाश की व्यवस्था करना।
3. कांजी हाउस का प्रबंध करना।
4. जन्म और मृत्यु का लेखा रखना।
5. बाजार और मंडी की व्यवस्था।
6. बीमारी फैलने पर रोकथाम के लिए टीकाकरण करवाना।
7. समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करना।
8. वाचनालय, पाठशाला, बाग–बगीचे, मनोरंजन की व्यवस्था करना।
9. सांस्कृतिक व शिक्षा संबंधी गतिविधियों का विस्तार करना।

vk; d! lk/ku

1. निजी मकान, जमीन आदि पर सम्पति–कर लगाना।
2. पानी, बिजली, सड़कों और शहर की सफाई के लिए कर वसूलना।
3. दुकानों से कर लेना।
4. मनोरंजन कर लेना (फिल्म, सर्कस आदि पर)
5. सरकार से अनुदान प्राप्त करना ।
6. विज्ञापनों पर कर लेना ।
7. अचल संपत्ति पर राज्य सरकार द्वारा लिए गए कर का अंशदान ।

किसी शहर की जनसंख्या के आधार पर तय किया जाता है कि वहाँ नगर पंचायत, नगर पालिका या नगर निगम बनेगी। हरेक के अध्यक्ष व मुख्य कार्यपालन अधिकारी अलग होते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) सही जोड़ी बनाइए–

d		[k
1. नगर पंचायत	–	15 से 60 तक
2. नगर पालिका	–	50 से 150 तक
3. नगर निगम	–	5 हजार से 20 हजार जनसंख्या तक
4. नगर पालिका के सदस्यों की संख्या	–	1 लाख से अधिक आबादी होने पर
5. नगर निगम के सदस्यों की संख्या	–	20 हजार से 1 लाख की आबादी होने पर

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. नगर पालिका के सदस्यों को कौन चुनता है ?
2. मुख्य नगर पालिका अधिकारी का क्या काम है ?
3. शहर के किसी मोहल्ले में पानी या सफाई आदि की कोई समस्या है, तो आप किससे कहेंगे ?
4. आप एक पार्षद होते तो अपने मोहल्ले में क्या–क्या करवाते ?
5. स्थानीय संस्थाओं के कौन–कौन से कार्य है ?
6. स्थानीय संस्थाओं की आय के क्या–क्या साधन है ?

(स) अपने पास के नगर की स्थानीय संस्था के बारे में निम्नांकित बातों का पता लगाइए–

1. शहर का नाम एवं जनसंख्या –
2. अध्यक्ष का नाम –
3. पार्षदों की संख्या –

IU3NC2

अध्याय 5

ftyk iz'kklu

viuk irk fyf[k, &

नाम	–	....
मोहल्ला	–	....
गाँव/शहर	–	....
तहसील	–	....
जिला	–	....
प्रदेश	–	....

आप रहते तो एक ही जगह में हैं फिर आपके पते में इतनी जगहों के नाम कैसे आ गए? आखिर आप रहते कहाँ हैं गाँव/शहर में, तहसील में या जिले में?

आप इसे दूसरी तरह से समझ सकते हैं। आप अपने घर में रहते हैं, आपका घर एक मोहल्ले में है। आप का घर और आपके आस–पास के घरों को मिलाकर मोहल्ला बनता है। आपका मोहल्ला आपके गाँव/शहर में है। आपके मोहल्ले और दूसरे कई मोहल्लों को मिलाकर आपका गाँव/शहर बनता है। आप अपने घर में रहते हुए अपने मोहल्ले में रहते हैं और अपने गाँव/शहर में भी।

इसी तरह आपका गाँव किसी तहसील में है। आपके गाँव और अन्य कई गाँवों को मिलाकर आपकी तहसील बनती है।

आपकी तहसील आपके जिले में है। आपकी तहसील और दूसरी कुछ तहसीलों को मिलाकर आपका जिला बनता है।

पता करें कि आपका जिला कितनी तहसीलों से मिलकर बना है।

छत्तीसगढ़ के मानचित्र में अपने जिले को पहचानिए, अपने जिले के पड़ोसी जिलों के नाम लिखिए? छत्तीसगढ़ में कितने जिले हैं, गणना कीजिए?

ftys dk vf/kdkjh o deZpkjh

वास्तव में प्रशासन की सुविधा के लिए राज्य को जिलों में और जिलों को तहसीलों में बाँटा गया है। ये जिले प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई हैं।

जिले में सरकार की नीतियों को लागू करने एवं कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन होता है जिसमें कलेक्टर (जिलाधीश) एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी शामिल होते हैं।

ftyk/kh'k

आपने कलेक्टर का नाम तो सुना ही होगा, इसे जिलाधीश भी कहते हैं। हर जिले का एक जिलाधीश होता है। वह अपने जिले की समस्त तहसीलों और ग्रामों की देखरेख करते हैं। वे जिले के सबसे बड़े अधिकारी होते हैं। जिले में हो रहे सभी कामों पर जिलाधीश नियंत्रण रखता है।

ftyk/kh'k d: dk;l

ftyk/kh'k d: ie[k dk;l bl idkj g: &

ekufp= 5-1

1. जिलाधीश का सबसे प्रमुख कार्य जिले में कानून और व्यवस्था बनाए रखना है। इसके अंतर्गत उसे दंडाधिकारी के रूप में बहुत से अधिकार प्राप्त हैं।

2. भूमि का अभिलेख रखना और भूमि कर वसूल करना इनका दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। वे भूमि संबंधी मामलों की देखभाल तथा भूमि संबंधी झगड़ों का निपटारा करते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व बचाव कार्य भी करते हैं।

3. जिलाधीश संपूर्ण जिले में नागरिक सुविधाएँ तथा सेवाएँ प्रदान करते हैं और जिले का संपूर्ण विकास करते हैं। नागरिक सुविधाओं के अंतर्गत स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात का प्रबंध, सरकारी इमारतों, सड़कों आदि की देखभाल करना भी शामिल है।

4. देश और राज्य में होनेवाले विभिन्न प्रकार के चुनावों को जिले में सम्पन्न कराने में जिलाधीश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ सारे चुनाव उन्ही के निर्देशन में होते हैं। यह कार्य वे जिला निर्वाचन अधिकारी के रूप में करते हैं।

5. जिले की पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय संस्थाओं के कार्यों की निगरानी का कार्य भी जिलाधीश करते हैं।

क्या जिलाधीश अपने सभी कार्य अकेले कर सकते हैं? नहीं! जिले में कई विभाग होते हैं–शिक्षा विभाग, पुलिस विभाग, स्वास्थ्य विभाग,खाद्य विभाग, राजस्व विभाग आदि। इन विभागों के अपने–अपने अधिकारी और कर्मचारी होते हैं, जो जिलाधीश के अधीन पूरे जिले में काम करते हैं। किसी भी विभाग के संबंधित अधिकारी और कर्मचारी के काम से संतुष्ट न होने पर जिलाधीश से शिकायत की जा सकती है। जैसे, किसी किसान की जमीन पर किसी ने कब्जा कर लिया हो और उससे संबंधित अधिकारी कुछ सुनवाई न कर रहे हों तो किसान जिलाधीश को अर्जी दे सकता है। बाढ़ आने, आग लगने, बीमारी फैलने या अचानक कोई बड़ी दुर्घटना होने पर सीधे जिलाधीश से मदद माँगी जा सकती है।

प्रत्येक जिला मुख्यालय में जिलाधीश इन कार्यों को संपन्न करते हैं। परंतु इसका मतलब यह नहीं कि वे केवल अपने कार्यालय में ही बैठकर सब काम करते हैं। इसके लिए उन्हें समय–समय पर जिले के विभिन्न गाँवों में जाना पड़ता है। एक ही दिन में उन्हें कई तरह के काम करने पड़ते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी कार्य वे राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नियमों–कानूनों और योजनाओं के अंतर्गत ही करते हैं। वे स्वयं न तो कोई कानून बना सकते हैं और न ही किसी कानून को बदल सकते हैं।

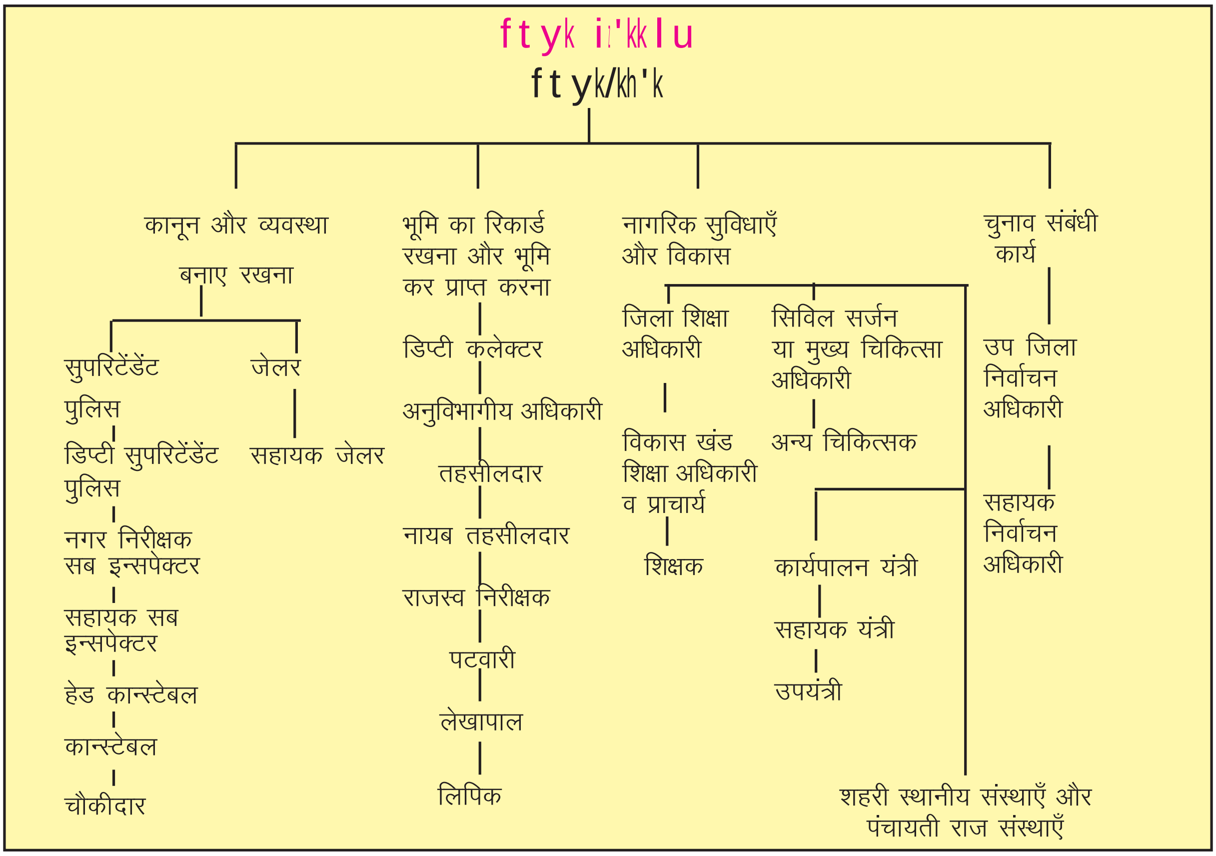

ftys esa U;kf;d O;oLFkk

यद्यपि जिलाधीश को दंडाधिकारी (मजिस्ट्रेट) के रूप में कुछ न्यायिक अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी प्रत्येक जिले में अलग से स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था होती है। जिले के सभी न्यायालय उच्च न्यायालय की देखरेख में काम करते हैं। हमारे प्रदेश का उच्च न्यायालय बिलासपुर में है।

U;k;ky; ds ckjs esa viu f'k{kd ls ppkZ djsaA

नीचे दिए गए चार्ट में जिले के उन अधिकारियों और कर्मचारियों के क्रम को देखिए जो जिले के विभिन्न स्थानों में जिलाधीश के अधीन काम करते हैं।

1. आपके जिले में जिलाधीश कौन हैं ?
2. चार्ट में दिए कौन–कौन से अधिकारी और कर्मचारी आपके गाँव या शहर में कार्य करते हैं ?
3. पटवारी को अपनी कक्षा में बुलाकर पता लगाइए कि जिलाधीश भूमि संबंधी अभिलेख किस प्रकार रखते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) सही जोड़ी बनाइए–

d		[k
शिक्षा विभाग	–	सब–इंसपेक्टर
राजस्व विभाग	–	चिकित्सक
पुलिस विभाग	–	नायब तहसीलदार
चिकित्सा विभाग	–	सहायक यंत्री
सिंचाई विभाग	–	जिला शिक्षा अधिकारी

(ब) वाक्य सुधारकर लिखिए–

IUVBGZ

1. जिलाधीश पूरे प्रदेश को नागरिक सुविधाएँ प्रदान करता है।
2. कोरिया जिले का जिलाधीश रायगढ़ जिले की समस्याएँ सुलझाएगा।
3. जिले के समस्त विद्यालय जिलाधीश के अधीन काम करते हैं।
4. जिले के न्यायालय जिलाधीश की देखरेख में काम करते हैं।

(स) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. राज्य को जिलों और तहसीलों में क्यों बाँटा जाता है ?
2. जिलाधीश के प्रमुख कार्य लिखिए।
3. आपके जिले में कौन–कौन सी स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
4. जिला प्रशासन के अंतर्गत आने वाले प्रमुख विभागों के नाम लिखिए।

(द) शिक्षक से चर्चा करें –

छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद नये जिले क्यों बनाये जा रहे है? इसका क्या लाभ होगा।

अध्याय 6

सार्वजनिक संपत्तियाँ

सार्वजनिक संपत्तियाँ व उनका संरक्षण

शहर से कुछ दूरी पर गाँव का एक विद्यालय था और वहाँ से थोड़ी दूरी पर एक छोटा–सा रेलवे स्टेशन था। एक दिन सुबह रेल्वे स्टेशन पर बहुत सारे लोग जमा थे। वहाँ स्टेशन मास्टर के साथ गाँव के सरपंच, विद्यालय के प्रधान अध्यापक और भी दूसरे लोग जमा थे, जो आपस में ज़ोर–जोर से बहस कर रहे थे। सभी क्रोधित और चिंतित थे। घटना ही इस तरह की थी। कल विद्यालय में छुट्टी के बाद कुछ छात्रों ने रेलवे के सिग्नल्स और लाइटों को पत्थरों से निशाना बनाया था। घटना की गंभीरता को देखते हुए वहाँ पुलिस अधिकारी भी पहुँच गए थे। कुछ देर बाद प्रधान अध्यापक के समझाने बुझाने पर माहौल शांत हुआ।

अपने नज़दीक के रेल्वे स्टेशन के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें।

हवाई अड्डा

प्रधान अध्यापक ने प्रार्थना के पश्चात् आज सभी छात्रों को एक बड़े कमरे में एकत्रित होने को कहा।

चित्र–6.1 रेलवे प्लेटफार्म

चित्र–6.2 विद्यालय

ç/kku v/;kid – कल विद्यालय में छुट्टी के बाद जिन चार–पाँच छात्रों ने रेलवे के सिग्नलस और लाइटों को तोड़ा था वे खड़े हो जाएँ।

राजेश – गुरु जी, हम लोगों ने ऐसे ही खेल–खेल में निशाना बनाया था।

ç/kku v/;kid – अच्छा यह बताइए कि यदि आप लोग किसी के घर की लाइटों व खिड़कियों के काँच को निशाना बनाकर तोड़ते या कोई आपके घर की लाइटों या खिड़कियों के काँच तोड़ोगे तो क्या होगा?

pnu – यदि हम किसी के घर का कुछ नुकसान करेंगे तो हमें उस घर के लोग डाँटेंगे।

किशोर – यदि कोई हमारे घर का कुछ नुकसान करेगा तो हम उसे पकड़कर डाँटेंगे।

ç/kku v/;kid – फिर बताइए आप लोगों ने कल जो सिग्नलस और लाइट तोड़कर नुकसान किया, उसके बारे में आप लोग क्या सोचते हैं। क्या आप लोगों को कोई नहीं डाँटेगा ?

deyk – सर, हम लोगों ने सोचा कि कोई देख भी नहीं रहा है और ये तो किसी का भी नहीं है।

ç/kku v/;kid – क्या यहाँ सभी उपस्थित छात्र इससे सहमत हैं?

pnu – सर, ये सिग्नल और लाइट तो रेलों को चलाने में काम आते हैं। रेलगाड़ियों का उपयोग तो हम सभी लोग करते हैं।

चित्र–6.3 यातायात

ç/kku v/;kid – हाँ, सही कहा आपने, ऐसा नहीं कि ये सब चीज़ें किसी की नहीं, ये हम सभी की हैं। इन्हें 'सार्वजनिक सम्पत्ति' भी कहते हैं। (सार्वजनिक यानि सब जनों की) अच्छा यह बताइए कि इन सिग्नल्स व लाइटों के टूटने से क्या असुविधा या नुकसान हुआ होगा?

किशोर – रेलगाड़ियाँ बहुत समय तक खड़ी रह गईं होंगी जिसके कारण यात्रियों को समय में पहुँचने में बाधा हुई होगी।

i/kku v/;kid– यदि कोई बीमार व्यक्ति इलाज के लिए जा रहा हो या मालगाड़ियों में लदा आवश्यक सामान समय पर न पहुँचे तो सोचिए क्या होगा।

pnu – कई असामाजिक तत्व रेल और बसों में तोड़–फोड़ करते हैं, क्या उन्हें सजा नहीं होती?

i/kku v/;kid – सजा तो मिलती है, किंतु इसके लिए सबके सहयोग की आवश्यकता होती है। जब हम सभी इन सुविधाओं का उपयोग करते हैं तो इसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी तो हम सबकी बनती है। सार्वजनिक संपत्तियों में सबसे अच्छा उदाहरण आपके विद्यालय का है, जिसकी व्यवस्था व संचालन में सबके सहयोग की आवश्यकता होती है।

अब आप सब समझ गए होंगे कि रेल जैसी कई अन्य सुविधाएँ हैं जिनका उपयोग सभी करते हैं। सोचकर बताइए कि आपका बस्ता, पुस्तकें, रबर, पेंसिल क्या सार्वजनिक संपत्ति हैं? आपकी अनुमति के बगैर क्या कोई भी उनका उपयोग कर सकता है? कुछ संपत्ति ऐसी होती हैं जिन पर केवल आपका ही अधिकार होता है, जिसका उपयोग भी आप स्वयं करते हैं। इसलिए इसे निजी संपत्ति कहते हैं। कुछ संपत्ति ऐसी भी होती है जिनका उपयोग सभी लोग बिना किसी की अनुमति के, करते हैं, जैसे रेल, स्कूल, सड़क, अस्पताल, खेल का मैदान इत्यादि। इनका निर्माण और रखरखाव हमारी सरकार करती है। इस पर सबका अधिकार होता है। इसीलिए इसे सार्वजनिक संपत्ति कहते हैं। सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

चित्र–6.4 अस्पताल

चित्र–6.5 ऐतिहासिक स्मारक

आपस में चर्चा कर उन सभी सार्वजनिक सुविधाओं की सूची बनाइए जिनका सभी उपयोग करते हैं।

सार्वजनिक संपत्तियों को सार्वजनिक धन देकर खरीदा जाता है। सार्वजनिक धन लोगों द्वारा सरकार को दिए गए विभिन्न प्रकार के करों से इकट्ठा होता है। इस प्रकार सार्वजनिक संपत्तियों के निर्माण के लिए हम सबके पैसों का उपयोग होता है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा करें।

vkb, dN djs &

दी गई सारणी के आधार पर विद्यालय परिसर में उपलब्ध सुविधाओं का बेहतर उपयोग व सुरक्षित रखने हेतु सुझाव दीजिए ।

lkexh lkj.kh		
क्र.	सामग्री	सुरक्षित उपयोग हेतु सुझाव
1.	ऐतिहासिक स्मारकों की रक्षा	
2.	श्यामपट	
3.	टाटपट्टी	
4.	फर्नीचर	
5.	पेयजल	
6.	शिक्षण सहायक सामग्री	
7.	पुस्तकालय	
8.	शौचालय	
9.	वृक्षारोपण	
10.	खेल सामग्री	

अभ्यास के प्रश्न

1. सार्वजनिक संपत्तियाँ क्या हैं ?
2. नीचे दी गई संपत्तियों में से निजी और सार्वजनिक संपत्तियों को अलग कीजिए–

   साइकिल, विद्यालय, ट्रैक्टर, पुस्तकालय, खेल का मैदान, अस्पताल, घर, मोटर साइकिल, पार्क या बगीचा, पोस्टबॉक्स, हल।
3. क्या करेंगे यदि आपके आसपास कोई सार्वजनिक सुविधा की चीज़ें हों और कोई उन्हें नुकसान पहुँचा रहा हो ?
4. आप रोज़ जिन सार्वजनिक सुविधाओंवाली संपत्तियों का उपयोग करते हैं, उनकी सूची बनाइए।

J7IFZ7

अध्याय 7

J7SC1U

cPpk d vf/kdkj

पिता जी के घर पहुँचते ही लखन और राधा उनके पास दौड़कर आए और प्रदर्शनी दिखाने की जिद करने लगे। उन्होंने बताया कि तिलक मैदान पर 'हमारे अधिकार' प्रदर्शनी लगी है और गुरु जी ने उसे देखने को कहा है।

fp=&7-1 हम सब बराबर

थोड़ी देर बाद पिता जी और दोनों बच्चे प्रदर्शनी देखने चल पड़े। राधा ने पूछा –"वहाँ झूले भी होंगे ना?'' लखन ने उत्तर दिया– ''नहीं, नहीं वहाँ तो बहुत–से चित्र हैं और मानव अधिकारों से संबंधित बहुत सारी जानकारियाँ।" 'पिता जी', राधा बोली, क्या बच्चे भी मानव होते हैं?" पिता जी उसके प्रश्न पर चौंक गए। उन्होंने हड़बड़ा कर जवाब दिया, "हाँ,हाँ क्यों नहीं। हम सब चाहे बड़े–बूढ़े हों या छोटे बच्चे, स्त्री हों या पुरुष, मानव तो हैं ही। बच्चों, एक बात और है, हम सब चाहे किसी भी जाति, धर्म या वर्ग के हों, चाहे जिस प्रांत में रहते हों, अमीर हों या गरीब, बराबर हैं।

fp=&7-2

सभी नागरिकों को दमन, शोषण व अत्याचार से संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से पूरे देश व राज्यों के स्तर पर मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया है। छत्तीसगढ़ मानवाधिकार आयोग का मुख्यालय रायपुर में हैं।

लखन ने कहा–"पिता जी तब तो बच्चों को भी बड़ों के समान सभी अधिकार प्राप्त होंगे।" हाँ,बिल्कुल, "पिता जी ने सहमति दी, तुम प्रदर्शनी देखकर और अच्छी तरह जान जाओगे।"

प्रदर्शनी में बहुत चहल–पहल थी। बाहर द्वार पर लिखा था "छत्तीसगढ़ मानव अधिकार आयोग आपका स्वागत करता है।"अन्दर जाने पर उन्हें कई चित्र दिखे। पिता जी उन्हें चित्र समझाते जा रहे थे, विशेष रूप से वे चित्र जो बच्चों से सम्बधित थे।

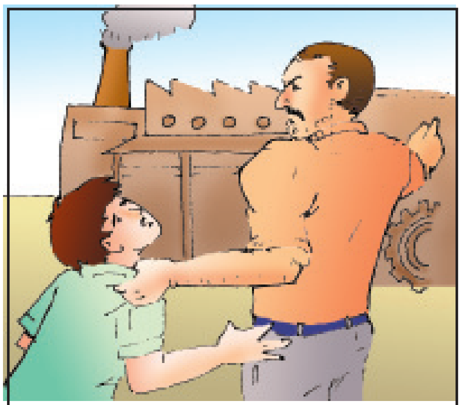

fp=&7-3

'पिता जी, देखो पतंग उड़ाते बच्चे,' दोनों बोल पड़े। उन्हें यह चित्र बहुत भाया। पिता जी ने उन्हें समझाया कि सभी बच्चों को खेलने व मनोरंजन का अधिकार है। बच्चों को इससे वंचित नहीं करना चाहिए। खेलते हुए बच्चे कितने खुश रहते हैं।

"पिता जी, यह आदमी इन बच्चों को पकड़कर खींच क्यों रहा है ?"राधा की आवाज में व चेहरे पर दुख था। "बेटी कुछ लोग छोटे–छोटे बच्चों से कठोर मेहनत और मजदूरी करवाते हैं, जो गलत हैं।" लखन से रहा न गया उसने बताया कि कई बच्चे पटाखे बनानेवाले कारखानों में काम करते हैं और कभी–कभी वे दुर्घटनाओं के शिकार भी हो जाते हैं। राधा ने लखन की बात का समर्थन करते हुए बताया, ''मैंने भी दूरदर्शन पर देखा है की स्लेट पेन्सिल बनाने के काम में लगे कई बच्चे बीमार हो जाते हैं। पिता जी खुश थे कि प्रदर्शनी का बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा था।

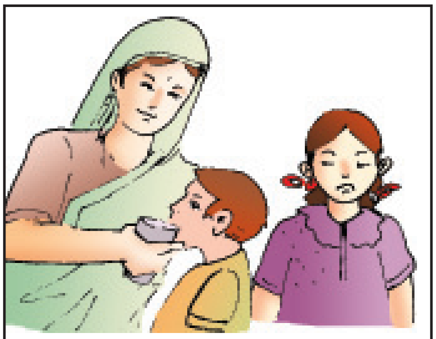

fp=&7-4

भैया, चित्र में देखो छोटी–सी गुड़िया, पर यह तो रो रही है और देखो इसका भाई अपनी माँ के हाथों से दूध पी रहा है।" राधा को यह ठीक नहीं लगा। लखन ने उसे समझाया कि कुछ लोग लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। राधा अपने भाई के कंधे पर हाथ रखकर बोली, "अपनी माँ तो ऐसा नहीं करतीं, कितनी अच्छी हैं हमारी माँ।"

तीनों आगे बढ़कर दूसरे चित्र देखने लगे। अब राधा और लखन को हर चित्र अपने आप समझ में आने लगा। वे चित्र देखते और पिता जी को बताते कि उसमें किस अधिकार की बात कही गई हैं।

fp=&7-5

घर आकर दोनों ने माँ को वे सारे अधिकार बताए जो बच्चों को प्राप्त हैं और उन्हें मिलने ही चाहिए :–

1. प्यार पाने और देखभाल व स्वास्थ्य का अधिकार ।
2. भोजन और आश्रय का अधिकार।
3. खेलने व मनोरंजन का अधिकार।
4. अत्याचार व शोषण से बचाव का अधिकार।
5. भारी मेहनत व मजदूरी से बचाव का अधिकार।
6. शिक्षा पाने का अधिकार।
7. बिना किसी भेदभाव (जाति, वर्ग, धर्म, लिंग) के समानता का अधिकार।

J8283H

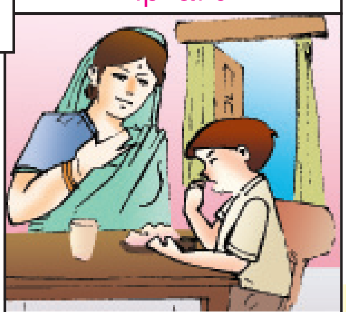

fp=&7-6

माँ ने प्यार से दोनों को रोकते हुए कहा – "अरे बस, बस। मुझे मालूम है तुमने प्रदर्शनी बहुत ध्यान से देखी है। तुम तो यह बताओ कि ये सब अधिकार तुमको हमने दिए या नहीं ?" अपनी माँ से बाल अधिकार की बातें सुनकर दोनों बच्चे एक–दूसरे का मुँह देखने लगे।

माँ ने बताया कि ''निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009'' संसद द्वारा अगस्त 2009 में पारित हुआ तथा 1 अप्रैल 2010 से पूरे देश में लागू हो गया है। यह अधिनियम बच्चे को बेहतर शिक्षा पाने के अधिकार को सुनिश्चित करता है। 'निःशुल्क और अनिवार्य बालशिक्षा अधिकार अधिनियम 2009' के अंतर्गत बच्चों के अधिकारों को संरक्षण प्रदान करते हुए कहा गया है कि कोई भी लड़का या लड़की पढ़ने से वंचित न रह जाए इसके लिए 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए कहा गया है। इसमें विद्यालयों और शिक्षकों के उत्तरदायित्व के साथ–साथ सभी बच्चों को भयमुक्त वातावरण में चहुमुखी विकास के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसी के अनुरुप अपने छत्तीसगढ़ प्रदेश में भी 1 अप्रैल 2010 से निःशुल्क अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू है। इसमें उपरोक्त सभी बातों का समावेश किया गया है। इसमें भी 14 वर्ष तक के बच्चे के लिये प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने की बात कही गई है। माँ से बाल अधिकार की बातें सुनकर दोनों बच्चे खिल–खिलाकर हंस पड़े और कहने लगे कि अब हमारे अधिकारों की रक्षा हो सकेगी। पर उनको दुख था कि दुनिया में कई बच्चे आज भी इन अधिकारों से वंचित है।

अभ्यास के प्रश्न

J8B455

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(अ) छत्तीसगढ़ मानव अधिकार आयोग ने प्रदर्शनी का आयोजन क्यों किया ?

(ब) प्रदर्शनी में क्या दिखाया गया था ?

(स) पिता जी ने प्रदर्शनी में बच्चों को क्या बातें समझाई ?

(द) बच्चों को कौन से बाल अधिकार प्राप्त होने चाहिए ? लिखिए।

(इ) बाल अधिकार अधिनियम के बारे में लिखिए ?

2. 'बच्चों के अधिकार' पाठ आपने पढ़ा। पाठ के आधार पर उन अधिकारों की एक सूची बनाइए –

1. टीकाकरण
2. शिक्षा
3. खेल व मनोरंजन
4. क्रूरता से बचाव
5. जोखिमवाले कामों से बचाव
6. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता
7. परिवार में प्यार
8. लड़का–लड़की की समानता
9. सुपोषण–दूध, आहार
10. आश्रय
11. अभिव्यक्ति
12. सुरक्षा

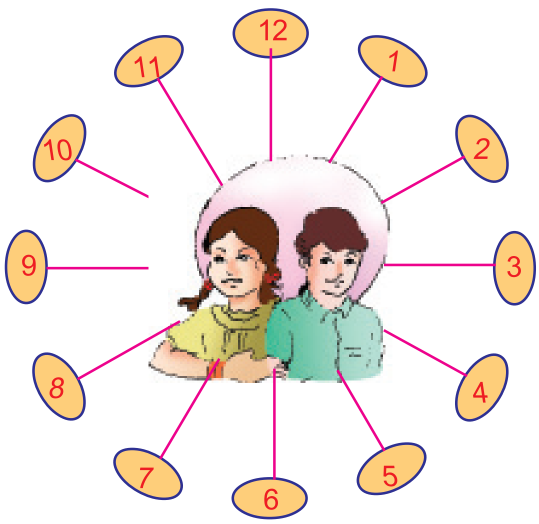

3. नीचे दिए चित्रों के सामने सही कथन का क्रमांक डालिए –

(अ) स्वास्थ्य और देखभाल का अधिकार	
(ब) शिक्षा का अधिकार	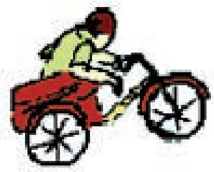
(स) समानता का अधिकार	
(द) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की विशेष देखभाल का अधिकार	
(इ) खेलने का अधिकार	
(फ) कठोर श्रम से बचाव का अधिकार	
(क) अमानवीय व्यवहार/अत्याचार से बचाव का अधिकार	
(ख) सुरक्षा का अधिकार	
(ग) अभिव्यक्ति का अधिकार	

4. **अपने आसपास रहनेवाले दस बच्चों से बात कर उनके बारे में जानकारी नीचे दी गई तालिका में एकत्रित कीजिए– कॉलम क्र. 4 से 12 की जानकारी हाँ या न में लिखें–**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
क्र.	नाम	आयु	उसे घर पर प्यार मिलता है।	स्कूल जाता/जाती है।	बीमार होने पर उसका इलाज करवाते हैं।	वह बड़ों से बिना डरे बात कर लेता/लेती हैं।	उसे खेलने दिया जाता है।	उससे घर पर या बाहर मारपीट तो नही की जाती।	उससे बहुत अधिक मेहनत करवाते है।	उसे भोजन पेट भर मिलता है	उसके साथ भेदभाव नहीं किया जाता।
1.											
2.											
3											
4.											
5.											
6.											
7.											
8.											
9.											
10.											

अध्याय 8

J8JZ6S

सामान्य चेतना

दुर्घटना से देर भली

विद्यालय जाते समय आपने परिवहन के विभिन्न साधनों जैसे साइकिल, रिक्शा, स्कूटर, मोटर साइकिल या कार, बस, ट्रक आदि को सड़क पर चलते देखा होगा। शहरों में वाहनों की अधिकता ने आवागमन को कठिन बना दिया है।

चित्र–8.1 अव्यवस्थित यातायात

क्या आप शहर या बाजार की व्यस्त सड़क पर कभी गए हैं? आपने देखा होगा कि कई जगह पर पहुँचने के लिए घंटों भीड़ में खड़ा रहना पड़ता है। सड़क पर भीड़–भाड़, गलत ढंग से वाहनों को सड़क पर रखने, भवन निर्माण या अन्य सामग्रियों का सड़क पर बिखरे रहना, आवारा मवेशियों का सड़क पर घूमना, वाहनों की गति पर नियंत्रण का न होना, पहुँचने के लिए पास के रास्ते का चुनाव करना भले ही वह सड़क की गलत दिशा हो, ये सारी बातें अक्सर गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं।

आपने सड़क के किनारे बोर्ड पर पढ़ा होगा, 'दुर्घटना से देर भली', 'सड़क पर बाएँ चलें', 'घर पर कोई आपका इंतज़ार कर रहा है', 'सीमित वेग सुरक्षित जीवन', 'यातायात के नियमों का पालन करें।' 'दो पहिया दो सवारी', 'वाहन आपका सड़क आपकी', 'यातायात आपका सुरक्षा आपकी।' आपको इन नारों का अर्थ भी मालूम होगा।

यातायात के इस दबाव को कम करने के लिए और सड़क पर चलने के लिए कुछ नियम बनाए गए हैं– जैसे सड़क पर हमेशा बाएँ तरफ चलिए। यदि आप गलत दिशा की ओर चलेंगे तो स्वयं समझ जाएँगे कि चलने में असुविधा हो रही है । सड़क यातायात के इन नियमों के संबंध में जानकारी देने के लिए सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया जाता है। यातायात के नियमों का पालन करने से दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

सड़क सुरक्षा सप्ताह क्या है?

सड़क पर सबसे छोटा वाहन आपका दुपहिया वाहन है। दुर्घटना में सबसे अधिक क्षति दुपहिया वाहन एवं उसके चालकों को ही उठानी पड़ती है। दुपहिया होने के कारण असंतुलित होने वाला वाहन भी यही है। इसलिए वाहन चलाते समय ध्यान रखें कि –

1. आवश्यकता से अधिक रफ्तार में मत चलिए। सड़क की हालत देखते हुए नियंत्रित रफ्तार में चलिए। कहीं ऐसा न हो कि आपकी तेज़ रफ्तार ही आपके प्राण ले बैठे।
2. दुपहिया वाहन चालक एवं पीछे बैठनें वाला व्यक्ति दोनों अनिवार्यतः हेल्मेट का उपयोग करें।
3. किसी गाड़ी या कार से आगे बढ़ने की कोशिश मत कीजिए। जहाँ ओह्वरटेक की मनाही हो वहाँ कभी ओह्वरटेक मत करिए।
4. हर तिराहे–चौराहे, मोड़ और उतार पर धीमी गति से आगे बढ़िए, ऐसी जगह पर ट्रैफिक को इशारा देना न भूलिए। जहाँ ट्रैफिकमैन हो वहाँ उसके इशारे से चलिए।
5. पैदल यात्री जहाँ से सड़क पार कर रहे हों वहाँ गाड़ी रोककर उन्हें सड़क पार करने दीजिए।
6. सड़क के बाएँ किनारे पर चलिए। सड़क की सेंटर लाइन को कभी भी पार न करें। उसे हमेशा अपनी दाहिनी तरफ रखिए।

शहरों में सड़क पार करने से पहले रूकिए दाहिने देखिए, बाएँ देखिए दाहिने देखते हुए आधी सड़क और बाएँ देखते हुए आधी सड़क पार करनी चाहिए।

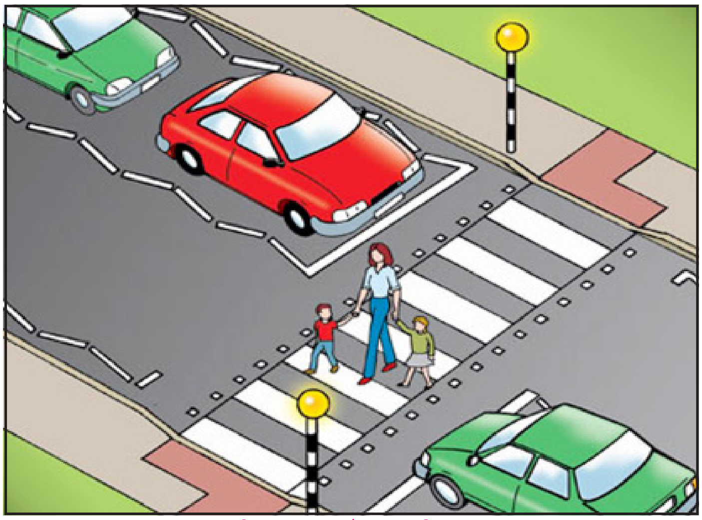

चित्र–8.2 जेब्रा क्रासिंग

शहरों में सड़क पार करते समय यातायात को सुगम बनाने के लिए सिग्नल्स (आने जाने का रास्ता) की व्यवस्था होती है। हरा प्रकाशवाला सिग्नल हमें आगे चलने का संकेत देता है। सड़क के दोनों किनारों पर बने फुटपाथ पर चलना ज्यादा सुविधाजनक व आसान होता है। संकेत मिलते ही सड़क पार करने हेतु सड़क पर बनी lQn ifê;k होती हैं, जिन्हें हम tck Økflx कहते हैं। जेब्रा क्रासिंग iny pyù वालों के लिए निर्धारित होती हैं। सड़क पर बने यातायात के विभिन्न संकेत न केवल हमारी सुविधा के लिए होते हैं, बल्कि हमारी यात्रा को सुरक्षित व सुखद बनाने में हमारी सहायता करते हैं।

आपके विद्यालय के स्काउट गाईड के विद्यार्थी समय–समय पर यातायात नियंत्रण में सहयोग प्रदान करते है। चर्चा कर ज्ञात करें कि वे किस प्रकार यातायात विभाग को सहयोग करते हैं।

xfrfof/k & दिये गए सड़क संकेतों को ध्यान से देखिए। सड़क पर बने संकेतों को आपने कभी देखा है यदि हाँ तो वह कौन–कौन से है ।

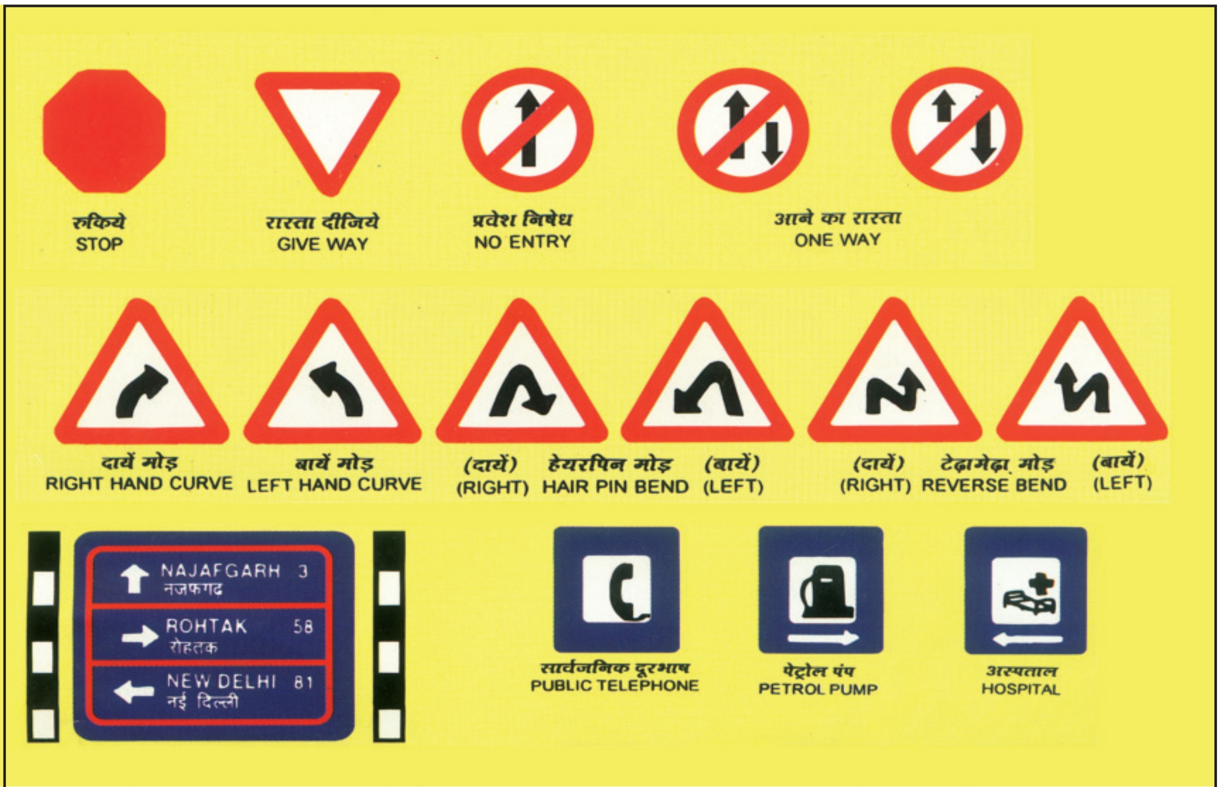

चित्र–8.3 यातायात संकेत

आवश्यक बातें

1. सड़क पर चलते समय या वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना आवश्यक है।
2. 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के व्यक्ति को ही वाहन चलाने का अधिकार है।
3. वाहन चलाते समय ड्राइविंग लाइसेंस एवं आवश्यक कागज़ात हमेशा अपने पास रखने चाहिए।
4. दुपहिया वाहनों में तीन सवारी बैठाना मना है।
5. निर्धारित गति के अनुसार ही वाहन चलाना चाहिए।
6. यातायात के नियमों के उल्लंघन पर दंड का प्रावधान है।

lidr crkb,

गोपाल एक दिन अपने मामा के घर जाने के लिए निकला सड़क पर कुछ दूरी के बाद वह ''दाएँ मुड़ा''। 1 किलोमीटर के बाद उसे एक ''तंग पुलिया'' मिली। 1 किलोमीटर के बाद उसे ऊबड़–खाबड़ सड़क मिली। कुछ दूर जाने के बाद एक विद्यालय मिला। विद्यालय के पास ही उनके मामा जी का घर था। सड़क संकेत के चित्र को ध्यान से देखिए और मोटे अक्षर में लिखे संकेतों का चित्र अपनी कापी में बनाइए।

1. जेब्रा क्रासिंग क्या है?

2. सड़क पर चलते समय हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

d t! ,o cpr

किशन को अपने घर के बैलों से बहुत लगाव था। वह रोज उन बैलों को नहलाता और चारा डालता था। बैल भी किशन को अपना अच्छा मित्र समझते थे। पिता जी सुबह उन बैलों को साथ लेकर जाते थे और बैल भी दिन भर मेहनत करने के बाद उनके साथ घर लौटते। एक दिन किशन ने अपनी माँ और पिता को आपस में बात करते सुना। वे किशन की दीदी के विवाह के बारे में चर्चा कर रहे थे।

firk th –किशन की माँ, कुछ ही दिनों के बाद हमारी बिटिया का विवाह है। मुझे रोज़ इस बात की चिंता होती है कि शादी के लिए पैसों का इंतज़ाम कहाँ से होगा।

ek¡ – हम क्यों न अपनी बिटिया का विवाह पूरी सादगी से करें। पड़ोस में लाला जी के यहाँ भी तो कुछ दिन पहले शादी हुई थी। उन्होंने तो बहुत अच्छी तरह से केवल आवश्यक संस्कारों को पूरा किया।

firk th – आज समाज में इसी तरह का चलन है। तीन–चार दिनों तक चलनेवाले कार्यक्रमों के स्थान पर एक दिन में ही आवश्यक रस्मों को पूरा करके हम फिजूलखर्ची से बच सकते हैं।

ek¡ – आप हिसाब लगा कर देखिए, कितने रुपयों की जरूरत होगी ?

firk th – मैंने हिसाब लगा लिया है। हमें कम–से–कम दस से बारह हजार रुपयों की आवश्यकता होगी। प्राथमिक साख सहकारी समिति से जो खाद, बीज, दवा के लिए पैसे मिले थे उसका ऋण भी तो वापस करना है।

ek¡ – आप किशन के मामा जी से बात क्यों नहीं करते।

firk th – किशन के मामा जी ने कुछ सहायता तो सहकारी समिति से करवाई है, उसके बाद भी इतने पैसों की आवश्यकता है।

उसी समय किशन के भैया बिशन और उनकी पत्नी देवकी वहाँ आ गये। किशन के भैया ने कहा– पिता जी, मैंने कुछ पैसे बचाकर रखे हैं, जोकि लगभग ढाई से तीन हजार हैं।

firk th – (बड़े दुखी मन से) बिशन ! तुम चिंता मत करो। हम बाकी के पैसों का इंतजाम बैलों को बेचकर कर लेंगे।

किशन वहाँ बैठा सारी बातें सुन रहा था। उसने रोते हुए कहा – नहीं मैं अपने बैंलों को बिकने नहीं दूँगा। ये मेरे बहुत प्यारे दोस्त हैं।

किशन की माँ और भाभी ने किशन को समझाया और कहा, ''बैलों को तो बेचने की जरूरत ही नहीं है और इतना कहकर वे मुस्कुराने लगीं।

चित्र–8.4 स्वसहायता समूह की बैठक

firk th – किशन की माँ, तुम इस बात को गंभीरता से नहीं सोच रही हो।

ek – आप हमेशा यह कहा करते थे मैं और आपकी बहू गाँव की महिला मंडली की बैठक में क्या करती हैं।

HkkHkh – पिता जी, आपको याद होगा कुछ समय पहले तक हमारे क्षेत्र की वनोपज जैसे–इमली, आम, चार को व्यापारी या दलाल बड़ी होशियारी से सस्ते दामों पर खरीद कर लाभ का बड़ा हिस्सा खुद ले लेते थे। इससे हमें बहुत नुकसान सहना पड़ता था।

ek – हम लोगों ने कुछ समय पहले सहकारी समिति बनाकर अपनी उपज को बेचा जिससे हमें पहले की अपेक्षा अधिक लाभ हुआ।

HkkHkh –हम लोगों ने साथ–साथ एक महिला बचत समूह भी बनाया है। समूह की सभी बहनें कुछ राशि हर महिने बचत कर बैंक में जमा करती हैं। यदि हमारी किसी ग्रामीण बहन को किसी वक्त पैसों की आवश्यकता होती है, तो उसे ऋण के रूप में पैसे मिल जाते हैं।

ek – मैं और आपकी बहू हम दोनों महिला बचत समूह की सदस्या हैं। हम दोनों के माँगने पर लगभग 10 हजार रुपये ऋण मिल जाएँगे।

firk th – तब तो हम अपनी बिटिया का विवाह बड़ी आसानी के साथ कर सकते हैं।

किशन सभी बातों को सुन रहा था वह बड़ा खुश हुआ। इस तरह बैलों की जोड़ी बिकने से बची।

क्या तुम्हारे गाँव में महिला बचत समूह है ? यदि है तो वह किस तरह के कार्य करता है? शिक्षक से चर्चा करें।

ty gh thou gS

घर के सभी लोग प्रतिदिन की तरह अपने–अपने कामों की तैयारी कर रहे थे। प्रियंका जो पास की ही पूर्व माध्यमिक शाला में पढ़ती थी, वह सुबह अखबार पढ़ते–पढ़ते चौंक पड़ी और आवाज देकर अपनी माँ से बोली,

fç;adk – माँ, कल नल में पानी नहीं आएगा।

ek – लो एक तो वैसे ही कुछ दिनों से नल में पानी कम आ रहा था। कल आएगा ही नहीं। क्या बात हो गई प्रियंका?

fç;adk – कल पानी इसलिए नहीं आएगा क्योंकि नलघर में सफाई चल रही है।

firk th – तुम लोग एक दिन पानी के न आने की बात से परेशान हो गए। हमारे ही शहर में ऐसी जगह भी हैं जहाँ पानी के लिए लोगों को भटकते देखा जा सकता है।

ek – अब पीने के पानी की व्यवस्था के लिए तो नगर निगम ही जिम्मेदार है। कई दिनों से चौक के पास का पाइप फटा है, पानी का कितना नुकसान होता है।

ckcw th – नगर निगम तो अपनी ओर से पीने के पानी की व्यवस्था के लिए पूरी कोशिश करता है, जहाँ पानी की समस्या है, वहाँ टैंकरों से पानी की आपूर्ति की जाती है।

ek – पानी के कम आने का कारण एक यह भी है कि लोग अपने घरों में बिना अनुमति के पंप लगाकर अधिक पानी ले लेते हैं। दूसरों की सुविधाओं का ध्यान नहीं रखते। इन लोगों को रोकने के लिए क्या नगर निगम कुछ नहीं करता?

ckc th – यदि शिकायत की जाए तो नगर निगम न केवल पंप जब्त कर लेता है, बल्कि वह नल का कनेक्शन भी काट सकता हैं।

आज संपूर्ण विश्व के सामने पेयजल संकट बढ़ता जा रहा है। आज उपलब्ध प्राकृतिक जल–स्रोतों में दिनों–दिन पानी की मात्रा कम होती जा रही है। भू–जल स्तर का लगातार घटना चिंता का विषय है। पर्यावरण के असंतुलन ने पूरे विश्व का ध्यान इस ओर खींचा है, कि लोग पानी का पर्याप्त सदुपयोग व जल संरक्षण के विषय में गंभीरता से सोचें।

आपके शहर के आसपास पानी इकट्ठा कर रखने के लिए बाँध तालाब इत्यादि बनाए गए हैं। कुछ समय से सरकार ने भी अनेक गाँवों में लघु स्तर पर जगह–जगह पानी को रोककर इकट्ठा किए जाने की योजना बनाई है। शिक्षक से चर्चा कर ज्ञात करें कि पानी को रोकने की व्यवस्था कैसे बनाई जा रही है।

सरकार ने अपने जल संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत राजीव गांधी जल ग्रहण मिशन नामक योजनाएँ बनाई हैं।

आपस में चर्चा करके जल की उपयोगिता पर एक सूची बनाइए।

1. आपके घर में जल के भंडारण की क्षमता कितनी है ?
2. जल के भंडारण के लिए किन बर्तनों का उपयोग करते हैं ?
3. नहाने व कपड़ा धोने के लिए कितने पानी की आवश्यकता होती है ?
4. आपके घर के सामने आँगन की फुलवारी व बगीचे में कितने पानी की जरूरत होती है ?

छात्र लगभग एक सप्ताह तक पानी के भंडारण व उसकी उपयोगिता के आधार पर सारणी का निर्माण करें।

lkj.kh

Nk= dk uke

fnu	dqy ikuh HkaMkj.k yhVj esa	lk/ku uy] dqvk	ihus yk;d ikuh	ugkus ds fy, ikuh	diMk /kksus ds fy,	'kkSpky; ds fy,	Qqyokjh ds fy,
सोम							
मंगल							
बुध							
गुरु							
शुक्र							
शनि							
योग							

उपर्युक्त जाँच के आधार पर प्रत्येक छात्र यह निष्कर्ष निकाले कि एक सप्ताह तक घर में कितने लीटर पानी का भंडारण हुआ, कितना लीटर पानी पीने और नहाने में उपयोग हुआ। कितना लीटर पानी शौचालय और फुलवारी में उपयोग हुआ।

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जेब्राक्रासिंग ––––– चलने वाले लोगों के लिए बनाया जाता है।
2. सड़क के किनारों पर पैदल चलने के लिए ––––– बनाया जाता है।
3. सड़क पर गलत दिशा में चलने से ––––– की संभावना बढ़ जाती है।
4. प्रियंका को पानी न आने की खबर ––––– से मिली।
5. शहरों में पानी की व्यवस्था की जिम्मेदारी ––––– की होती है।
6. किशन की माँ और भाभी ––––––––––– से ऋण ले सकती थीं।

(ब) हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए–

1. सड़क पर हमें दाएँ चलना चाहिए।
2. यातायात संकेत पैदल चलनेवालों के लिए नहीं होता।
3. 18 वर्ष से कम उम्र के लोगों को वाहन नहीं चलाना चाहिए।
4. विद्यालय या विद्यालय के बाहर हम साइकिल कहीं भी रख सकते हैं।
5. लाल लाइटवाला सिग्नल हमें आगे बढ़ने का संकेत देता है।

(स) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जेब्राक्रासिंग क्यों बनाया जाता है ?
2. दुर्घटना से बचने के लिए हमें किन–किन नियमों का पालन करना चाहिए ?
3. किशन के पिता को पैसों की आवश्यकता क्यो हुई ?
4. महिला मंडली को वनोपज का लाभ क्यों नहीं मिलता था ?
5. महिला समूह के सदस्य को ऋण के रूप में कितनी राशि दी जाती है ?
6. प्राथमिक साख सहकारी समिति से किन–किन कार्यों के लिए ऋण लिया जाता है ?
7. जल संरक्षण कैसे किया जा सकता है? उपाय लिखिए।
8. आज सारे विश्व में पेयजल संरक्षण आवश्यक क्यों हो गया है ?

अध्याय 9

IULFFC

ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग

मीता, उसके भैया और माँ, मीता के स्कूल की गतिविधियों पर चर्चा कर रहे थे। तभी मीता के पिताजी आए। उनके पूछने पर मीता ने उन्हें भी अपने स्कूल की बातें बतायीं। पिताजी ने बताया कि वे एक ऐसे कार्यक्रम में गए थे जहाँ एक परिचर्चा हो रही थी। मीता ने पूछा परिचर्चा क्या होती है? तब पिताजी ने बताया इसमें लोग मिल–जुल कर किसी विषय पर बातचीत कर अपनी राय बताते हैं। आज की परिचर्चा उन लोगों के बारे में थी जो तीसरे जेण्डर या ट्रांस जेण्डर कहलाते हैं। मीता के पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसे लोगों में जन्म के समय के जेण्डर (लड़की या लड़का होना) और बड़े होने के बाद के जेण्डर में अंतर हो सकता है। यह भी उतना ही प्राकृतिक होता है जितना हमारा गोरा, काला या सांवला होना। इसमें किसी का कोई दोष नहीं होता। माँ, भैया और मीता की उत्सुकता को देखकर पिताजी ने आगे बताया कि –

- ★ ऐसे लोगों का पहनावा, बोलचाल, रहन–सहन का तरीका वे जैसे दिखते हैं उससे अलग हो सकता है।
- ★ ऐसे लोगों की अक्सर समाज में उपेक्षा की जाती है। लोग उन पर हँसते हैं, उन्हें छेड़ते हैं, परेशान करते हैं और उनके लिए गंदी बातें करते हैं।
- ★ कभी–कभी इनके माँ–पिताजी या रिश्तेदार भी उन्हें अपनाने से मना कर देते हैं जिससे वे बड़ी कठिनाई से अपना जीवन–यापन करते हैं।
- ★ कभी–कभी परिवार या दूसरे लोगों के बुरे/गलत व्यवहार के कारण ये आत्महत्या भी कर लेते हैं।

भैया ने दुखी होकर कहा– लोग क्यों नहीं समझते कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के साथ जीने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है। हमें सभी के साथ सामान्य और सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए, हो सके तो उनकी सहायता भी करना चाहिए।

पिताजी ने कहा –

- ➢ वे भी हमारे जैसे ही हैं।
- ➢ वे हमारे जैसा सब कुछ कर सकते हैं।
- ➢ उनकी जरूरतें भी हमारे जैसी ही होती हैं।
- ➢ हमें इनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- ➢ उन्हें भी हमारे जैसे सभी अधिकार हैं।
- ➢ वे भी हमारे जैसे ही प्यार, अपनापन और सम्मान पाने के हकदार हैं।
- ➢ उनके साथ भी हमारा व्यवहार इतना अच्छा होना चाहिए जैसा हम दूसरों के साथ करते हैं और अपने लिए चाहते हैं।

मीता और भैया ने कहा– पिताजी हम इन बातों का हमेशा ध्यान रखेंगे और अपने साथियों को भी बताएंगें।